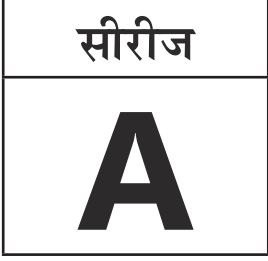


परीक्षा कोड : 01030812

# NEXT IAS



आकलन-III  
UPPSC Prelims 2024  
सामान्य अध्ययन-I  
विषय कोड: 01

Answer Key

- |         |         |         |          |          |          |
|---------|---------|---------|----------|----------|----------|
| 1. (c)  | 26. (a) | 51. (c) | 76. (c)  | 101. (b) | 126. (a) |
| 2. (b)  | 27. (a) | 52. (b) | 77. (b)  | 102. (c) | 127. (a) |
| 3. (d)  | 28. (c) | 53. (d) | 78. (d)  | 103. (a) | 128. (b) |
| 4. (b)  | 29. (b) | 54. (a) | 79. (a)  | 104. (d) | 129. (a) |
| 5. (c)  | 30. (a) | 55. (b) | 80. (a)  | 105. (d) | 130. (b) |
| 6. (a)  | 31. (c) | 56. (d) | 81. (b)  | 106. (d) | 131. (c) |
| 7. (d)  | 32. (d) | 57. (a) | 82. (d)  | 107. (a) | 132. (c) |
| 8. (c)  | 33. (b) | 58. (b) | 83. (c)  | 108. (a) | 133. (a) |
| 9. (d)  | 34. (a) | 59. (c) | 84. (b)  | 109. (b) | 134. (b) |
| 10. (c) | 35. (d) | 60. (b) | 85. (a)  | 110. (d) | 135. (c) |
| 11. (b) | 36. (a) | 61. (c) | 86. (a)  | 111. (b) | 136. (b) |
| 12. (c) | 37. (b) | 62. (a) | 87. (b)  | 112. (c) | 137. (c) |
| 13. (c) | 38. (c) | 63. (c) | 88. (b)  | 113. (d) | 138. (d) |
| 14. (d) | 39. (c) | 64. (b) | 89. (d)  | 114. (b) | 139. (a) |
| 15. (b) | 40. (c) | 65. (b) | 90. (b)  | 115. (c) | 140. (b) |
| 16. (b) | 41. (d) | 66. (a) | 91. (b)  | 116. (b) | 141. (d) |
| 17. (d) | 42. (a) | 67. (d) | 92. (a)  | 117. (d) | 142. (b) |
| 18. (c) | 43. (a) | 68. (b) | 93. (b)  | 118. (a) | 143. (c) |
| 19. (a) | 44. (c) | 69. (a) | 94. (c)  | 119. (c) | 144. (b) |
| 20. (a) | 45. (c) | 70. (b) | 95. (a)  | 120. (a) | 145. (a) |
| 21. (c) | 46. (a) | 71. (d) | 96. (c)  | 121. (c) | 146. (a) |
| 22. (a) | 47. (c) | 72. (b) | 97. (b)  | 122. (b) | 147. (a) |
| 23. (b) | 48. (d) | 73. (c) | 98. (c)  | 123. (c) | 148. (d) |
| 24. (a) | 49. (b) | 74. (a) | 99. (a)  | 124. (d) | 149. (a) |
| 25. (d) | 50. (a) | 75. (c) | 100. (b) | 125. (a) | 150. (d) |

**DELHI CENTRE:**

**Old Rajinder Nagar:** 27-B, Pusa Road, Metro Pillar no. 118, Near Karol Bagh Metro, New Delhi-110060 | Phone: 8081300200

**Mukherjee Nagar:** 1422, Main Mukherjee Nagar Road, Near Batra Cinema, New Delhi-110009 | Phone: 8081300200

**JAIPUR CENTRE:** A-1, Lion's Colony, Sitabari, Near The Theme Hotel, Tonk Road, Jaipur-302018 | Phone: 9358200511

**PRAYAGRAJ CENTRE:** II<sup>nd</sup> Floor 31/31, Sardar Patel Marg, Civil Lines Prayagraj, Uttar Pradesh-211001 | Ph. 9958857757

## सामान्य अध्ययन-I

### UPPSC Prelims 2024 | आकलन-III

1. (c)

**अग्रहार:**

- अग्रहार का अर्थ है ब्राह्मणों को दिए गए कर-मुक्त भूमि अनुदान, जो शासकों या कुलीन व्यक्तियों द्वारा धार्मिक और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए प्रदान किए जाते थे। यह अनुदान ब्राह्मणीय व्यवस्था को सुदृढ़ करने में सहायक था। इस भूमि पर कर से छूट होती थी और इसमें रहने वाले लोगों से राजस्व एकत्र करने का अधिकार भी दिया जाता था।

**विषय:**

- विषय गुप्त काल का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक प्रभाग था, जो वर्तमान समय के जिलों के समान था। इसका प्रशासनिक प्रमुख विषयपति होता था, जो स्थानीय शासन, कानून व्यवस्था और राजस्व संग्रहण के लिए जिम्मेदार होता था। विषयों को छोटे इकाइयों जैसे गाँवों में विभाजित किया जाता था।

**भुक्ति:**

- भुक्ति का तात्पर्य गुप्त साम्राज्य के एक प्रांत या बड़े प्रशासनिक प्रभाग से था। यह प्रांत का गवर्नर नहीं था, बल्कि प्रांत को इंगित करता था। भुक्ति का प्रमुख अधिकारी उपरिक होता था, जो राजा द्वारा नियुक्त किया जाता था और प्रांतीय प्रशासन को संचालित करता था।

**उपरिक:**

- उपरिक भुक्ति (प्रांत) के गवर्नर का पदनाम था, न कि मंदिर दान से संबंधित। यह अधिकारी प्रांतीय प्रशासन की देखरेख करता था और स्थानीय व केंद्रीय प्रशासन के बीच समन्वय बनाए रखता था।

2. (b)

- सातवाहन वंश, प्राचीन भारतीय इतिहास का एक प्रमुख राजवंश है, जिसे पुराणों में "आंध्र" के रूप में संदर्भित किया गया है। ये ग्रंथ विभिन्न राजवंशों के इतिहास और वंशावलियों का महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
- महाभारत:** महाभारत एक महाकाव्य है, जो विभिन्न जनजातियों और राज्यों का उल्लेख करता है, लेकिन यह सातवाहनों को 'आंध्र' के रूप में स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं करता है। इसका मुख्य फोकस

पौराणिक और वीर गाथाओं पर है, न कि सातवाहनों जैसे विशिष्ट राजवंशों के ऐतिहासिक विवरणों पर।

- पुराण:** पुराणों में सातवाहनों को 'आंध्र' कहा गया है, जो उनके उद्गम, शासन और प्रभाव को दर्शाते हैं। यह उन्हें आंध्रों के साथ जोड़ने के लिए मुख्य स्रोत है।
- कल्पसूत्र:** कल्पसूत्र जैन ग्रंथ है, जो मुख्यतः जैन तीर्थंकरों के जीवन से संबंधित है और सातवाहनों या आंध्र के रूप में उनका उल्लेख नहीं करता।
- अर्थशास्त्र:** कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र एक राज्यशास्त्र, अर्थनीति और सैन्य रणनीति का ग्रंथ है। इसमें सातवाहनों को आंध्र के रूप में सीधे संदर्भित नहीं किया गया है।

3. (d)

**ब्लैक एंड रेड वेयर (A):**

- ब्लैक एंड रेड वेयर मुख्यतः हड़प्पा सभ्यता और इसके बाद की सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ा है। यह मिट्टी के बर्तन दोहरे रंग (अंदर काले और बाहर लाल) के लिए प्रसिद्ध है और प्राचीन हड़प्पा काल के बाद के चरणों में पाया गया।
- पेंटेड ग्रे वेयर (B):**
- पेंटेड ग्रे वेयर का संबंध वैदिक काल, विशेषकर उत्तर वैदिक युग से है। यह गंगा के मैदानों और उत्तरी भारत में इंडो-आर्यों की प्रारंभिक बस्तियों से संबंधित है। यह महाभारत परंपरा से जुड़े स्थलों जैसे हस्तिनापुर और कुरुक्षेत्र में पाया गया है।

**नॉर्दर्न ब्लैक पॉलिशड वेयर (C):**

- नॉर्दर्न ब्लैक पॉलिशड वेयर का संबंध मौर्य काल से है। यह अत्यधिक चमकदार बर्तन मौर्य साम्राज्य के शिल्प कौशल और शहरीकरण को दर्शाता है। यह मौर्य काल के शहरी केंद्रों में व्यापक रूप से पाया गया।

4. (b)

**जेम्स प्रिंसेप:**

- जेम्स प्रिंसेप, एक ब्रिटिश प्राच्यविद और भाषाविद, ने 1837 में अशोक के शिलालेखों की ब्राह्मी लिपि की पहचान और इसे पढ़ने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने गिरनार, दिल्ली और इलाहाबाद में पाए गए

शिलालेखों पर काम किया। इन शिलालेखों के विश्लेषण के माध्यम से प्रिंसेप ने भाषा और सामग्री को समझा, जिससे मौर्य साम्राज्य के प्रशासनिक और ऐतिहासिक विवरण सामने आए।

**मैक्स मूलर:**

- मैक्स मूलर एक जर्मन भाषाविद और प्राच्यविद थे, जो मुख्य रूप से वैदिक ग्रंथों के अनुवाद और अध्ययन पर केंद्रित थे।

**जॉन मार्शल:**

- जॉन मार्शल एक पुरातत्वविद थे, जो सिंधु घाटी सभ्यता, विशेष रूप से मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई के लिए प्रसिद्ध हैं।

**मॉर्टिमर व्हीलर:**

- मॉर्टिमर व्हीलर एक ब्रिटिश पुरातत्वविद थे, जिन्होंने दक्षिण एशिया में, विशेष रूप से सिंधु घाटी सभ्यता पर, व्यापक रूप से काम किया। उनका मुख्य फोकस खुदाई और स्तरीकरण पर था।

**5. (c)**

- भारतीय दार्शनिक प्रणालियों को वेदों के अधिकार को स्वीकार करने या अस्वीकार करने के आधार पर आस्तिक (ऑर्थोडॉक्स) और नास्तिक (gsBodox) विद्यालयों में विभाजित किया गया है। प्रमुख विद्यालयों का विश्लेषण इस प्रकार है:

**नास्तिक विद्यालय:**

**चार्वाक:**

- **प्रवर्तक:** परंपरागत रूप से बृहस्पति।
- **दर्शन:** यह भौतिकवादी और नास्तिक प्रणाली है, जो आत्मा, कर्म और मोक्ष जैसे तत्वमीमांसीय अवधारणाओं को अस्वीकार करती है। इसका मुख्य आधार इंद्रिय ज्ञान और भोगवाद है।

**आजीवक:**

- **प्रवर्तक:** मक्कलि गोसाल।
- **दर्शन:** यह नियति (भाग्य) पर आधारित प्रणाली है, जो मानती है कि सब कुछ पूर्वनिर्धारित है और मानव नियंत्रण से बाहर है। यह स्वतंत्र इच्छा को अस्वीकार करती है और तपस्वी अभ्यासों को बढ़ावा देती है।

**बौद्ध धर्म:**

- **प्रवर्तक:** गौतम बुद्ध।
- **दर्शन:** चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग पर केंद्रित है, जो दुःख (दुःख) को समाप्त कर निर्वाण प्राप्त करने का लक्ष्य रखता है। यह आत्मा (अनात्मा) की स्थायी अवधारणा को अस्वीकार करता है।

**जैन धर्म:**

- **प्रवर्तक:** वर्धमान महावीर (24वें तीर्थंकर)।

- **दर्शन:** अहिंसा, कठोर नैतिक आचरण और तपस्या पर बल देता है। मोक्ष (मुक्ति) आत्म-अनुशासन, ज्ञान और ध्यान के माध्यम से प्राप्त होता है।

**आस्तिक विद्यालय:**

**न्याय:**

- **प्रवर्तक:** गौतम (अक्षपाद)।
- **दर्शन:** तर्कशास्त्र, ज्ञानमीमांसा और व्यवस्थित तर्क पर आधारित है। यह ज्ञान के चार स्रोतों (प्रमाण) – प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द को मान्यता देता है।

**वैशेषिक:**

- **प्रवर्तक:** कणाद (उलूक)।
- **दर्शन:** यह तत्वमीमांसा और परमाणुवाद पर केंद्रित है, जो पदार्थ, गुण, क्रिया और संबंध जैसी श्रेणियों में वास्तविकता को वर्गीकृत करता है।

**सांख्य:**

- **प्रवर्तक:** कपिल।
- **दर्शन:** यह पुरुष (चेतना) और प्रकृति (पदार्थ) के बीच भेद को स्पष्ट करने वाली द्वैतवादी प्रणाली है। मोक्ष पुरुष और प्रकृति के बीच के अंतर को समझने से प्राप्त होता है।

**योग:**

- **प्रवर्तक:** पतंजलि।
- **दर्शन:** सांख्य तत्वमीमांसा पर आधारित है और ध्यान, आत्म-अनुशासन और नैतिक जीवन जैसी व्यावहारिक तकनीकों पर बल देता है। इसका लक्ष्य आत्म-ज्ञान और मुक्ति है।

**पूर्व मीमांसा:**

- **प्रवर्तक:** जैमिनी।
- **दर्शन:** यह वेदों के कर्मकांड और धर्म पर ध्यान केंद्रित करता है, यज्ञों (बलिदानों) के प्रदर्शन और धर्म के पालन को सांसारिक और आध्यात्मिक लाभों के लिए आवश्यक मानता है।

**वेदांत ( उत्तर मीमांसा ):**

- **प्रवर्तक:** बादरायण (व्यास)।
- **दर्शन:** यह ब्रह्म (परम सत्य) और आत्मा (स्व) को समझने पर केंद्रित है। यह मुख्य रूप से उपनिषदों से प्रेरित है। बाद में अद्वैत (शंकराचार्य) और विशिष्टाद्वैत (रामानुज) जैसे विभिन्न विद्यालय विकसित हुए।

**6. (a)**

**पुलकेशिन द्वितीय (610&642 ईस्वी):**

- पुलकेशिन द्वितीय चालुक्य वंश के सबसे प्रमुख शासकों में से एक थे। वे अपनी सैन्य विजय,

कुशल प्रशासन और कला-संस्कृति के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध थे।

**चालुक्य वंश और पुलकेशिन द्वितीय:**

- राजधानी: वातापी (वर्तमान बादामी, कर्नाटक)।
- **उपलब्धियां:**
  - अपने साम्राज्य को दक्कन पठार तक विस्तारित किया।
  - उत्तरी दक्कन में हर्ष को हराकर उनके दक्षिण की ओर विस्तार को रोका।
  - फारस के राजा खोसरो द्वितीय के साथ कूटनीतिक संबंध बनाए।
  - बादामी और ऐहोले के प्रसिद्ध रॉक-कट मंदिरों का संरक्षण।

**नारसिंहवर्मन प्रथम द्वारा पराजय:**

- पुलकेशिन द्वितीय को पल्लव वंश के शासक नारसिंहवर्मन प्रथम (मामल्ला के नाम से भी प्रसिद्ध) से गंभीर चुनौती का सामना करना पड़ा।
- 642 ईस्वी में, नारसिंहवर्मन प्रथम ने वातापी के युद्ध में पुलकेशिन द्वितीय को निर्णायक रूप से हराया और चालुक्य राजधानी वातापी को कब्जा कर नष्ट कर दिया।
- यह पराजय चालुक्य वंश के लिए एक बड़ा झटका था, हालांकि बाद के शासकों जैसे विक्रमादित्य प्रथम के अधीन उन्होंने पुनः शक्ति प्राप्त की।

**7. (d)**

- **इक्ष्वाकु वंश:**
- इक्ष्वाकु, जिन्हें श्रीपर्वतीय के नाम से भी जाना जाता है, 3वीं और 4वीं शताब्दी ईस्वी में दक्कन क्षेत्र के एक महत्वपूर्ण वंश थे। वे वर्तमान आंध्र प्रदेश के कृष्णा-गुंटूर क्षेत्र में सातवाहन वंश के उत्तराधिकारी के रूप में उभरे।

**सातवाहन वंश:**

- सातवाहन दक्कन क्षेत्र का एक प्रमुख वंश था, जिसने लगभग 2वीं शताब्दी ईसा पूर्व से 3वीं शताब्दी ईस्वी तक शासन किया।
- व्यापार, प्रशासन और स्थापत्य (जैसे अमरावती स्तूप) में उनके योगदान के लिए वे प्रसिद्ध हैं।
- 3वीं शताब्दी ईस्वी तक, आंतरिक संघर्ष और बाहरी आक्रमणों के कारण सातवाहन कमजोर हो गए, जिससे क्षेत्र में शक्ति का निर्वात उत्पन्न हुआ।

**इक्ष्वाकु वंश का उदय:**

- सातवाहनों के पतन के बाद, इक्ष्वाकु कृष्णा-गुंटूर क्षेत्र में स्थानीय शासकों के रूप में उभरे।

- वे बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण संरक्षक थे और उन्होंने अमरावती स्तूप और नागार्जुनकोंडा जैसे बौद्ध स्थलों के निर्माण और विस्तार का समर्थन किया।
- **राजधानी:** विजयपुरी (वर्तमान नागार्जुनकोंडा के पास)।
- **धर्म:** उन्होंने हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म दोनों का समर्थन किया, लेकिन उनकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियां बौद्ध स्मारकों के संरक्षण में थीं।

**अन्य विकल्प:**

- **राष्ट्रकूट:** 8वीं से 10वीं शताब्दी ईस्वी में एक बाद का वंश था, जो इक्ष्वाकु के समकालीन नहीं था।
- **चालुक्य:** चालुक्य वंश 6वीं शताब्दी ईस्वी में उभरा, जो इक्ष्वाकु के बाद का समय है।
- **पल्लव:** पल्लव मुख्यतः तमिल क्षेत्र में आधारित थे और 4वीं शताब्दी ईस्वी के बाद प्रमुखता से उभरे। वे इक्ष्वाकु के पूर्ववर्ती नहीं थे।

**8. (c)**

- संगम साहित्य में “मुवेद्र” शब्द का तात्पर्य प्राचीन तमिलकम के तीन राजमुकुटधारी राजाओं से है: चेर, चोल और पांड्य। ये राजा संगम युग (300 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी) के दौरान दक्षिण भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य के केंद्रीय व्यक्तित्व थे।

**तीन राजमुकुटधारी राजा ( मुवेद्र ):**

- **चेर:**
  - तमिलकम के पश्चिमी भाग (आधुनिक केरल) पर शासन करते थे।
  - रोमन और अरबों के साथ समुद्री व्यापार में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।
  - प्रसिद्ध बंदरगाह: मुजिरिस (आधुनिक कोडुंगलूर)।
- **चोल:**
  - तमिलकम के मध्य और उत्तरी भाग (कावेरी नदी डेल्टा के आसपास) पर शासन करते थे।
  - अपने प्रशासनिक कौशल और प्रारंभिक नौसैनिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे।
  - प्रसिद्ध नगर: कावेरीपट्टिनम और उरैयूर।
- **पांड्य:**
  - तमिलकम के दक्षिणी क्षेत्र पर शासन करते थे, जिनकी राजधानी मदुरै थी।
  - तमिल साहित्य, कला और संस्कृति के महत्वपूर्ण संरक्षक।
  - संगम सभाओं को प्रायोजित करने के लिए प्रसिद्ध।

9. (d)

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में एक उन्नत प्रशासनिक प्रणाली का उल्लेख है, जिसमें आर्थिक विनियमन के लिए जिम्मेदार अधिकारी शामिल थे। इन अधिकारियों की भूमिकाएं निम्नलिखित हैं:

1. **समाहर्ता:** समाहर्ता साम्राज्य के विभिन्न प्रांतों से राजस्व संग्रह और समेकन के लिए जिम्मेदार थे। इसमें कर, श्रद्धांजलि और राज्य के अन्य आय स्रोत शामिल थे।
2. **सन्निधाता:** सन्निधाता साम्राज्य के कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य करते थे। वे राज्य कोष, जिसमें नकदी, अनाज और अन्य कीमती संपत्तियां शामिल थीं, का प्रबंधन करते थे। सन्निधाता राज्य संपत्ति के उचित लेखांकन और सुरक्षा सुनिश्चित करते थे।
3. **पण्याध्यक्ष:** पण्याध्यक्ष व्यापार के अधीक्षक थे। वे बाजार संचालन की निगरानी, वस्तुओं की कीमतों को नियंत्रित करने, वस्तुओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने और व्यापार में कदाचार को रोकने के लिए जिम्मेदार थे।
4. **शुल्काध्यक्ष:** शुल्काध्यक्ष सीमा शुल्क और सामानों पर लगाए गए टोल की वसूली की देखरेख करते थे। यह अधिकारी साम्राज्य के भीतर और सीमा पार किए जाने वाले सामानों के उचित कराधान को सुनिश्चित करते थे।

10. (c)

- मौर्य सम्राट अशोक अपने शिलालेखों के लिए प्रसिद्ध हैं, जो धर्म (धार्मिक आचरण) और मनुष्यों और जानवरों के कल्याण पर आधारित उनकी नीतियों को उजागर करते हैं। इन शिलालेखों में, शिलालेख-I में पशु बलि के निषेध का सबसे प्रारंभिक प्रमाण मिलता है। विस्तृत विवरण इस प्रकार है:

**शिलालेख-I:**

- इस शिलालेख में अशोक के उस आदेश का स्पष्ट उल्लेख है जिसमें पशु बलि और त्योहारों में जानवरों के वध को प्रतिबंधित किया गया है।
- इसमें यह भी कहा गया है कि अशोक ने शाही रसोई में जानवरों की हत्या को रोक दिया और भोजन के लिए वध किए जाने वाले जानवरों की संख्या को सीमित कर दिया।
- इसे भारत में पशु बलि के खिलाफ शासक द्वारा उठाए गए सक्रिय कदमों का सबसे प्रारंभिक ऐतिहासिक प्रमाण माना जाता है।

**अन्य विकल्प:**

- **रुम्मिनदेई शिलाले:** यह शिलालेख लुंबिनी (बुद्ध के जन्मस्थान) में पाया गया था। इसमें लुंबिनी को

करों से मुक्त करने का उल्लेख है, लेकिन पशु बलि का उल्लेख नहीं है।

- **बैराट का लघु शिलाले:** यह शिलालेख अशोक के धर्म के प्रचार और बौद्ध सिद्धांतों के प्रसार पर केंद्रित है, लेकिन इसमें पशु बलि का विशेष उल्लेख नहीं है।
- **कलिंग शिलाले:** ये शिलालेख, जो धौली और जौगड़ा में पाए गए हैं, मुख्य रूप से कलिंग युद्ध के बाद अशोक की प्रशासनिक नीतियों और धर्म के प्रसार के प्रयासों से संबंधित हैं। इनमें पशु बलि का उल्लेख नहीं है।

11. (b)

1. **तराइन का प्रथम युद्ध - 1191:**

- यह युद्ध 1191 ईस्वी में पृथ्वीराज चौहान, चौहान (चाहमान) वंश के राजपूत शासक, और मोहम्मद गोरी, गोरी साम्राज्य के शासक, के बीच लड़ा गया था।
- परिणाम: पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गोरी को हराया और उसे पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।

2. **चौसा का युद्ध - 1539:**

- चौसा का युद्ध वास्तव में 1539 ईस्वी में लड़ा गया था, न कि 1527 में।
- यह युद्ध मुगल सम्राट हुमायूं और सूर साम्राज्य के संस्थापक शेर शाह सूरी (शेर खान) के बीच लड़ा गया था।
- परिणाम: शेर शाह सूरी ने हुमायूं को हराया, जिससे मुगल साम्राज्य का अस्थायी पतन हुआ।

3. **खानवा का युद्ध - 1527:**

- खानवा का युद्ध 1527 ईस्वी में लड़ा गया था, न कि 1528 में।
- यह युद्ध मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर और मेवाड़ के राणा सांगा के बीच लड़ा गया था।
- परिणाम: बाबर की जीत ने 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध में उसकी प्रारंभिक जीत के बाद भारत में मुगल साम्राज्य की उपस्थिति को और मजबूत किया।

4. **घाघरा का युद्ध - 1529:**

- घाघरा का युद्ध 1529 ईस्वी में हुआ था।
- यह युद्ध बाबर और अफगान सेना तथा सुल्तान महमूद लोदी (इब्राहिम लोदी के भाई) की संयुक्त सेना के बीच लड़ा गया था।
- परिणाम: बाबर की जीत ने उत्तरी भारत में मुगल साम्राज्य के नियंत्रण को और अधिक सुदृढ़ किया।

12. (c)

1. मोती मस्जिद ( दिल्ली ):

- यह मस्जिद औरंगजेब द्वारा 1659-1660 के बीच लाल किले, दिल्ली में बनाई गई थी।
- इसे सम्राट और किले की रानियों के निजी पूजा स्थल के रूप में उपयोग किया जाता था।
- यह सफेद संगमरमर से बनी है और इसमें सुंदर पुष्प अलंकरण हैं।

2. मोती मस्जिद ( आगरा ):

- यह मस्जिद शाहजहां द्वारा बनाई गई थी और इसे "पर्ल मस्जिद" कहा जाता है क्योंकि यह मोती की तरह चमकती है।
- यह आगरा किले के परिसर में स्थित है और मुगल स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।

3. मोती मस्जिद ( लाहौर ):

- यह मस्जिद मुगल सम्राट जहांगीर द्वारा बनाई गई थी और इसे 1630 में समर्पित किया गया था।
- यह लाहौर किले के भीतर स्थित है।

13. (c)

**बहमनी साम्राज्य ( 1347-1527 ईस्वी ):**

यह साम्राज्य अलाउद्दीन बहमन शाह द्वारा स्थापित किया गया था और यह दक्कन का पहला इस्लामिक साम्राज्य था। इसका प्रशासनिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक ढांचा फारसी प्रभाव और स्थानीय अनुकूलनों को दर्शाता है।

- **प्रशासनिक विभाजन:** साम्राज्य को पांच तराफों (प्रांतों) में विभाजित किया गया था: गुलबर्गा, बीजापुर, बरार, बीदर और दौलताबाद। प्रत्येक तराफ का प्रशासन एक तराफदार द्वारा किया जाता था, जो प्रशासन, सैन्य मामलों और राजस्व संग्रहण की देखरेख करता था। इस विकेंद्रीकरण ने बहमनी शासकों को व्यापक और विविध क्षेत्र पर नियंत्रण बनाए रखने में मदद की।
- **राजधानी स्थानांतरण:** मूल राजधानी गुलबर्गा (आधुनिक कालबुर्गी) थी। 1425 ईस्वी में, अहमद शाह प्रथम वली ने राजनीतिक स्थान और बेहतर संसाधनों के कारण राजधानी को गुलबर्गा से बीदर स्थानांतरित किया। बीदर से गुलबर्गा राजधानी स्थानांतरित होने का कथन गलत है।
- **फारसी संस्कृति और भाषा:** बहमनी शासक फारसी संस्कृति और भाषा के प्रबल संरक्षक थे, जो उनके दरबार के केंद्रीय तत्व बन गए। फारसी आधिकारिक भाषा थी, और फारस के कवियों, विद्वानों और कलाकारों ने बहमनी दरबार को समृद्ध किया।

गुलबर्गा और बीदर में मकबরों जैसी स्थापत्य शैलियाँ फारसी प्रभाव को दर्शाती हैं।

इस प्रकार, केवल पहला और तीसरा कथन सही है। सही उत्तर है (c) केवल 1 और 3।

14. (d)

1. बाणभट्ट - हर्ष:

- बाणभट्ट सम्राट हर्ष (हर्षवर्धन) के दरबार के प्रमुख कवि और इतिहासकार थे।
- उन्होंने हर्षचरित (हर्ष का जीवनी विवरण) और कादंबरी (प्रसिद्ध संस्कृत गद्य कृति) की रचना की।

2. राजशेखर - महेन्द्रपाल प्रथम:

- राजशेखर गुर्जर-प्रतिहार वंश के महेन्द्रपाल प्रथम के दरबार में प्रसिद्ध संस्कृत कवि और नाटककार थे।
- उनकी प्रसिद्ध कृतियों में काव्यमीमांसा, बालभारतम, और भुवनकोश शामिल हैं।
- वे प्रतिहार राजा के शिक्षक भी थे और संस्कृत साहित्य के पुनरुत्थान से जुड़े थे।

3. हरिसेन - समुद्रगुप्त:

- हरिसेन गुप्त साम्राज्य के महान शासक समुद्रगुप्त के दरबार के कवि और मंत्री थे।
- उन्होंने इलाहाबाद स्तंभ लेख की रचना की, जो समुद्रगुप्त की विजय और उपलब्धियों का गुणगान करता है।

4. कंबन - राजराजा चोल प्रथम:

- कंबन तमिल कवि थे, जो राजराजा चोल प्रथम के दरबार से जुड़े थे।
- उनकी प्रसिद्ध कृति कंब रामायणम है, जो रामायण का तमिल अनुवाद है।
- यह तमिल साहित्य की महानतम कृतियों में से एक है और चोल दरबार की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाती है।

15. (b)

- अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ईस्वी) ने दिल्ली सल्तनत को मजबूत करने के लिए विशेष रूप से सैन्य और आर्थिक प्रशासन में कई सुधार किए।
- **दाग प्रणाली:** यह प्रणाली सुल्तान की सेना में घोड़ों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए लागू की गई थी। इस प्रणाली के तहत, घोड़ों को चिह्नित किया जाता था ताकि निम्न गुणवत्ता वाले घोड़ों की जगह लेने और भ्रष्टाचार को रोका जा सके। यह प्रणाली उनके व्यापक सैन्य सुधारों का हिस्सा थी, जिसमें कड़ी भर्ती और रखरखाव के प्रोटोकॉल शामिल थे।

- **दीवान-ए-अर्ज:** यह सैन्य मामलों के लिए जिम्मेदार था, जिसमें भर्ती और प्रशिक्षण शामिल था। हालांकि, बाजार नियंत्रण सीधे अलाउद्दीन द्वारा देखा जाता था, और शाहना-ए-मंडी जैसे अधिकारी उनकी बाजार नीतियों को लागू करते थे।
- **राजस्व प्रशासन:** यह दीवान-ए-विजारत द्वारा प्रबंधित किया जाता था। दीवान-ए-इंशा केवल शाही पत्राचार और कूटनीतिक मामलों का प्रबंधन करता था।
- **इक्ता प्रणाली:** अलाउद्दीन के भू-राजस्व सुधारों ने इक्ता धारकों की शक्ति को सख्त विनियमन और प्रत्यक्ष कर संग्रह के माध्यम से सीमित किया, लेकिन इक्ता प्रणाली को समाप्त नहीं किया गया था।

**16. (b)**

**राजा भोज ( 1010-1055 ईस्वी ):**

- परमार वंश के राजा भोज एक महान शासक और विद्वान थे, जो कला, साहित्य और विज्ञान के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध थे। वे स्वयं एक उत्कृष्ट लेखक थे और उन्हें कई साहित्यिक कार्यों का श्रेय दिया जाता है।
- **सरस्वती-कंठाभरण:** यह संस्कृत व्याकरण और काव्य पर एक ग्रंथ है, जिसे राजा भोज ने लिखा। यह उनके भाषाविज्ञान और साहित्यिक सौंदर्यशास्त्र की गहन समझ को दर्शाता है और संस्कृत विद्वता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कार्य है।

**अन्य विकल्प:**

- **राजतरंगिणी:** यह 12वीं शताब्दी में कल्हण द्वारा रचित कश्मीर के इतिहास का वर्णन है। यह राजा भोज से संबंधित नहीं है।
- **नाट्यशास्त्र:** यह प्राचीन ग्रंथ भरत द्वारा रचित है और नाट्यकला तथा प्रदर्शन कला पर आधारित है। यह राजा भोज के समय से पहले का है और उनसे संबंधित नहीं है।
- **लीलावती:** यह भास्कराचार्य द्वितीय द्वारा रचित एक गणितीय ग्रंथ है, जो अंकगणित और ज्यामिति पर आधारित है। यह भी राजा भोज से संबंधित नहीं है।

**17. (d)**

भारत में सूफी परंपरा एक रहस्यवादी और आध्यात्मिक इस्लामिक आंदोलन के रूप में विकसित हुई, जो भगवान के प्रति भक्ति, प्रेम और सेवा पर जोर देती है। विभिन्न सूफी परंपराएँ (सिलसिले) भारत में आईं और फली-फूलीं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विशेषताएँ थीं।

**चिश्ती परंपरा:**

- यह भारत में सबसे प्रमुख सूफी परंपराओं में से एक है।
- इसने मानवता के प्रति प्रेम, सरलता और सहिष्णुता पर जोर दिया और भक्ति प्रथाओं जैसे संगीत (समा) और सार्वजनिक सेवा को अपनाया।

- ध्यान का अभ्यास किया गया, लेकिन चिश्तियों ने केवल एकांत तक अपने आप को सीमित नहीं किया; वे आम जनता के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

**सुहरावर्दी परंपरा:**

- शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी द्वारा स्थापित यह परंपरा गरीबी या सरलता पर जोर नहीं देती थी।
- सुहरावर्दी सूफी अक्सर शाही दरबारों में सलाहकार के रूप में सेवा करते थे और चिश्तियों की तरह तपस्वी जीवन नहीं जीते थे।

**कादरी परंपरा:**

- शेख अब्दुल कादिर जिलानी द्वारा स्थापित यह परंपरा भारत में अकबर के शासनकाल से बहुत पहले शुरू हो चुकी थी।
- दिल्ली सल्तनत के शासनकाल के दौरान यह प्रचलित हुई और मुगल काल में और अधिक विस्तारित हुई।

**नक्शबंदी परंपरा:**

- इस परंपरा ने शरीयत का कड़ाई से पालन करने पर जोर दिया और संगीत (समा) और मजारों की यात्रा जैसी प्रथाओं को अस्वीकार किया, जो अन्य सूफी परंपराओं में आम थीं।
- इसे भारत में ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंद ने शुरू किया और बाद में शेख अहमद सरहिंदी ने इसका विस्तार किया। उन्होंने शुद्ध इस्लामी प्रथाओं और रूढ़िवादी इस्लाम के पुनः स्थापित करने पर बल दिया।

**18. (c)**

**1. अल-बेरूनी**

- अल-बेरूनी, एक फारसी विद्वान, 11वीं सदी के प्रारंभ में भारत आए थे, जब महमूद गजनी द्वारा आक्रमण हो रहे थे, न कि मुहम्मद घुरी के समय। उन्हें उनकी कृति 'किताब-उल-हिंद' के लिए जाना जाता है, जो भारतीय समाज, धर्म, संस्कृति और उस समय के वैज्ञानिक विकासों का एक विस्तृत वर्णन प्रदान करती है। अल-बेरूनी ने संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन किया और भारतीय विद्वानों के साथ बातचीत की। मुहम्मद घुरी, हालांकि, 12वीं सदी में आए थे और उनका अल-बेरूनी से कोई संबंध नहीं था।

**2. मार्को पोलो**

- मार्को पोलो, वेनिस के यात्री, 13वीं सदी के अंत में (लगभग 1292 ईस्वी) पांड्य शासकों के शासन के दौरान दक्षिण भारत आए थे। उन्होंने पांड्य राज्य का वर्णन एक समृद्ध क्षेत्र के रूप में किया था, जिसमें प्रचुर संसाधन और व्यापारिक संबंध विशेष रूप से मोती के व्यापार में थे। उनकी यात्रा वृत्तांत 'मार्को

पोलो की यात्रा' में पांड्यन राज्य की संपत्ति, संस्कृति और प्रशासन पर बल दिया गया है।

**3. अब्दुर रज्जाक**

- अब्दुर रज्जाक, शाह रुख (तिमुरी साम्राज्य) के दरबार से एक फारसी राजदूत, 15वीं सदी के मध्य (1440 ईस्वी) में भारत आए थे, जब देव राय द्वितीय, विजयनगर साम्राज्य के शासक थे। उनका विवरण विजयनगर साम्राज्य की भव्यता, इसके प्रभावी प्रशासन, समृद्ध अर्थव्यवस्था और वास्तुकला की भव्यता को दर्शाता है। उन्होंने साम्राज्य के धार्मिक सहिष्णुता और जीवंत सांस्कृतिक जीवन का भी अवलोकन किया।

**फ्रांकोइस बर्नियर**

फ्रांकोइस बर्नियर, एक फ्रांसीसी यात्री और चिकित्सक, 17वीं सदी के अंत में औरंगजेब के शासन के दौरान भारत आए थे, न कि जहांगीर के समय। उनकी कृति 'मुगल साम्राज्य में यात्रा' मुगल दरबार, सामाजिक-आर्थिक स्थितियों और उस समय के प्रशासन पर विस्तृत जानकारी प्रदान करती है। बर्नियर की लिखाई विशेष रूप से मुगल साम्राज्य के पतन और उसकी कड़ी आर्थिक संरचना को समझने के लिए मूल्यवान है।

**19. (a)**

- बहमनी साम्राज्य, जो 1347 ईस्वी में स्थापित हुआ, दिल्ली सुलतानत के तुगलक वंश से अलग हुआ था। इसकी नींव दक्कन क्षेत्र में एक स्वतंत्र मुस्लिम राज्य की शुरुआत थी, जिससे दिल्ली का उस क्षेत्र पर नियंत्रण समाप्त हुआ।
- इस साम्राज्य की स्थापना अला-उद-दीन बहमनी शाह (हसन गंगू) ने की थी, जो मुहम्मद बिन तुगलक के तहत एक पूर्व दरबारी थे। मुहम्मद बिन तुगलक की दमनकारी और अत्यधिक केंद्रीकृत नीतियों, साथ ही उनका राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद (दक्कन) स्थानांतरित करने का अभियान, दक्षिणी क्षेत्रों के नवाबों और गवर्नरों में व्यापक असंतोष का कारण बने।
- इस असंतोष का फायदा उठाते हुए अला-उद-दीन बहमनी शाह ने दक्कन क्षेत्र में स्वतंत्रता की घोषणा की और गुलबर्गा में अपनी पहली राजधानी स्थापित की (जो बाद में बिदर में स्थानांतरित हुई)।
- बहमनी साम्राज्य ने दक्षिण भारत में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाई, जो अक्सर विजयनगर साम्राज्य से टकराता रहा और क्षेत्र की राजनीतिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य पर प्रभाव डालता रहा।

**20. (a)**

A. **पत्तचित्र:** पत्तचित्र उड़ीसा की पारंपरिक चित्रकला शैली है, जो पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों में भी

प्रचलित है। "पत्तचित्र" शब्द संस्कृत से लिया गया है, जिसमें 'पट्ट' का अर्थ है "कपड़ा" और "चित्र" का अर्थ है 'चित्रकला'। इन चित्रों को उनकी जीवंत रंगों, जटिल विवरणों और पौराणिक विषयों के लिए जाना जाता है, विशेष रूप से भगवान जगन्नाथ और रामायण और महाभारत की कथाओं के इर्द-गिर्द। यह परंपरा पुरी के जगन्नाथ मंदिर से जुड़ी हुई है, जहाँ इन चित्रों का उपयोग पूजा में किया जाता है। पत्तचित्र को आमतौर पर कपड़े या सूखे ताड़ के पत्तों पर प्राकृतिक रंगों और रंगों का उपयोग करके बनाया जाता है।

B. **मञ्जूषा:** मञ्जूषा कला बिहार की पारंपरिक चित्रकला रूप है, जो विशेष रूप से आंग क्षेत्र से जुड़ी हुई है। इसे "सांप चित्रकला" भी कहा जाता है क्योंकि इसका थीम बिहुला-बिशरी लोककथा से लिया गया है, जो सर्प देवी मंसा देवी की भक्ति की कहानी है। मञ्जूषा चित्रों की विशेषता उनके बॉक्स जैसी संरचना, पुनरावृत्त पैटर्न और उज्ज्वल रंगों जैसे गुलाबी, हरे और पीले का उपयोग है। यह कला बिहार की सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

C. **कलामकारी:** कलामकारी एक अद्वितीय चित्रकला परंपरा है जो आंध्र प्रदेश और तेलंगाना से उत्पन्न हुई है। इसका नाम फारसी शब्दों 'कलाम' (कलम) और 'कारी' (कला) से लिया गया है, जो प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके बनाए गए जटिल हाथ से चित्रित या ब्लॉक-प्रिंट डिजाइनों को दर्शाता है। कलामकारी चित्र अक्सर हिंदू मिथक से दृश्य चित्रित करते हैं, जैसे रामायण और महाभारत के प्रसंग, और पारंपरिक रूप से कपड़े पर बनाए जाते हैं। इसमें दो प्रमुख शैलियाँ हैं: श्रीकालाहस्ती शैली, जो पूरी तरह से हाथ से बनाई जाती है, और मचिलीपट्टनम शैली, जिसमें ब्लॉक प्रिंटिंग का उपयोग किया जाता है। यह कला मंदिर संस्कृति और कथा परंपराओं से गहरे जुड़ी हुई है।

D. **वारली:** वारली चित्रकला महाराष्ट्र के वारली समुदाय द्वारा की जाने वाली आदिवासी कला रूप है, जो राजस्थान से संबंधित नहीं है। इस कला रूप में सरल ज्यामितीय रूपों-वृत्त, त्रिकोण और रेखाओं का उपयोग करके प्रकृति, अनुष्ठान, दैनिक जीवन और त्योहारों को दर्शाया जाता है। वारली कला आमतौर पर मिट्टी की दीवारों पर चावल और पानी से बने पेस्ट का उपयोग करके की जाती है। इसकी विशेषता इसकी न्यूनतम शैली और एकल रंगी पैलेट है, जिसमें मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य पर ध्यान केंद्रित किया गया है।



21. (c)

**चार्टर एक्ट 1853:** यह अधिनियम भारत में सिविल सेवकों की भर्ती के लिए एक खुली प्रतियोगी परीक्षा शुरू करने के लिए महत्वपूर्ण था। इसने भारत के लिए एक विधायी परिषद बनाकर एक अधिक संरचित विधायी प्रक्रिया की शुरुआत की। हालांकि, इसने चुनाव के सिद्धांत को लागू नहीं किया।

**इंडियन काउंसिल्स एक्ट 1861:** यह अधिनियम ब्रिटिश भारत में विधायी विकेंद्रीकरण की शुरुआत को चिह्नित करता है। इसने भारतीय सदस्यों को नामित करके विधायी परिषदों में भारतीय प्रतिनिधित्व की अनुमति दी। हालांकि, इस अधिनियम में सदस्य नामित किए जाते थे, चुने नहीं जाते थे।

**इंडियन काउंसिल्स एक्ट 1892:** इस अधिनियम ने ब्रिटिश भारत में पहली बार औपचारिक रूप से चुनाव के सिद्धांत को लागू किया, हालांकि "चुनाव" शब्द का स्पष्ट रूप से उपयोग नहीं किया गया था। इसके बजाय, इसने अप्रत्यक्ष चुनावों का प्रावधान किया, जहां प्रतिनिधियों को वाणिज्य मंडलों और नगरपालिका बोर्डों जैसे संगठनों की सिफारिशों के आधार पर "नामांकित" किया गया। यह अधिनियम भारतीयों को विधायी प्रक्रिया में सीमित और नियंत्रित भागीदारी देने की शुरुआत थी।

**गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1919:** इस अधिनियम ने प्रांतीय सरकारों में द्वैध शासन (डायार्की) की शुरुआत की और विषयों को "आरक्षित" और "हस्तांतरित" श्रेणियों में विभाजित किया। इसने चुनाव प्रक्रिया का और अधिक विस्तार किया और कुछ निर्वाचन क्षेत्रों के लिए प्रत्यक्ष चुनावों की शुरुआत की। हालांकि, चुनाव का सिद्धांत पहले ही 1892 के इंडियन काउंसिल्स एक्ट द्वारा पेश किया जा चुका था।

22. (a)

**हंटर कमीशन (1882):** इसे औपचारिक रूप से 'भारतीय शिक्षा आयोग' के रूप में जाना जाता है और इसे ब्रिटिश सरकार द्वारा सर विलियम हंटर की अध्यक्षता में नियुक्त किया गया था। इसका उद्देश्य वुड्स डिस्पैच (1854) के कार्यान्वयन के बाद से शिक्षा में हुई प्रगति की समीक्षा करना और विशेष रूप से प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में सुधार के सुझाव देना था।

1. **प्राथमिक शिक्षा का नियंत्रण स्थानीय निकायों को स्थानांतरित करना:** कमीशन ने प्राथमिक शिक्षा को नगरपालिकाओं और जिला बोर्डों जैसे स्थानीय स्वशासी निकायों के नियंत्रण में स्थानांतरित करने की सिफारिश की। इसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली का विकेंद्रीकरण और इसे अधिक सुलभ बनाना था। यह स्थानीय स्वशासन को बढ़ावा देने के व्यापक उद्देश्य के अनुरूप था।

2. **महिलाओं की शिक्षा:** कमीशन ने महिलाओं की शिक्षा के लिए दृढ़ता से वकालत की और इसे अधिक सुलभ और सांस्कृतिक रूप से अनुकूल बनाने के लिए स्थानीय भाषाओं में शिक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया। इसने महिलाओं की स्थिति में सुधार और सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका को मान्यता दी।

**स्थानीय भाषाओं का माध्यम:** कमीशन ने प्राथमिक स्तर पर स्थानीय भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग करने का समर्थन किया ताकि शिक्षा को जनसाधारण के लिए सुलभ बनाया जा सके। अंग्रेजी को केवल उच्च शिक्षा स्तरों के लिए आरक्षित रखा गया, विशेष रूप से माध्यमिक और कॉलेज स्तर के शिक्षण के लिए, प्रशासनिक और व्यावसायिक जरूरतों को पूरा करने के लिए।

23. (b)

**1857 का विद्रोह:** इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है। यह स्थानीय विद्रोहों की एक श्रृंखला के रूप में शुरू हुआ, जो अंततः ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक बड़े विद्रोह में बदल गया। इसकी प्रारंभिक अवस्थाओं में निम्नलिखित घटनाएँ हुईं:

1. **बैरकपुर में मंगल पांडे को फांसी:**

**तिथि: 8 अप्रैल 1857**

- बंगाल नेटिव इंफैंट्री के एक सिपाही मंगल पांडे ने बैरकपुर में ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला किया, जो कि विद्रोह की शुरुआत के लिए महत्वपूर्ण घटना बनी।
- उनकी कार्रवाई एनफील्ड राइफल कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी के उपयोग की अफवाहों से प्रेरित थी।
- उन्हें पकड़ लिया गया और ब्रिटिशों द्वारा फांसी दी गई, जिससे वे विद्रोह के पहले शहीदों में से एक बन गए।

2. **बहादुर शाह जफर को भारत का सम्राट घोषित करना:**

**तिथि: 11 मई 1857**

- 10 मई 1857 को मेरठ में विद्रोह भड़कने के बाद, विद्रोहियों ने दिल्ली की ओर कूच किया और मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को विद्रोह का प्रतीकात्मक नेता घोषित किया।
- इस घटना ने कई भारतीय रियासतों और विद्रोही समूहों को उनके नाममात्र नेतृत्व के तहत एकजुट किया।

3. **नाना साहब द्वारा कानपुर की घेराबंदी:**

**तिथि: 5 जून 1857**

- नाना साहब, जो पदच्युत पेशवा बाजी राव द्वितीय के दत्तक पुत्र थे, ने कानपुर की घेराबंदी का नेतृत्व किया।

- यह विद्रोह के दौरान सबसे खूनी टकरावों में से एक था, क्योंकि नाना साहब ने अपनी शक्ति वापस लेने और ब्रिटिश अन्याय का बदला लेने का प्रयास किया।

**24. (a)**

भारत सरकार अधिनियम, 1919, जिसे मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के नाम से भी जाना जाता है, ने प्रांतीय स्तर पर द्वैध शासन की प्रणाली लागू की। द्वैध शासन ने प्रांतीय प्रशासन के विषयों को दो श्रेणियों में विभाजित किया: “हस्तांतरित” और “आरक्षित”।

**हस्तांतरित विषय:** ‘हस्तांतरित सूची’ में वे विषय शामिल थे जिन्हें निर्वाचित भारतीय मंत्रियों द्वारा प्रशासित किया जाता था और जो प्रांतीय विधायिका के प्रति उत्तरदायी थे। ये विषय स्थानीय महत्व के थे और जनता की भागीदारी की आवश्यकता थी। इस सूची के मुख्य विषय थे:

- सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता
- शिक्षा
- कृषि
- स्थानीय स्वशासन
- उद्योग

इन विषयों का उद्देश्य शासन में भारतीय भागीदारी को बढ़ाना था, हालांकि ये सीमित वित्तीय और प्रशासनिक शक्ति वाले क्षेत्र थे।

**आरक्षित विषय:** ‘आरक्षित सूची’ में वे विषय शामिल थे जो गवर्नर और उनकी कार्यकारी परिषद (जो ब्रिटिश अधिकारियों से बनी होती थी) के नियंत्रण में रहते थे। ये विषय कानून और व्यवस्था बनाए रखने और प्रांतों की आर्थिक नींव के लिए महत्वपूर्ण थे। आरक्षित विषयों में शामिल थे:

- सिंचाई
- रेलवे
- वित्त
- कानून व्यवस्था
- पुलिस
- भू-राजस्व
- आरक्षित सूची ने शासन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर ब्रिटिशों का नियंत्रण सुनिश्चित किया।

**25. (d)**

**पूना पैक्ट:**

- 24 सितंबर 1932 को डॉ. बी.आर. अंबेडकर और महात्मा गांधी के बीच पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता अनुसूचित जातियों (तत्कालीन “अस्पृश्य वर्ग”) के लिए अलग निर्वाचक मंडल के मुद्दे पर गहन चर्चा और विरोध के बाद हुआ।

**पृष्ठभूमि:**

- **साम्प्रदायिक पंचाट (1932):** ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड द्वारा घोषित साम्प्रदायिक पंचाट ने विभिन्न समुदायों, जिनमें अनुसूचित जातियाँ भी शामिल थीं, के लिए अलग निर्वाचक मंडल का प्रस्ताव दिया।
- महात्मा गांधी ने अनुसूचित जातियों के लिए अलग निर्वाचक मंडल का विरोध किया क्योंकि उनका मानना था कि इससे हिंदू समाज में विभाजन होगा। उन्होंने इसका विरोध करने के लिए यरवदा जेल में आमरण अनशन शुरू किया।
- डॉ. बी.आर. अंबेडकर, जो अनुसूचित जातियों के अधिकारों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, ने अलग निर्वाचक मंडल को समुदाय के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा के लिए आवश्यक माना।

**मुख्य प्रावधान:**

- **आरक्षित सीटें:**
  - समझौते ने प्रांतीय विधानसभाओं में अनुसूचित जातियों के लिए 147 सीटें आरक्षित कीं, जो साम्प्रदायिक पंचाट के तहत प्रस्तावित 71 सीटों की तुलना में काफी अधिक थीं।
- **संयुक्त निर्वाचक मंडल:**
  - अलग निर्वाचक मंडल की अवधारणा को संयुक्त निर्वाचक मंडल से बदल दिया गया, जिसमें अनुसूचित जातियाँ अन्य समुदायों के साथ मतदान करेंगी, लेकिन अपनी ही समुदाय से प्रतिनिधियों का चुनाव कर सकेंगी।
- **अन्य संस्थानों में प्रतिनिधित्व:**
  - अनुसूचित जातियों के उत्थान के लिए सरकारी नौकरियों और अन्य संस्थानों में पर्याप्त प्रतिनिधित्व का भी समझौता हुआ।

**26. (a)**

**महात्मा गांधी की कांग्रेस सत्र में पहली उपस्थिति:**

महात्मा गांधी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सत्र में पहली बार 1901 में कलकत्ता में उपस्थिति दर्ज कराई। यह उनकी राजनीतिक भागीदारी का प्रारंभिक चरण था, जो दक्षिण अफ्रीका में उनके प्रारंभिक सामाजिक कार्यों के बाद हुआ, लेकिन भारतीय राजनीति में उनकी पूर्ण भागीदारी से पहले।

**कलकत्ता सत्र, 1901:**

- इस सत्र की अध्यक्षता दीनशाँ वाचा ने की थी।
- इस सत्र में स्वशासन और राजनीतिक सुधारों पर चर्चा हुई।
- गांधी इस सत्र में कांग्रेस की कार्यप्रणाली को देखने और अन्य राजनीतिक नेताओं से जुड़ने के उद्देश्य से शामिल हुए।

- इस समय गांधी भारतीय राजनीति में प्रमुख राजनीतिक व्यक्तित्व नहीं थे और दक्षिण अफ्रीका में अपने सामाजिक कार्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहे थे।

**आगे की भागीदारी:**

- 1915 में भारत लौटने के बाद, गांधी ने कांग्रेस में सक्रिय भूमिका निभाना शुरू किया।
- 1916 के लखनऊ सत्र में गांधी की भागीदारी महत्वपूर्ण रही, जहां कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच ऐतिहासिक लखनऊ समझौता हुआ।

**27. (a)**

- 1937 के प्रांतीय चुनाव भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत आयोजित किए गए थे, जिसने प्रांतीय स्वायत्तता प्रदान की।
- ये चुनाव महत्वपूर्ण थे क्योंकि उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच बढ़ते मतभेदों को उजागर किया।
- कांग्रेस ने अधिकांश प्रांतों में जीत हासिल की और 11 में से 7 प्रांतों में अपनी सरकार बनाई। वहीं, मुस्लिम लीग का प्रदर्शन खराब रहा और वह केवल 482 मुस्लिम सीटों में से 109 ही जीत सकी, जिससे सभी मुसलमानों का प्रतिनिधि होने का उसका दावा कमजोर पड़ गया।
- कांग्रेस की भारी सफलता और शासन के प्रति उसका दृष्टिकोण राजनीतिक विभाजन को गहरा कर गया, जिससे ये चुनाव उनके संबंधों में एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गए।
- मुस्लिम लीग ने कांग्रेस के नेतृत्व वाली प्रांतीय सरकारों में भागीदारी मांगी ताकि अपनी प्रभावशीलता बढ़ा सके और मुसलमानों के प्रतिनिधि के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत कर सके।
- हालांकि, कांग्रेस ने इस अनुरोध को ठुकरा दिया और कहा कि वह व्यक्तियों के साथ काम करेगी, पार्टियों के साथ नहीं। इस निर्णय ने मुस्लिम लीग को और अलग-थलग कर दिया, जिससे कांग्रेस के प्रति उसका रुख कठोर हो गया।
- इस इनकार को लीग ने अपनी राजनीतिक वैधता की अवहेलना के रूप में देखा, जिससे तनाव बढ़ा और हिंदू-मुसलमानों के बीच ध्रुवीकरण में योगदान मिला।
- कांग्रेस द्वारा मुस्लिम लीग को अपनी सरकारों में शामिल न करने का फैसला इन दोनों संगठनों के बीच संबंधों के बिगड़ने में सीधे तौर पर जिम्मेदार था। यह निर्णय समझने में महत्वपूर्ण है कि 1937 के चुनाव क्यों एक मोड़ साबित हुए।

इसलिए, A और R दोनों सही हैं, और R, A की सही व्याख्या करता है।

**28. (c)**

कार्लाइल परिपत्र, जिसे 1905 में आर.डब्ल्यू. कार्लाइल, बंगाल सरकार के मुख्य सचिव द्वारा जारी किया गया था, का उद्देश्य बंगाल में छात्रों के बीच बढ़ती राष्ट्रवादी भावना को दबाना था। यह समय बंगाल विभाजन (1905) के खिलाफ बढ़ते असंतोष और स्वदेशी आंदोलन में छात्रों की बढ़ती भागीदारी से चिह्नित था।

**कार्लाइल परिपत्र का उद्देश्य:**

- यह परिपत्र विशेष रूप से छात्रों की राजनीतिक आंदोलनों में भागीदारी को लक्षित करता था और उन्हें ब्रिटिश-विरोधी गतिविधियों में शामिल होने से रोकने का प्रयास करता था।
- इसने स्कूल और कॉलेज के अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे छात्रों को राजनीतिक सभाओं, विरोध प्रदर्शनों, या बहिष्कारों में भाग लेने से रोकें।
- शैक्षणिक संस्थानों को अपने छात्रों की गतिविधियों की निगरानी और नियंत्रण करने की आवश्यकता थी ताकि वे अकादमिक अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करें और राष्ट्रवादी संगठनों के साथ जुड़ने से बचें।

**29. (b)**

**नाना पाटिल - "सतारा का शेर"**

- नाना पाटिल, जिन्हें क्रांतिसिंह नाना पाटिल के नाम से भी जाना जाता है, महाराष्ट्र में भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के एक प्रमुख नेता थे।
- उन्हें "सतारा का शेर" इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महाराष्ट्र के सतारा जिले में 'प्रति सरकार' (समानांतर सरकार) की स्थापना में नेतृत्व किया।
- प्रति सरकार ने ब्रिटिश प्रशासन के लिए एक वैकल्पिक सरकार के रूप में कार्य किया, जिसमें अपनी प्रशासनिक व्यवस्था, न्यायालय और राजस्व संग्रह प्रणाली थी। यह प्रतिरोध और स्वशासन का प्रतीक बन गया।

**अन्य व्यक्तित्व:**

- **बाबू गेणु:**
  - महाराष्ट्र के एक कपड़ा मिल मजदूर और स्वतंत्रता सेनानी, बाबू गेणु को 1930 में विदेशी वस्त्रों के आयात के खिलाफ विरोध के दौरान शहीद होने के लिए जाना जाता है।
  - वह विदेशी माल ले जा रहे एक ट्रक को रोकने की कोशिश करते हुए मारे गए।
- **केशव बलिराम हेडगेवार:**
  - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के संस्थापक, हेडगेवार 1925 में एक महत्वपूर्ण राष्ट्रवादी व्यक्ति थे, लेकिन सतारा की घटनाओं या भारत छोड़ो आंदोलन से सीधे जुड़े नहीं थे।

- **अच्युत एस. पटवर्धन:**
  - एक समाजवादी नेता और भारत छोड़ो आंदोलन के एक सक्रिय प्रतिभागी, पटवर्धन ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ भूमिगत प्रतिरोध आयोजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

30. (a)

शारदा अधिनियम, जिसे औपचारिक रूप से बाल विवाह निरोधक अधिनियम, 1929 के नाम से जाना जाता है, भारत के सामाजिक सुधारों के इतिहास में एक ऐतिहासिक विधेयक था। इसका उद्देश्य उस समय भारतीय समाज में प्रचलित बाल विवाह की प्रथा को रोकना था।

**शारदा अधिनियम की प्रमुख विशेषताएं:** प्रवर्तन: यह अधिनियम केंद्रीय विधान सभा के सदस्य हरबिलास शारदा द्वारा प्रस्तुत किया गया था और 1930 में लागू हुआ।

**आयु सीमा:** अधिनियम ने लड़कियों के विवाह के लिए न्यूनतम आयु 14 वर्ष और लड़कों के लिए 18 वर्ष निर्धारित की। (बाद के संशोधनों में इन आयु सीमाओं में बदलाव किया गया।)

**उद्देश्य:** इसका प्राथमिक उद्देश्य बाल विवाह की संख्या को कम करना था, जो उच्च मृत्यु दर, खराब स्वास्थ्य और महिलाओं में शिक्षा की कमी से जुड़ी हुई थी।

**प्रवर्तन:** इस अधिनियम ने बाल विवाह के आयोजन या इसे प्रोत्साहन देने वाले वयस्कों, जिनमें माता-पिता, पुरोहित और अभिभावक शामिल थे, पर दंड लगाया।

**प्रभाव:** हालांकि यह अधिनियम समाज के रूढ़िवादी वर्गों से तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा, लेकिन यह बाल विवाह के खिलाफ लड़ाई में एक मील का पत्थर साबित हुआ और महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए भविष्य के सुधारों की नींव रखी।

31. (c)

श्रमिक और किसान पार्टी (WPP) ने पूर्व-स्वतंत्रता काल में मार्क्सवादी विचारधारा के प्रसार और मजदूरों व किसानों की लामबंदी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आइए प्रत्येक कथन का विश्लेषण करें:

- **WPP की स्थापना:** यह पार्टी 1920 के दशक के मध्य में मार्क्सवादी विचारों को बढ़ावा देने और मजदूर वर्ग व किसानों को उपनिवेशवादी शोषण और सामंती दमन के खिलाफ संगठित करने के लिए स्थापित की गई थी।

**कांग्रेस से संबद्धता:**

- WPP भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से निकटता से जुड़ी नहीं थी, हालांकि इसके नेता अक्सर कांग्रेस के भीतर काम करते थे और मार्क्सवादी विचारों को बढ़ावा देने के लिए इसके आंदोलनों में भाग लेते थे।

- पार्टी ने अपनी विशिष्ट पहचान और वैचारिक अंतर बनाए रखे, जो वर्ग संघर्ष और मार्क्सवादी सिद्धांतों पर केंद्रित थे, जबकि कांग्रेस का व्यापक राष्ट्रीय एजेंडा अलग था।

**प्रमुख नेता:**

- एस.ए. डांगे (भारत में एक प्रमुख मार्क्सवादी नेता) और मुजफ्फर अहमद (भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सह-संस्थापक) WPP के प्रमुख नेता थे।
- उन्होंने WPP का उपयोग श्रमिक संघों को संगठित करने और किसानों को लामबंद करने के लिए एक मंच के रूप में किया, जो भारत में प्रारंभिक मार्क्सवादी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

32. (d)

भारत में पहला अकाल आयोग, जिसे स्ट्रेची आयोग के नाम से जाना जाता है, 1878 में लॉर्ड लिटन के वायसराय काल के दौरान स्थापित किया गया था।

**स्ट्रेची आयोग (1878):**

- गठन: पहला आधिकारिक अकाल आयोग, सर रिचर्ड स्ट्रेची के नेतृत्व में, 1878 में लॉर्ड लिटन द्वारा, 1876-1878 के विनाशकारी महान अकाल के बाद नियुक्त किया गया।

**मुख्य सिफारिशें:**

- राहत उपायों के लिए अकाल निधि का निर्माण।
- फसल विफलताओं को रोकने के लिए सिंचाई परियोजनाओं का विकास।
- राहत कार्यों के लिए दिशा-निर्देश देने वाला अकाल कोड स्थापित करना।
- आपात स्थिति के दौरान खाद्य परिवहन में सुधार के लिए रेलवे का विस्तार।

**प्रभाव:**

- स्ट्रेची आयोग ने ब्रिटिश भारत में संगठित अकाल नीति की शुरुआत की, लेकिन इसके राहत उपायों की आलोचना अपर्याप्त और लाभ-केंद्रित होने के लिए की गई।

33. (b)

गांधी-स्मट्स समझौता 1914 में महात्मा गांधी और जनरल जेन स्मट्स के बीच किया गया था, जो उस समय दक्षिण अफ्रीका संघ के प्रधानमंत्री थे। इस समझौते ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय की शिकायतों का समाधान किया, जो नस्लीय भेदभाव और प्रतिबंधात्मक कानूनों का सामना कर रहे थे।

**दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय:**

- भारतीयों, जिनमें अनुबंधित मजदूर और व्यापारी शामिल थे, को भेदभावपूर्ण नीतियों के तहत गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ा।

- एशियाई पंजीकरण अधिनियम और आंदोलन, व्यापार, और निवास पर प्रतिबंध जैसे कानूनों ने भारतीय समुदाय को गंभीर रूप से प्रभावित किया।

**गांधी का संघर्ष:**

- गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में अपने 21 साल (1893-1914) के प्रवास के दौरान इन भेदभावपूर्ण कानूनों के खिलाफ सत्याग्रह अभियानों का नेतृत्व किया।
- उनके नेतृत्व ने पोल टैक्स, विवाह पर प्रतिबंध, और नागरिक अधिकारों की कमी जैसे मुद्दों को उजागर किया।

**गांधी-स्मट्स समझौते के प्रमुख प्रावधान:**

- भारतीय अनुबंधित मजदूरों पर लगाए गए £3 पोल टैक्स को निरस्त करना।
- पारंपरिक रीति-रिवाजों के तहत संपन्न भारतीय विवाहों को मान्यता देना।
- एशियाई पंजीकरण अधिनियम के तहत जबरन पंजीकरण को निलंबित करना।
- भारतीयों को नटाल और ट्रांसवाल क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से यात्रा करने की अनुमति देना।

34. (a)

- नील विद्रोह, जिसे नील बिद्रोह के नाम से भी जाना जाता है, 1859-60 में बंगाल में हुआ और इसे भारत में प्रारंभिक संगठित किसान आंदोलनों में से एक माना जाता है।
- यह आंदोलन नील की खेती करने वाले किसानों द्वारा यूरोपीय नीलहे किसानों के शोषण के खिलाफ सामूहिक प्रतिरोध के रूप में हुआ।
- यह विद्रोह महत्वपूर्ण था क्योंकि इसने समुदायों के बीच किसानों को एकजुट किया और उपनिवेशवादी उत्पीड़न का सामूहिक विरोध किया।
- यूरोपीय नीलहे किसानों ने भारतीय किसानों को नील की खेती करने के लिए मजबूर किया, खाद्य फसलों की बजाय, दबावपूर्ण टिंकठिया प्रणाली के तहत। इस प्रणाली में किसानों को अपनी जमीन के बीसवें हिस्से (या 20 में से 3 कट्टा) में नील की खेती करनी होती थी।
- नील के लिए किसानों को बेहद कम दाम चुकाए जाते थे, जबकि मुनाफा नीलहे किसानों के पास रहता था।
- यह प्रणाली किसानों को अत्यधिक गरीबी में छोड़ देती थी, जिससे वे आवश्यक खाद्य फसलें भी नहीं उगा पाते थे।
- यूरोपीय नीलहे किसानों द्वारा शोषण ने सीधे नील विद्रोह को जन्म दिया, जिसमें किसानों ने संगठित होकर इस उत्पीड़न का विरोध किया।
- इसलिए, R सही रूप से A की व्याख्या करता है।

35. (d)

‘इंडिया डिवाइडेड’ पुस्तक डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा लिखी गई थी, जो भारत के पहले राष्ट्रपति और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेता थे। यह पुस्तक 1946 में प्रकाशित हुई और इसमें अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के नेतृत्व में मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा प्रस्तावित भारत विभाजन और द्विराष्ट्र सिद्धांत की विस्तृत आलोचना प्रस्तुत की गई है।

36. (a)

अहरार आंदोलन, जिसे औपचारिक रूप से मजलिस-ए-अहरार-ए-इस्लाम के नाम से जाना जाता है, 1929 में स्वतंत्रता पूर्व भारत में एक राजनीतिक संगठन के रूप में स्थापित किया गया था। यह मुख्य रूप से अखिल भारतीय मुस्लिम लीग और अन्य विभाजनकारी प्रवृत्तियों द्वारा प्रस्तुत बढ़ती सांप्रदायिक राजनीति की प्रतिक्रिया के रूप में उभरा।

**अहरार आंदोलन की मुख्य विशेषताएं:**

पृथक निर्वाचक मंडलों का विरोध:

- इस आंदोलन ने मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मंडलों की अवधारणा का कड़ा विरोध किया, जिसे ब्रिटिश सरकार ने मॉर्ले-मिंटो सुधार (1909) और बाद में साम्प्रदायिक पंचाट (1932) के माध्यम से लागू किया।
- अहरार नेताओं का मानना था कि पृथक निर्वाचक मंडल भारतीय समाज को खंडित कर देंगे और राष्ट्रीय एकता को कमजोर करेंगे।

**विभाजन विरोधी रुख:**

- अहरार आंदोलन ने मुस्लिम लीग द्वारा प्रस्तावित द्विराष्ट्र सिद्धांत को खारिज किया और पाकिस्तान के विचार का विरोध किया।
- उन्होंने एक एकीकृत भारत की वकालत की, जहां मुसलमान और हिंदू साथ रह सकें।
- धार्मिक और सामाजिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित:
- अहरार नेताओं ने इस्लामी मूल्यों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया और साथ ही राष्ट्रीय एकता पर जोर दिया।
- उन्होंने ब्रिटिश नीतियों की भी आलोचना की, जो सांप्रदायिक विभाजन को बढ़ावा देती थीं।

**प्रमुख नेता:**

- मौलाना अता उल्लाह शाह बुखारी और मौलाना हबीब-उर-रहमान लुधियानवी जैसे नेता इस आंदोलन के प्रमुख व्यक्ति थे।
- यह आंदोलन मुख्य रूप से पंजाब और उत्तर भारत के मुसलमानों के बीच समर्थन प्राप्त करता था।

37. (b)

**एस.ए. डांगे ( श्रीपाद अमृत डांगे):**

- एस.ए. डांगे भारत के साम्यवादी और ट्रेड यूनियन आंदोलनों के एक प्रमुख व्यक्ति थे। उन्होंने भारत में मार्क्सवादी विचारधारा के विकास और श्रमिक आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- कांग्रेस समाजवादी पार्टी (CSP) 1934 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक समाजवादी विंग के रूप में स्थापित की गई थी, जिसका नेतृत्व जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेंद्र देव और राम मनोहर लोहिया जैसे नेताओं ने किया।
- एस.ए. डांगे कैबिनेट के गठन में शामिल नहीं थे। वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) से जुड़े थे, जिसने कांग्रेस समाजवादी पार्टी के एजेंडे से अलग एक अधिक कट्टरपंथी मार्क्सवादी दृष्टिकोण अपनाया।
- 1921 में, डांगे ने प्रसिद्ध पैम्फलेट "गांधी बनाम लेनिन" लिखा, जिसमें गांधीवादी अहिंसा की तुलना लेनिन की क्रांतिकारी दृष्टिकोण से की गई।
- यह पैम्फलेट भारत में मार्क्सवादी विचारों को पेश करने में प्रभावशाली बन गया और डांगे के साम्यवादी आंदोलन में प्रवेश को चिह्नित करता है।
- अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC), जो 1920 में स्थापित हुई, भारत की पहली राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन थी। हालांकि डांगे इसके संस्थापक सदस्य नहीं थे, लेकिन उन्होंने बाद के वर्षों में इसके प्रमुख नेताओं में से एक के रूप में काम किया।
- उन्होंने श्रमिक हड़तालों को संगठित करने और श्रमिकों के अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए व्यापक रूप से काम किया, जिससे भारत में श्रमिक आंदोलन की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

38. (c)

आठ प्रमुख उद्योगों का सूचकांक (Index of Eight Core Industries - ICI) भारत के मुख्य बुनियादी ढांचा क्षेत्रों के प्रदर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। ये आठ क्षेत्र औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (Index of Industrial Production - IIP) में शामिल वस्तुओं के भार का लगभग 40.27% हिस्सा बनाते हैं।

- आठ प्रमुख उद्योगों के सूचकांक में शामिल क्षेत्र:
- कोयला
- कच्चा तेल
- प्राकृतिक गैस
- रिफाइनरी उत्पाद
- उर्वरक
- इस्पात
- सीमेंट
- बिजली

ये क्षेत्र भारत के औद्योगिक और आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

**ऑटोमोबाइल:**

- ऑटोमोबाइल क्षेत्र आठ प्रमुख उद्योगों के सूचकांक में शामिल नहीं है। हालांकि यह औद्योगिक विकास और रोजगार के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, लेकिन यह उन मुख्य बुनियादी ढांचा क्षेत्रों का हिस्सा नहीं है जिनकी निगरानी यह सूचकांक करता है।

39. (c)

- मंदी (Deflation) का अर्थ है वस्तुओं और सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में स्थायी गिरावट। यह मुद्रास्फीति का उल्टा है और उपभोक्ता खर्च और आर्थिक मंदी को जन्म दे सकता है।
- ठहराव और मुद्रास्फीति (Stagflation) एक आर्थिक स्थिति है जिसमें आर्थिक विकास ठहर जाता है, बेरोजगारी बढ़ती है और मुद्रास्फीति लगातार बनी रहती है। यह एक अनूठी चुनौती प्रस्तुत करता है क्योंकि मुद्रास्फीति के समाधान (जैसे धन आपूर्ति में कमी) बेरोजगारी को बढ़ा सकते हैं।
- मुद्रास्फीति में गिरावट (Disinflation) का तात्पर्य मुद्रास्फीति दर में कमी से है, यानी कीमतें अभी भी बढ़ रही हैं, लेकिन पहले की तुलना में धीमी गति से। इसे मंदी (Deflation) के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जिसमें कीमतें वास्तव में गिरती हैं।
- अत्यधिक मुद्रास्फीति (Hyperinflation) वह स्थिति है जिसमें कीमतें अत्यधिक तेज और अस्थिर गति से बढ़ती हैं, अक्सर प्रति माह 50% से अधिक। यह आमतौर पर आर्थिक संकट या राजनीतिक अस्थिरता के समय होती है।

40. (c)

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार (श्वेतमं त्मेमतअमे) भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा विदेशी मुद्राओं में रखी गई संपत्तियां हैं, जो बाहरी झटकों के समय अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करती हैं। यह भंडार निम्नलिखित घटकों से मिलकर बना होता है:

1. **विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां (Foreign Currency Assets- FCA):**

- भारत के विदेशी मुद्रा भंडार का सबसे बड़ा हिस्सा।
- FCA में विदेशी मुद्राएं शामिल होती हैं, जो मुख्यतः अमेरिकी डॉलर में होती हैं, लेकिन इसमें यूरो, येन और पाउंड जैसी अन्य प्रमुख वैश्विक मुद्राएं भी शामिल हैं।

2. **स्वर्ण भंडार (Gold Reserves):**

- RBI द्वारा विदेशी मुद्रा भंडार के हिस्से के रूप में रखा गया सोना।

- यह मुद्रा उतार-चढ़ाव के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करता है और इसका मूल्यांकन अमेरिकी डॉलर में किया जाता है।

### 3. विशेष आहरण अधिकार (Special Drawing Rights-SDR):

- SDR एक अंतर्राष्ट्रीय भंडार संपत्ति है जिसे अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) द्वारा बनाया गया है।
- यह IMF सदस्य देशों के पास रखी मुद्रा पर दावा प्रस्तुत करता है और भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में योगदान करता है।

### 4. आरक्षित ट्रैंच स्थिति (Reserve Tranche Position- RTP):

- यह IMF में भारत के कोटे का वह हिस्सा है जिसे बिना किसी अतिरिक्त शर्तों के प्राप्त किया जा सकता है।
- RTP को भारत के विदेशी मुद्रा भंडार की गणना में शामिल किया जाता है।

### सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड्स (SGBs):

- यह विदेशी मुद्रा भंडार का हिस्सा नहीं है।
- SGBs भारत सरकार द्वारा जारी एक वित्तीय साधन है, जो भौतिक सोने में निवेश का विकल्प प्रदान करता है।
- सोने द्वारा समर्थित होने के बावजूद, SGBs घरेलू वित्तीय संपत्ति हैं और इन्हें विदेशी मुद्रा भंडार में नहीं गिना जाता है।

### 41. (d)

- मार्जिनल स्टैंडिंग फैसिलिटी (MSF) एक उपकरण है जिसे भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने 2011 में अपनी मौद्रिक नीति ढांचे के हिस्से के रूप में पेश किया था। यह बैंकों को तरलता की कमी के समय स्वीकृत सरकारी प्रतिभूतियों के बदले RBI से ओवरनाइट धन उधार लेने की अनुमति देता है।
- MSF दर को रेपो दर से अधिक रखा जाता है ताकि बैंकों को इस पर अत्यधिक निर्भर होने से रोका जा सके।
- यह रेपो सुविधा से अधिक उधार लेने पर दंडात्मक दर के रूप में कार्य करता है और ल्टप की तरलता को सख्ती से प्रबंधित करने की मंशा को दर्शाता है।
- MSF के तहत, बैंक अपनी स्वीकृत सरकारी प्रतिभूतियों को गिरवी रखकर ओवरनाइट धन उधार ले सकते हैं।
- यह बैंकों को एक अतिरिक्त वित्तीय विकल्प प्रदान करता है जब वे तरलता समायोजन सुविधा (Liquidity Adjustment Facility & LAF) जैसे अन्य उधार तंत्रों को समाप्त कर देते हैं।

- MSF बैंकिंग प्रणाली में अल्पकालिक तरलता असंतुलन को संबोधित करने के लिए डिजाइन किया गया है, यह सुनिश्चित करता है कि बैंकों को आवश्यकता पड़ने पर आपातकालीन धन उपलब्ध हो।
- यह धन बाजार को स्थिर करने और ओवरनाइट दरों में अत्यधिक अस्थिरता को रोकने में मदद करता है।

### 42. (a)

- हाल के केंद्रीय बजटों में भारत ने लंबे समय तक आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए पूंजीगत व्यय (Capex) पर जोर दिया है। उदाहरण के लिए, केंद्रीय बजट 2023-24 में पूंजीगत व्यय के लिए 10 लाख करोड़ का आवंटन किया गया, जो एक महत्वपूर्ण वृद्धि है। यह बदलाव बुनियादी ढांचे के विकास, रोजगार सृजन और आर्थिक मजबूती के उद्देश्य से किया गया है।
- पूंजीगत व्यय, जैसे कि बुनियादी ढांचे पर खर्च, उत्पादक परिसंपत्तियां बनाता है जो समय के साथ आर्थिक उत्पादन को बढ़ाता है। इसका वृद्धि गुणांक (Growth Multiplier) अधिक होता है क्योंकि यह मांग, रोजगार, और निजी निवेश को बढ़ावा देता है, जिससे दीर्घकालिक लाभ मिलते हैं। दूसरी ओर, राजस्व व्यय मुख्यतः वेतन और सब्सिडी जैसी परिचालन और तात्कालिक आवश्यकताओं पर केंद्रित होता है, जो परिसंपत्तियों के सृजन या सतत विकास में सीधे योगदान नहीं करता।
- पूंजीगत व्यय की ओर यह बदलाव इसके उच्च वृद्धि गुणांक से प्रेरित है। सरकार का उद्देश्य बंचम पर ध्यान केंद्रित करके टिकाऊ बुनियादी ढांचे और निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देकर अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करना है।
- इस प्रकार, R, A का सही स्पष्टीकरण है, जिससे विकल्प (a) सही उत्तर बनता है।

### 43. (a)

- ट्रेजरी बिल (T-Bills) अल्पकालिक ऋण साधन हैं जिन्हें भारत सरकार द्वारा अल्पकालिक वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जारी किया जाता है।
- यह धन बाजार का हिस्सा है क्योंकि इनकी परिपक्वता अवधि एक वर्ष से कम होती है (आमतौर पर 91 दिन, 182 दिन, या 364 दिन)।
- T&Bills को सबसे सुरक्षित साधनों में से एक माना जाता है क्योंकि यह सरकार द्वारा समर्थित होते हैं।
- वाणिज्यिक पत्र (Commercial Papers- CPs) असुरक्षित अल्पकालिक साधन हैं जिन्हें कंपनियां कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं के लिए धन जुटाने के लिए जारी करती हैं।

- यह धन बाजार का हिस्सा हैं लेकिन सुरक्षित नहीं होते। संपाश्विक (Collateral) की अनुपस्थिति CPs को ट्रेजरी बिल जैसे सुरक्षित साधनों की तुलना में अधिक जोखिमपूर्ण बनाती है।
- डिबेंचर्स कंपनियों द्वारा दीर्घकालिक धन जुटाने के लिए जारी ऋण साधन हैं।
- यह धन बाजार में कारोबार नहीं किए जाते क्योंकि धन बाजार केवल अल्पकालिक साधनों (एक वर्ष से कम परिपक्वता) से संबंधित होता है।
- डिबेंचर्स आमतौर पर पूंजी बाजार (Capital Market) का हिस्सा होते हैं, जो मध्यम से दीर्घकालिक वित्तीय साधनों को संभालता है।

- एकीकृत GST (IGST) केंद्र सरकार द्वारा एकत्र किया जाता है, न कि राज्य द्वारा, जब वस्तुओं या सेवाओं की आपूर्ति राज्य की सीमाओं के पार होती है (अंतरराज्यीय लेनदेन)।
- एकत्रित IGST को केंद्र सरकार और उस राज्य के बीच बांटा जाता है जहां वस्तुओं या सेवाओं की खपत होती है।
- वर्तमान में, पेट्रोलियम उत्पाद (जैसे कच्चा तेल, पेट्रोल, डीजल, विमानन टरबाइन ईंधन, और प्राकृतिक गैस) GST के दायरे से बाहर हैं। इन वस्तुओं पर मौजूदा उत्पाद शुल्क और VAT ढांचे के तहत कर लगाया जाता है, जो जैज प्रणाली के बाहर है।

**44. (c)**

**ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (GII)**

**प्रकाशक:** वर्ल्ड इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी ऑर्गनाइजेशन (WIPO)

यह सूचकांक देशों को उनकी नवाचार प्रदर्शन और क्षमताओं के आधार पर रैंक करता है। इसे WIPO, कॉर्नेल यूनिवर्सिटी और INSEAD द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित किया जाता है।

**ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स**

**प्रकाशक:** वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (WEF)

- यह सूचकांक चार आयामों में लैंगिक असमानताओं को मापता है: **आर्थिक भागीदारी, शैक्षिक उपलब्धि, स्वास्थ्य और जीवन रक्षा, और राजनीतिक सशक्तिकरण।**

**लॉजिस्टिक्स परफॉर्मेंस इंडेक्स (LPI)**

**प्रकाशक:** वर्ल्ड बैंक

- यह सूचकांक देशों का मूल्यांकन अंतरराष्ट्रीय व्यापार लॉजिस्टिक्स की दक्षता के आधार पर करता है, जिसमें कस्टम, बुनियादी ढांचा, और ट्रेडिंग जैसी चीजें शामिल हैं।

**ग्लोबल लिवेबिलिटी इंडेक्स**

**प्रकाशक:** इकोनॉमिस्ट इंटेल्जेंस यूनिट (EIU)

- यह सूचकांक दुनिया भर के शहरों को उनकी रहने की स्थिति के आधार पर आकलन करता है, जिसमें स्थिरता, स्वास्थ्य सेवा, संस्कृति और पर्यावरण, शिक्षा, और बुनियादी ढांचा शामिल हैं।

**45. (c)**

- वस्तु एवं सेवा कर (GST) एक गंतव्य आधारित कर है, जिसका अर्थ है कि यह कर उस राज्य में एकत्र किया जाता है जहां वस्तुओं या सेवाओं की खपत होती है, न कि जहां उनका उत्पादन होता है।
- यह सुनिश्चित करता है कि करदाता के लाभ उपभोग करने वाले राज्य को मिलें।

**46. (a)**

- राज्य के नीति निदेशक तत्व (DPSPs), भारतीय संविधान के भाग IV में उल्लेखित हैं। ये गैर-न्यायसंगत (non-justiciable) हैं, जिसका अर्थ है कि इन्हें अदालतों द्वारा लागू नहीं किया जा सकता।
- ये राज्य के लिए एक कल्याणकारी समाज स्थापित करने और सामाजिक-आर्थिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए दिशा-निर्देश हैं।
- कच्चे को आयरिश संविधान से प्रेरित किया गया था, जो स्वयं सामाजिक-आर्थिक न्याय के विचारों के लिए स्पेनिश संविधान से प्रभावित था।
- भारतीय संविधान में समवर्ती सूची (Concurrent List) की अवधारणा, हालांकि, ऑस्ट्रेलियाई संविधान से ली गई थी।
- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने मिनर्वा मिल्स बनाम भारत संघ (1980) के ऐतिहासिक मामले में स्पष्ट किया कि मौलिक अधिकार और DPSPs परस्पर पूरक हैं और इन्हें संतुलित किया जाना चाहिए।
- हालांकि, सीधे टकराव की स्थिति में, मौलिक अधिकार DPSPs पर वरीयता रखते हैं।

**47. (c)**

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 74(1) में यह प्रावधान है कि राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली मंत्रिपरिषद की सलाह के अनुसार कार्य करेंगे।
- 42वें संविधान संशोधन अधिनियम (1976) ने इसे स्पष्ट रूप से बाध्यकारी बनाया और "राष्ट्रपति इस प्रकार की सलाह के अनुसार कार्य करेंगे" वाक्यांश को जोड़ा।
- 39वें संविधान संशोधन अधिनियम (1975) का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, और लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव को न्यायिक समीक्षा से बचाना था।
- इसका मंत्रिपरिषद की सलाह को राष्ट्रपति के लिए बाध्यकारी बनाने से कोई संबंध नहीं था, जिसे 42वें



संशोधन अधिनियम (1976) ने स्पष्ट और लागू किया।

**48. (d)**

उल्लिखित संशोधन भारतीय संविधान में महत्वपूर्ण परिवर्तनों से संबंधित हैं। उनका काल क्रम निम्नलिखित है:

**1. नौवीं अनुसूची का समावेश:**

**संशोधन:** पहला संशोधन अधिनियम, 1951

- नौवीं अनुसूची को मौलिक अधिकारों के तहत न्यायिक पुनरावलोकन से कुछ कानूनों, विशेष रूप से भूमि सुधार और सामाजिक-आर्थिक विधानों की रक्षा के लिए प्रस्तुत किया गया था।

**2. निजी पुरस्कारों का उन्मूलन:**

- संशोधन: छब्बीसवां संशोधन अधिनियम, 1971
- इस संशोधन ने पूर्व राजकीय राज्यों के शासकों को दिए गए निजी पुरस्कारों और विशेषाधिकारों को समाप्त किया, उनकी विशेष स्थिति को औपचारिक रूप से समाप्त किया।

**3. मौलिक अधिकार से संपत्ति का अधिकार हटाना:**

- संशोधन: चौवालीसवां संशोधन अधिनियम, 1978
- संपत्ति का अधिकार को अनुच्छेद 19 के तहत मौलिक अधिकारों की सूची से हटा दिया गया और अनुच्छेद 300I के तहत संवैधानिक अधिकार के रूप में पुनर्वर्गीकृत किया गया।

**4. मतदान की आयु को 21 से 18 वर्ष तक कम करना:**

- संशोधन: इकसठवां संशोधन अधिनियम, 1988
- इस संशोधन ने लोकसभा और राज्य विधानसभा के चुनावों के लिए न्यूनतम मतदान आयु को 21 से घटाकर 18 वर्ष कर दिया, जिससे चुनावी आधार व्यापक हुआ।

**49. (b)**

**1. लोक लेखा समिति (PAC)**

- कार्य: लोक लेखा समिति नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (बल) की सरकारी खातों पर रिपोर्ट की जांच करती है। यह सुनिश्चित करती है कि सार्वजनिक धन का कुशलतापूर्वक और संसद द्वारा अधिकृत के अनुसार उपयोग किया जाए।
- यह खर्च के बाद की ऑडिट पर केंद्रित होती है, जो बजट के अनुपालन को सुनिश्चित करती है।

**2. अनुमान समिति**

- कार्य: अनुमान समिति संसद को प्रस्तुत बजट अनुमानों की जांच करती है।

- यह व्यय में मितव्ययिता करने और संसाधन आवंटन की दक्षता में सुधार के लिए सुझाव देती है।

**3. सार्वजनिक उपक्रम समिति (COPU)**

- कार्य: COPU सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) के कार्य और प्रदर्शन का मूल्यांकन करती है।
- यह PSUs के खातों और रिपोर्टों की समीक्षा करती है और उनके बेहतर प्रबंधन और प्रदर्शन के लिए उपाय सुझाती है।

**4. विभागीय स्थायी समिति**

- कार्य: विभागीय स्थायी समितियां विशिष्ट मंत्रालयों और विभागों की नीतियों, कार्यक्रमों और कार्यप्रणाली का विश्लेषण और रिपोर्ट करती हैं।
- ये नीतिगत निगरानी प्रदान करने और जवाबदेही सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

**50. (a)**

**भारतीय संविधान का भाग V:**

भारतीय संविधान का भाग V "संघ" शीर्षक से है और इसमें संघ सरकार की संरचना, शक्तियाँ और कार्यकुशलता से संबंधित प्रावधान हैं।

भाग V का अध्याय IV विशेष रूप से संघीय न्यायपालिका से संबंधित है, जिसमें भारत के सर्वोच्च न्यायालय के प्रावधान, उसकी संरचना, अधिकार क्षेत्र और शक्तियाँ शामिल हैं।

**संघीय न्यायपालिका से संबंधित मुख्य अनुच्छेद:**

- अनुच्छेद 124: सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना और संरचना।
- अनुच्छेद 125: सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के वेतन, भत्ते और विशेषाधिकार।
- अनुच्छेद 126: भारत के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति।
- अनुच्छेद 131: सर्वोच्च न्यायालय का मूल अधिकार क्षेत्र।
- अनुच्छेद 136: अपील के लिए विशेष अवकाश।
- अनुच्छेद 141: सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों का भारत के सभी न्यायालयों पर बाध्यकारी प्रभाव।

**51. (c)**

भारतीय संविधान के कुछ प्रावधानों को संसद के साधारण बहुमत से संशोधित किया जा सकता है, जिसका अर्थ है कि मतदान में उपस्थित और वोटिंग करने वाले सदस्यों का बहुमत, बिना विशेष बहुमत या राज्य की स्वीकृति की आवश्यकता के।

**1. नए राज्यों का निर्माण:**

- यह साधारण बहुमत से संशोधित किया जा सकता है।
- नए राज्यों का निर्माण, राज्य की सीमाओं में बदलाव, या राज्यों के नाम बदलने का प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 3 द्वारा शासित है।
- संसद इस प्रकार के परिवर्तन साधारण बहुमत से कर सकती है, बशर्ते प्रभावित राज्य की विधानमंडल से परामर्श किया जाए।

**2. राज्यों में विधान परिषदों का उन्मूलन या निर्माण:**

- यह साधारण बहुमत से संशोधित किया जा सकता है।
- अनुच्छेद 169 के अनुसार, संसद साधारण बहुमत से राज्यों में विधान परिषदों को समाप्त या स्थापित कर सकती है, बशर्ते संबंधित राज्य विधानमंडल द्वारा विशेष बहुमत से प्रस्ताव पारित किया जाए।

**3. राज्यों का राज्यसभा में प्रतिनिधित्व:**

- यह साधारण बहुमत से संशोधित नहीं किया जा सकता।
- राज्यों का राज्यसभा में प्रतिनिधित्व अनुच्छेद 80 और 81 द्वारा शासित है। इस प्रावधान में परिवर्तन संघीय संरचना को प्रभावित करता है और इसके लिए संसद का विशेष बहुमत और कम से कम आधे राज्य विधानमंडलों द्वारा स्वीकृति की आवश्यकता होती है, जैसा कि अनुच्छेद 368 में उल्लेखित है।

**4. निर्वाचन क्षेत्रों की सीमांकन:**

- यह साधारण बहुमत से संशोधित किया जा सकता है।
- निर्वाचन क्षेत्रों का सीमांकन सीमांकन आयोग द्वारा सीमांकन अधिनियम के प्रावधानों के तहत किया जाता है, जिसे संसद द्वारा साधारण बहुमत से पारित किया जाता है।

**52. (b)**

**अनुच्छेद 249:**

- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 249 संसद को राज्य सूची में उल्लिखित किसी भी विषय पर कानून बनाने का अधिकार प्रदान करता है, यदि राज्यसभा एक प्रस्ताव पारित करती है, जिसे उपस्थित और मतदान करने वाले इसके कम से कम दो-तिहाई सदस्य समर्थन करते हैं, और यह घोषित करती है कि राष्ट्रीय हित में इस विषय पर कानून बनाना आवश्यक है।
- ऐसा प्रस्ताव एक वर्ष की अवधि के लिए मान्य रहता है और एक समान प्रस्ताव के माध्यम से इसे एक वर्ष और बढ़ाया जा सकता है।

**अन्य विकल्प:**

**अनुच्छेद 248:**

- अनुच्छेद 248 में कानून बनाने के लिए अवशिष्ट शक्तियों (residuary powers) से संबंधित प्रावधान है, जिसमें संसद को उन विषयों पर कानून बनाने का विशेष अधिकार है जो संघ सूची, राज्य सूची या समवर्ती सूची में उल्लिखित नहीं होते।

**अनुच्छेद 250:**

- अनुच्छेद 250 संसद को आपातकालीन उद्घोषणा के दौरान राज्य सूची के विषयों पर कानून बनाने का अधिकार प्रदान करता है।
- इस प्रावधान के तहत बनाए गए कानून छह महीने बाद समाप्त हो जाते हैं जब आपातकाल हटाया जाता है।

**अनुच्छेद 256:**

- अनुच्छेद 256 राज्यों को संसद द्वारा बनाए गए कानूनों के पालन को सुनिश्चित करने का कर्तव्य देता है और संघ सरकार को राज्यों को निर्देश देने का कार्यकारी अधिकार प्रदान करता है।

**53. (d)**

- भारत के महाधिवक्ता (AGI) को संविधान के अनुच्छेद 76 के तहत नियुक्त किया जाता है और यह देश के सर्वोच्च कानून अधिकारी के रूप में कार्य करते हैं।
- महाधिवक्ता भारत सरकार के प्रमुख कानूनी सलाहकार होते हैं और सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में उन मामलों में संघ का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहां सरकार पक्ष होती है।
- महाधिवक्ता को सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीश के रूप में नियुक्त होने के योग्य होना चाहिए, अर्थात्, उन्हें उच्च न्यायालय के न्यायधीश के रूप में पांच वर्षों का अनुभव, उच्च न्यायालय के वकील के रूप में दस वर्षों का अनुभव, या एक प्रतिष्ठित न्यायशास्त्री होना चाहिए।
- अनुच्छेद 88 के तहत, महाधिवक्ता को लोकसभा और राज्यसभा दोनों की कार्यवाही में भाग लेने का अधिकार होता है, साथ ही उनके संयुक्त सत्रों या समितियों में भी भाग ले सकते हैं।
- हालांकि, महाधिवक्ता को वोटिंग का अधिकार नहीं होता, क्योंकि वे संसद के निर्वाचित सदस्य नहीं होते।
- यह विशेष प्रावधान सुनिश्चित करता है कि महाधिवक्ता कानूनी राय प्रदान कर सकें और संसद में राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर बहस या चर्चाओं में मदद कर सकें, जिनमें कानूनी जटिलताएँ शामिल होती हैं।

- महाधिवक्ता संघ कैबिनेट या मंत्रिपरिषद का सदस्य नहीं होते।
- महाधिवक्ता सरकार के एक अधिकारी होते हैं और एक स्वतंत्र कानूनी सलाहकार के रूप में कार्य करते हैं, न कि एक नीति निर्माता या मंत्री के रूप में।
- हालांकि महाधिवक्ता कार्यपालिका के साथ मिलकर काम करते हैं, लेकिन उनके पास कैबिनेट मामलों में कोई निर्णय लेने की शक्ति या जिम्मेदारी नहीं होती है।

**महाधिवक्ता की भूमिका और जिम्मेदारियाँ:**

- **कानूनी सलाहकार:**
- महाधिवक्ता संघ सरकार को कानूनी मामलों पर सलाह देते हैं और राष्ट्रपति द्वारा संदर्भित संविधानिक या कानूनी सवालों पर राय प्रदान करते हैं।

**न्यायालयों में प्रतिनिधित्व:**

- महाधिवक्ता प्रमुख मामलों में सरकार का सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में प्रतिनिधित्व करते हैं।

**संसदीय भूमिका:**

- महाधिवक्ता संसद की कार्यवाही में कानूनी स्पष्टता प्रदान करने के लिए भाग लेते हैं, लेकिन वोट नहीं करते।

54. (a)

**भारत में पहला राष्ट्रीय आपातकाल:**

- भारत ने 26 अक्टूबर, 1962 को पहला राष्ट्रीय आपातकाल घोषित किया था, जो चीन द्वारा भारत-चीन युद्ध के दौरान आक्रमण के कारण था।
- यह आपातकाल संविधान के अनुच्छेद 352 के तहत घोषित किया गया था, जो राष्ट्रपति को बाहरी आक्रमण या युद्ध की स्थिति में राष्ट्रीय आपातकाल घोषित करने का अधिकार देता है।

**लोकसभा की भूमिका:**

- तीसरी लोकसभा (1962-1967) इस अवधि के दौरान सत्र में थी और आपातकाल की घोषणा को मंजूरी दी।
- राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान, संघ की विधायी और कार्यकारी शक्तियाँ बह जाती हैं, और कुछ मौलिक अधिकारों को सीमित किया जा सकता है।

**पाँचवीं लोकसभा (1971-1977):**

- दूसरा राष्ट्रीय आपातकाल (1971) इस अवधि में भारत-पाकिस्तान युद्ध के कारण घोषित किया गया था।
- तीसरा राष्ट्रीय आपातकाल (1975-1977), जो इंदिरा गांधी के समय में घोषित किया गया था, "आंतरिक अशांति" के आधार पर था।

55. (b)

- राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC) को मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993 के तहत 1993 में स्थापित किया गया था।
- यह एक वैधानिक निकाय है जिसका उद्देश्य भारत में मानवाधिकारों की सुरक्षा और प्रचार करना है।
- न्यायमूर्ति रंजननाथ मिश्रा, जो भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश थे, को 1993 में छद्म के पहले अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था।
- न्यायमूर्ति ड.छ. वेंकटचलैया, जो भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश थे, छद्म के पहले अध्यक्ष के रूप में सेवा नहीं दे पाए। पहले अध्यक्ष न्यायमूर्ति रंजननाथ मिश्रा थे।

56. (d)

**(a) 52वां संशोधन अधिनियम - एंटी-डिफेक्शन कानून**

- 52वां संशोधन अधिनियम (1985) ने संविधान की दसवीं अनुसूची को जोड़ा, जिसमें विधायिका के सदस्यों द्वारा दल-बदल को रोकने के लिए प्रावधान पेश किए गए।
- इसमें उन विधायकों के अयोग्यता के कारणों को निर्धारित किया गया जो चुनावों के बाद पार्टियाँ बदलते हैं।

**(b) 56वां संशोधन अधिनियम - गोवा को राज्य का दर्जा दिया**

- 56वां संशोधन अधिनियम (1987) ने गोवा को राज्य का दर्जा दिया, जिससे यह भारत का 25वां राज्य बना।
- गोवा पहले एक केंद्रीय शासित क्षेत्र था, और इस संशोधन ने इसके दर्जे को फिर से व्यवस्थित किया, जबकि दमण और दीव को एक केंद्रीय शासित क्षेत्र के रूप में रखा।

**(c) 58वां संशोधन अधिनियम - संविधान के प्रामाणिक हिंदी पाठ की व्यवस्था की**

- 58वां संशोधन अधिनियम (1987) ने संविधान के प्रामाणिक हिंदी पाठ की प्रकाशित करने की व्यवस्था की, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि हिंदी संस्करण की कानूनी वैधता इंग्लिश संस्करण के समान हो।

**(d) 61वां संशोधन अधिनियम - मतदान आयु 18 वर्ष की की**

- 61वां संशोधन अधिनियम (1989) ने अनुच्छेद 326 में संशोधन किया, जिससे लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनावों के लिए न्यूनतम मतदान आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दी गई।

इस संशोधन का उद्देश्य लोकतांत्रिक प्रक्रिया में युवा भागीदारी बढ़ाना था।

57. (a)

भारतीय संविधान की संघीय विशेषताएँ संघ और राज्यों के बीच शक्तियों और जिम्मेदारियों के वितरण को दर्शाती हैं। हालाँकि, यह महत्वपूर्ण है कि भारत की एक अद्वितीय क्वासी-फेडरल संरचना है, जिसमें संघवाद और एकात्मकता दोनों के तत्व शामिल हैं।

1. एक लिखित संविधान:

- लिखित संविधान संघीय प्रणाली की एक विशेषता है क्योंकि यह संघ और राज्य सरकारों की संरचना, शक्तियों और कार्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।
- भारतीय संविधान एक लंबा, विस्तृत और लिखित दस्तावेज है, जो भूमि का सर्वोच्च कानून है, और संघीय ढांचे में स्पष्टता और कठोरता सुनिश्चित करता है।

2. संघ और राज्यों का द्वैतकारी राजनीतिक ढांचा:

- द्वैतकारी राजनीतिक ढांचा का अर्थ है दो स्तरों की सरकार का अस्तित्व: संघ सरकार और राज्य सरकारें, प्रत्येक अपनी-अपनी अधिकार क्षेत्र में कार्य करती हैं।
- शासन का यह विभाजन संघवाद की प्रमुख विशेषता है।

3. एकल नागरिकता:

- यह संघीय विशेषता नहीं है: भारतीय संविधान द्वारा प्रदान की गई एकल नागरिकता एकात्मक विशेषता है।
- संघीय प्रणालियों जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका में, व्यक्तियों के पास दोहरी नागरिकता (राष्ट्रीय और राज्य) होती है, जबकि भारत में भारतीय नागरिक केवल संघ के नागरिक होते हैं, चाहे उनका राज्य जहाँ भी हो।

4. केंद्र और राज्यों के बीच विधायी शक्तियों का वितरण:

- संविधान सातवें अनुसूची के माध्यम से केंद्र और राज्यों के बीच विधायी शक्तियों का स्पष्ट रूप से वितरण करता है, जिसमें शामिल हैं:
- संघ सूची (संघ सरकार के लिए विषय)।
- राज्य सूची (राज्य सरकारों के लिए विषय)।
- समवर्ती सूची (विषय जिन पर दोनों सरकारें विधायन कर सकती हैं)।

58. (b)

1. गिलोटिन

- लोकसभा प्रक्रिया में "गिलोटिन" शब्द एक विधायी कामकाजी विधि को संदर्भित करता है,

जिसका उपयोग विशेष रूप से बजट के पारित होने के दौरान किया जाता है।

- यह शेष बची हुई मांगों पर आगे बहस या चर्चा को समाप्त करके उन्हें बिना विस्तृत जांच के वोटिंग के लिए प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है।
- यह प्रक्रिया आमतौर पर बजट सत्र के अंत में समय की कमी के कारण उपयोग की जाती है, जब कई मांगें अनमोल रहती हैं।

2. क्लोजर

- क्लोजर लोकसभा की एक विशिष्ट प्रक्रिया है जिसका उपयोग किसी प्रस्ताव या विधेयक पर चल रही चर्चाओं को समाप्त करने के लिए किया जाता है।
- एक सदस्य जब क्लोजर का अनुरोध करता है, और यदि इसे अध्यक्ष द्वारा मंजूरी मिलती है, तो सदन उस विषय पर वोटिंग की प्रक्रिया में प्रवेश करता है।
- यह प्रक्रिया सदन में अन्य विषयों या प्रस्तावों पर चर्चा को पूरी तरह से रोक नहीं देती है, क्योंकि अन्य चर्चाएं बाद में जारी रखी जा सकती हैं।
- क्लोजर का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बहसें अनावश्यक रूप से लंबी न हों।

3. जीरो ऑवर

- जीरो घंटा भारतीय संसद में एक अवधि होती है जो प्रश्नकाल के तुरंत बाद शुरू होती है और इसमें सदस्य बिना किसी पूर्व सूचना के सार्वजनिक महत्व के तत्काल मामलों को उठाते हैं।
- यह एक अनौपचारिक प्रक्रिया है जो संविधान या प्रक्रिया के नियमों में उल्लिखित नहीं है, लेकिन यह संसद के कार्यकलापों का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है।
- जीरो घंटा सदस्य को दबावपूर्ण मुद्दों को संबोधित करने या सरकार से अप्रत्याशित घटनाओं या नीतिगत चिंताओं पर जवाबदेही की मांग करने की अनुमति देती है।

4. विलंबन प्रस्ताव

- विलंबन प्रस्ताव का उद्देश्य स्पीकर की निंदा करना नहीं होता है, बल्कि यह एक उपकरण है जो तत्काल सार्वजनिक महत्व के मामले पर ध्यान आकर्षित करने के लिए होता है।
- यह सदन के सामान्य कार्य को निलंबित करने के लिए होता है ताकि एक विशिष्ट मुद्दे पर चर्चा की जा सके, जो तात्कालिक ध्यान देने

की मांग करता है, और यह आमतौर पर सरकार की विफलता या गलत प्रबंधन से संबंधित होता है।

- यह प्रस्ताव स्पीकर की मंजूरी से विचार किया जाता है और यह सरकार के खिलाफ एक निंदा प्रस्ताव माना जाता है, न कि स्पीकर के खिलाफ।
- उदाहरण के लिए, एक विलंबन प्रस्ताव का उपयोग एक प्रमुख घटना, जैसे प्राकृतिक आपदा या गंभीर नीति विफलता, पर चर्चा करने के लिए किया जा सकता है।

59. (c)

**अनुच्छेद 356 के तहत संवैधानिक आपातकाल:**

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 356 के तहत राष्ट्रपति को राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने का अधिकार प्राप्त है, जब संविधानिक तंत्र का विफल होना पाया जाता है। इसे राज्य आपातकाल या संवैधानिक आपातकाल भी कहा जाता है। यह निम्नलिखित परिस्थितियों में लागू होता है:
  - जब किसी राज्य के राज्यपाल राष्ट्रपति को रिपोर्ट प्रस्तुत करता है कि राज्य सरकार संविधान के प्रावधानों के अनुसार काम नहीं कर सकती।
  - यदि राष्ट्रपति, अन्य सूचना के आधार पर, यह मानते हैं कि राज्य में संविधानिक शासन विफल हो गया है।
- हालांकि, राज्यपाल की सिफारिश आमतौर पर राष्ट्रपति शासन की घोषणा के लिए आधार होती है, यह अनिवार्य नहीं है।
- राष्ट्रपति अपनी ओर से या अन्य विश्वसनीय जानकारी के आधार पर राज्य में संविधानिक तंत्र के विफल होने का संकेत मिलने पर यह कदम उठा सकते हैं।
- उदाहरण के लिए, संवैधानिक आपातकाल को राजनीतिक संकट या कानून और व्यवस्था के विफलता जैसे मामलों में भी बिना राज्यपाल की सिफारिश के घोषित किया जा सकता है।
- राष्ट्रपति शासन की प्रारंभिक घोषणा छह महीने के लिए वैध होती है और संसद की मंजूरी से इसे हर छह महीने में बढ़ाया जा सकता है।
- एक वर्ष से अधिक समय के लिए विस्तार करने के लिए निम्नलिखित अतिरिक्त शर्तों को पूरा करना आवश्यक है:
  - राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा (अनुच्छेद 352) लागू हो।
  - चुनाव आयोग को यह प्रमाणित करना होगा कि राज्य में असाधारण परिस्थितियों के कारण चुनाव कराना संभव नहीं है।

- अनुच्छेद 356 के तहत राष्ट्रपति राज्य सरकार की कार्यकारी शक्तियाँ ग्रहण करते हैं, जिससे राज्य को संघ के सीधे नियंत्रण में रखा जाता है।

**राष्ट्रपति द्वारा किए जाने वाले विशिष्ट कदम:**

- राज्य विधानसभा को भंग या निलंबित करना।
- संसद को राज्य सूची के मामलों पर विधायन करने की अनुमति देना।
- राज्य का सीधे प्रशासन करना, जिसमें राज्यपाल राष्ट्रपति के एजेंट के रूप में कार्य करता है।
- हालांकि, राष्ट्रपति न्यायपालिका में हस्तक्षेप नहीं कर सकते या संघीय ढांचे को संविधानिक सीमा से अधिक बदल नहीं सकते।

राष्ट्रपति शासन की घोषणा पर न्यायिक समीक्षा लागू होती है।

- एस.आर. बोम्मई बनाम भारत संघ (1994) के ऐतिहासिक मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने निम्नलिखित सिद्धांत निर्धारित किए:
  - अगर यह पाया जाता है कि राष्ट्रपति शासन की घोषणा दुराग्रहित इरादों या अप्रासंगिक कारणों पर आधारित है, तो उसकी वैधता को चुनौती दी जा सकती है।
  - अगर न्यायालय यह पाता है कि राष्ट्रपति शासन अनुचित तरीके से लगाया गया था, तो वह राज्य सरकार को फिर से बहाल कर सकता है।
  - न्यायिक समीक्षा यह सुनिश्चित करती है कि संविधान का संघीय ढांचा संरक्षित रहे।

60. (b)

**पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986**, भोपाल गैस त्रासदी (1984) के बाद लागू किया गया था, और यह पर्यावरण की रक्षा और सुधार के लिए एक छत्र कानून के रूप में कार्य करता है। यह केंद्रीय सरकार को पर्यावरणीय प्रदूषण को नियंत्रित करने, खतरनाक पदार्थों को विनियमित करने और पारिस्थितिकी प्रणालियों की रक्षा करने के लिए उपाय करने का अधिकार देता है।

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम का मुख्य उद्देश्य प्रदूषण को नियंत्रित करके और पर्यावरणीय खतरों को कम करके पर्यावरण की रक्षा और सुधार करना है।

**अनुच्छेद 3** के तहत केंद्रीय सरकार को यह अधिकार प्राप्त है:

- पर्यावरणीय प्रदूषण को रोकने, नियंत्रित करने और घटाने के उपाय करना।
- प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए नीतियाँ और दिशा-निर्देश तैयार करना, जिनमें वायु, जल और मृदा शामिल हैं।
- यह अधिनियम अनुच्छेद 6 के तहत वायु, जल और अन्य पर्यावरणीय तत्वों की गुणवत्ता के लिए मानकों की स्थापना के लिए भी प्रावधान करता है।

- अधिनियम अपनी धारा के उल्लंघन या पर्यावरणीय मानकों के उल्लंघन पर दंड भी पड़चवेमे करता है।
- अनुच्छेद 15 के तहत, यदि कोई व्यक्ति, उद्योग या संगठन पर्यावरण में खतरनाक पदार्थों का निर्वहन करता है या प्रदूषण नियंत्रण मानकों का उल्लंघन करता है, तो उसे निम्नलिखित सजा भुगतनी होती है:
- 5 साल तक की सजा और/या
- 1 लाख तक का जुर्माना, और निरंतर उल्लंघन के लिए अतिरिक्त जुर्माना।
- यह अधिनियम उद्योगों को पर्यावरणीय क्षति और प्रदूषण के लिए जिम्मेदार ठहराता है।

**यह अधिनियम प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अंतर-सरकारी समन्वय पर जोर देता है।**

**अनुच्छेद 3 (2) (ii)** केंद्रीय सरकार को यह अधिकार देता है:

- राज्य सरकारों के साथ समन्वय करने के लिए प्राधिकरण नियुक्त करना।
- क्षेत्र-विशिष्ट पर्यावरणीय चुनौतियों को संबोधित करने के लिए राज्य सरकारों को शक्तियाँ सौंपना।
- यह सुनिश्चित करता है कि भारत में पर्यावरण संरक्षण उपायों में एकरूपता हो, जबकि स्थानीय परिस्थितियों के लिए लचीलापन भी बना रहे।

राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (NGT) की स्थापना पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत नहीं की गई थी। यह 2010 में राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण अधिनियम के तहत गठित किया गया था।

जबकि 1986 का अधिनियम पर्यावरणीय विनियमन के लिए कानूनी ढांचा प्रदान करता है, यह NGT जैसे समर्पित न्यायिक तंत्र के लिए प्रावधान नहीं करता है।

**61. (c)**

- आर्कटिक महासागर, जो दुनिया का सबसे छोटा और उथला महासागर है, आर्कटिक क्षेत्र में कई नदियों से जल प्राप्त करता है। दिए गए विकल्पों में से केवल ओब नदी आर्कटिक महासागर में बहती है।
- ओब नदी रूस में साइबेरिया की एक प्रमुख नदी है। यह उत्तर की ओर बहती है और कारा सागर में गिरती है, जो आर्कटिक महासागर का हिस्सा है, जिससे यह एक प्रमुख आर्कटिक नदी प्रणाली बन जाती है।
- **अमूर नदी**, जो पूर्वी एशिया की एक प्रमुख नदी है, रूस और चीन की सीमा पर बहती है और ओखोट्स्क सागर में गिरती है, जो पैसिफिक महासागर का हिस्सा है, न कि आर्कटिक महासागर।
- **वोल्गा नदी**, जो यूरोप की सबसे लंबी नदी है, पूरी तरह से रूस में बहती है और कैस्पियन सागर में

गिरती है, जो एक बंद आंतरिक जलाशय है, जो आर्कटिक महासागर से जुड़ा नहीं है।

- **डॉन नदी** रूस के दक्षिण-पश्चिमी भाग से बहती है और आज़ोव सागर में गिरती है, जो काला सागर से जुड़ा है, न कि आर्कटिक महासागर से।

**62. (a)**

- अटाकामा रेगिस्तान, जो दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट पर, मुख्य रूप से उत्तर चिली में स्थित है, पृथ्वी के सबसे शुष्क स्थानों में से एक माना जाता है। अटाकामा रेगिस्तान की अत्यधिक शुष्कता को कई कारकों से समझाया जा सकता है, लेकिन एंडीज पर्वतों द्वारा उत्पन्न वर्षा छायाक्षेत्र प्रभाव इस शुष्कता के लिए सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- अटाकामा, एंडीज पर्वतों के पश्चिमी हिस्से में स्थित है, जो अमेजन बेसिन से आने वाली आर्द्र हवाओं को अवरुद्ध करते हैं।
- जब ये आर्द्र हवाएँ एंडीज के ऊपर उठती हैं, तो वे औरोग्राफिक वर्षा के कारण अपनी नमी खो देती हैं, जिससे पश्चिमी हिस्सा (अटाकामा) सूखा और शुष्क रह जाता है।
- यह वर्षा छायाक्षेत्र प्रभाव अटाकामा की अत्यधिक शुष्कता का मुख्य कारण है।

**63. (c)**

**1. जाग्रोस पर्वत**

- जाग्रोस पर्वत पश्चिमी ईरान और इराक के कुछ हिस्सों में फैले हुए हैं।
- यह श्रृंखला ईरानी पठार और मेसोपोटामियन मैदानों के बीच एक प्राकृतिक अवरोध के रूप में कार्य करती है।
- यह अपनी कठिन भूमि, तेल भंडार, और ऐतिहासिक व्यापार मार्गों के लिए महत्वपूर्ण है।

**2. ड्रैकेंसबर्ग पर्वत**

- ड्रैकेंसबर्ग पर्वत दक्षिण अफ्रीका और लेसोथो में स्थित हैं।
- यह श्रृंखला दक्षिणी अफ्रीका में सबसे ऊँची है, जिसमें 3,000 मीटर से अधिक की चोटियाँ हैं।
- यह एक प्रमुख जलविभाजन क्षेत्र है और जैव विविधता के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

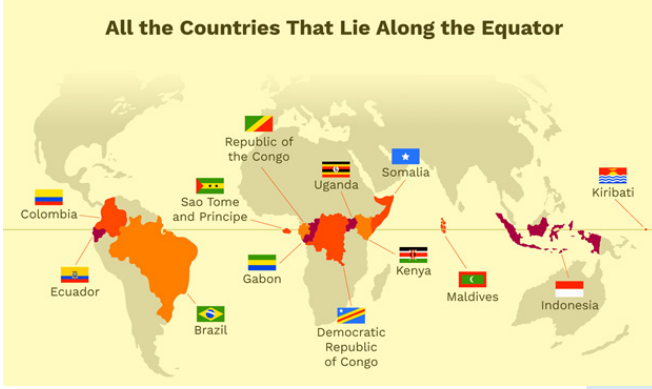
**3. कारपैथियन पर्वत**

- कारपैथियन पर्वत पूर्वी यूरोप में स्थित हैं, जो रोमानिया, स्लोवाकिया, यूक्रेन और पोलैंड जैसे देशों में फैले हुए हैं।
- ये पर्वत एक आर्च की तरह हैं और अपने जंगलों, जैव विविधता और सांस्कृतिक महत्व के लिए महत्वपूर्ण हैं।

**4. एंडीज पर्वत**

- एंडीज पर्वत दक्षिण अमेरिका में स्थित हैं, जो वेनेजुएला से चिली तक पश्चिमी तट के साथ फैले हुए हैं।
- ये दुनिया की सबसे लंबी महाद्वीपीय पर्वत श्रृंखला हैं।
- उत्तर अफ्रीका में एंडीज नामक कोई पर्वत श्रृंखला नहीं है।

**64. (b)**



**65. (b)**

जलडमरूमध्य एक संकीर्ण जलमार्ग होता है जो दो बड़े जल निकायों को जोड़ता है। आइए हम प्रत्येक जलडमरूमध्य और उसके क्षेत्र को विश्लेषित करें:

**1. सुंदा जलडमरूमध्य**

- सुंदा जलडमरूमध्य इंडोनेशिया के जावा और सुमात्रा द्वीपों के बीच स्थित है।
- यह जावा सागर (उत्तर) को भारतीय महासागर (दक्षिण) से जोड़ता है।
- यह एक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग है और प्रसिद्ध क्राकोतारु ज्वालामुखी का स्थान भी है।

**2. डोवर जलडमरूमध्य**

- डोवर जलडमरूमध्य इंग्लैंड और फ्रांस के बीच स्थित है, जो उत्तर सागर को इंग्लिश चैनल से जोड़ता है।
- डेनमार्क और स्वीडन के बीच जो जलडमरूमध्य है, वह Oresund जलडमरूमध्य है, न कि डोवर जलडमरूमध्य।

**3. डेविस जलडमरूमध्य**

- डेविस जलडमरूमध्य ग्रीनलैंड (पश्चिम में) और कनाडा के बाफिन द्वीप (पूर्व में) के बीच स्थित है।
- यह ग्रीनलैंड सागर को लैब्राडोर सागर से जोड़ता है और आर्कटिक हिमशैल और टंडी धाराओं के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग है।

**66. (a)**

**1. वियना**

- वियना, ऑस्ट्रिया की राजधानी, डैन्यूब नदी के किनारे स्थित है, जो यूरोप की प्रमुख नदियों में से एक है। डैन्यूब नदी कई केंद्रीय और पूर्वी यूरोपीय देशों से होकर बहती है।

**2. पेरिस**

- पेरिस, फ्रांस की राजधानी, सीन नदी के किनारे स्थित है।
- सीन नदी उत्तरी फ्रांस में एक प्रमुख जलमार्ग है, जो पेरिस से होकर बहती है और इंग्लिश चैनल में मिलती है।

**3. प्राग**

- प्राग, चेक गणराज्य की राजधानी, वल्तावा नदी के किनारे स्थित है।
- वल्तावा चेक गणराज्य की सबसे लंबी नदी है।

**4. रोम**

- रोम, इटली की राजधानी, टाइबर नदी के किनारे बसा हुआ है।
- टाइबर नदी ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्राचीन रोम शहर के पास बहती है।

**67. (d)**

• **ग्रीनलैंड:**

- क्षेत्रफल: 2,166,086 वर्ग किमी।
- यह दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप है (यदि ऑस्ट्रेलिया को महाद्वीप माना जाए)।

• **न्यू गिनी:**

- क्षेत्रफल: 785,753 वर्ग किमी।
- यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा द्वीप है और यह प्रशांत महासागर में स्थित है, जिसे पापुआ न्यू गिनी और इंडोनेशिया के बीच बांटा गया है।

• **बोर्नियो:**

- क्षेत्रफल: 748,168 वर्ग किमी।
- यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा द्वीप है, जिसे मलेशिया, इंडोनेशिया और ब्रुनेई साझा करते हैं।

• **मेडागास्कर:**

- क्षेत्रफल: 587,041 वर्ग किमी।
- यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा द्वीप है और अफ्रीका के दक्षिण-पूर्वी तट के पास स्थित है।

सही क्रम है ग्रीनलैंड झ न्यू गिनी झ बोर्नियो झ मेडागास्कर, जो (d) 1-2-4-3 से मेल खाता है।

**68. (b)**

**स्पेन:**

- स्पेन अपने उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी तट (बेस्के की खाड़ी और गैलिशियाई तट) के साथ अटलांटिक महासागर के साथ सीमा साझा करता है।

- यह अपने पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्रों (जैसे, कैटालोनिया और एंडलुसिया) में भूमध्य सागर के तट पर भी स्थित है।

**मोरक्को:**

- मोरक्को अपने पश्चिमी तट पर अटलांटिक महासागर और अपने उत्तरी क्षेत्र में स्ट्रेट ऑफ गिब्राल्टर के पास भूमध्य सागर के साथ सीमा साझा करता है।
- इस प्रकार, स्पेन और मोरक्को दोनों अटलांटिक महासागर और भूमध्य सागर के साथ सीमा साझा करते हैं।

**69. (a)**

- कास्पियन सागर, जो दुनिया का सबसे बड़ा बंद आंतरिक जलाशय है, पांच देशों से घिरा हुआ है।
- कास्पियन सागर के किनारे स्थित देश हैं: कजाखस्तान, तुर्कमेनिस्तान, रूस, ईरान और अजरबैजान।



**उज्बेकिस्तान:**

- उज्बेकिस्तान एक भू-निर्वात देश है और कास्पियन सागर के साथ सीमा साझा नहीं करता है।

**आर्मेनिया:**

- आर्मेनिया भी एक भू-निर्वात देश है और कास्पियन सागर के साथ सीमा साझा नहीं करता है।

**70. (b)**

**A. अटाकामा रेगिस्तान**

- अटाकामा रेगिस्तान दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट के स्थित है, मुख्य रूप से उत्तरी चिली में।
- यह पृथ्वी के सबसे शुष्क स्थानों में से एक है, क्योंकि एंडीज पर्वतों की वर्षा छायाक्षेत्र और टंडी हम्बोल्ट धारा का प्रभाव है।

**B. कालाहारी रेगिस्तान**

- कालाहारी रेगिस्तान दक्षिण अफ्रीका में स्थित है, जो बोत्सवाना, नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका के कुछ हिस्सों में फैला हुआ है।
- यह एक अर्ध-शुष्क क्षेत्र है जो विशाल रेत के विस्तारों द्वारा विशेष रूप से पहचाना जाता है।

**C. गोबी रेगिस्तान**

- गोबी रेगिस्तान केंद्रीय एशिया में स्थित है, जो चीन और मंगोलिया के कुछ हिस्सों को कवर करता है।
- यह एक ठंडा रेगिस्तान है, जिसे इसके कठोर जलवायु और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है, विशेष रूप से सिल्क रोड के मदजसंदह।

**D. ग्रेट विक्टोरिया रेगिस्तान**

- ग्रेट विक्टोरिया रेगिस्तान ऑस्ट्रेलिया में स्थित है, जो पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया और दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया के बीच फैला हुआ है।
- यह ऑस्ट्रेलिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान है, जिसमें टीलों, नमक के झीलों और शुष्क मैदानी इलाकों का परिदृश्य है।

**71. (d)**

भारत की प्रमुख एल्यूमीनियम कंपनियाँ और उनके प्राथमिक उत्पादन संयंत्रों के स्थान निम्नलिखित हैं:

**नेशनल एल्यूमीनियम कंपनी लिमिटेड (NALCO):**

**स्थान:** अंगुल, ओडिशा।

**विवरण:** NALCO अंगुल में एक महत्वपूर्ण एल्यूमीनियम स्मेल्टिंग संयंत्र संचालित करता है, जो 1987 में शुरू हुआ था।

**भारत एल्यूमीनियम कंपनी लिमिटेड (BALCO):**

**स्थान:** कोरबा, छत्तीसगढ़।

- **विवरण:** BALCO का कोरबा संयंत्र दुनिया के सबसे बड़े एल्यूमीनियम उत्पादन संयंत्रों में से एक है, और इसकी क्षमता को बढ़ाकर 1 मिलियन टन प्रति वर्ष करने की योजना है।

**हिंदाल्को इंडस्ट्रीज लिमिटेड (HINDALCO):**

**स्थान:** रेणुकूट, उत्तर प्रदेश।

- **विवरण:** 1958 में स्थापित, रेणुकूट संयंत्र एक प्रमुख एल्यूमीनियम निर्माण यूनिट है, जो झारखंड और मध्य प्रदेश से बॉक्साइट प्राप्त करता है।

**मद्रास एल्यूमीनियम कंपनी लिमिटेड (MALCO):**

**स्थान:** मेट्टूर, तमिलनाडु।

**विवरण:** MALCO का संयंत्र मेट्टूर डेम परिसर में स्थित है और इसकी स्मेल्टर क्षमता 40,000 टन प्रति वर्ष है।



72. (b)

- अराकू घाटी एक सुंदर पहाड़ी स्टेशन है जो आंध्र प्रदेश के पूर्वी घाट में स्थित है, ओडिशा सीमा के पास।
- यह विशाखापट्टनम जिले का हिस्सा है और इसकी प्राकृतिक सुंदरता, आदिवासी संस्कृति और कॉफी बागान के लिए प्रसिद्ध है।

**अराकू घाटी:**

- **कॉफी बागान:**
  - यह घाटी अपने जैविक कॉफी उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है, विशेष रूप से स्थानीय आदिवासी समुदायों द्वारा।
  - यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अराकू कॉफी के लिए प्रसिद्ध है, जिसे वैश्विक स्तर पर निर्यात किया जाता है।
- **पर्यटन:**
  - अराकू अपने सुखद मौसम, जलप्रपातों, गुफाओं (जैसे, बोर्ना गुफाएँ) और हरे-भरे परिदृश्यों के लिए एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है।
  - यह आदिवासी त्योहारों और सांस्कृतिक धरोहर के लिए भी जाना जाता है।
- **ऊँचाई और जलवायु:**
  - लगभग 900-1400 मीटर की ऊँचाई पर स्थित, घाटी में ठंडी और सुखद जलवायु अनुभव होती है, जो इसे एक आदर्श पहाड़ी स्टेशन बनाती है।

73. (c)

बंगाल की खाड़ी में कई नदियाँ समुद्र में मिलती हैं, जो भारतीय उपमहाद्वीप में उत्पन्न होती हैं। चलिए हम प्रत्येक नदी का विश्लेषण करें ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि वह बंगाल की खाड़ी में बहती है या नहीं:

1. **पेनार नदी**

- पेनार नदी कर्नाटक के नंदी पहाड़ियों से उत्पन्न होती है और आंध्र प्रदेश से बहती है।
- यह आंध्र प्रदेश के नेल्लोर के पास बंगाल की खाड़ी में मिलती है।

2. **पेरियार नदी**

- पेरियार नदी, जो केरल की सबसे लंबी नदी है, अरब सागर में बहती है, न कि बंगाल की खाड़ी में।

3. **पलार नदी**

- पालर नदी कर्नाटक से उत्पन्न होती है और तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश से बहते हुए बंगाल की खाड़ी में मिलती है।

4. **पोन्नियार नदी**

- पोन्नियार नदी (जिसे दक्षिण पेनार भी कहा जाता है) कर्नाटक के नंदी पहाड़ियों से उत्पन्न होती है और तमिलनाडु से बहती है, फिर कडालूर के पास बंगाल की खाड़ी में मिलती है।

74. (a)

- रिगुर मिट्टी, जिसे काली मिट्टी भी कहा जाता है, प्रमुख रूप से भारत के दक्कन पठार में पाई जाती है। इस प्रकार की मिट्टी में लोहा, चूना, कैल्शियम और मैग्नीशियम जैसे खनिज प्रचुर मात्रा में होते हैं, और इसकी नमी को बनाए रखने की क्षमता के कारण यह अत्यधिक उर्वरक मानी जाती है।
- रिगुर मिट्टी कपास, मूंगफली, सोयाबीन और तम्बाकू जैसी फसलों की खेती के लिए आदर्श है, जो इस मिट्टी के गर्म जलवायु और अच्छे जल संरक्षण में अच्छे से उगती हैं। यह मिट्टी सामान्यतः काले रंग की होती है क्योंकि इसमें आयरन सामग्री वाली काली बेसाल्टिक चट्टान पाई जाती है, और यह क्षेत्र में ज्वालामुखीय गतिविधियों से जुड़ी हुई है।

75. (c)

- **ओलरिकल्चर:**
  - यह बागवानी की एक शाखा है जो सब्जियों की खेती और अध्ययन पर केंद्रित है, जैसे कि टमाटर, गाजर, और पालक।
- **विटीकल्चर:**
  - यह अंगूर की खेती, विशेष रूप से शराब उत्पादन के लिए अंगूर उगाने का विज्ञान और अभ्यास है।
- **पोमोलॉजी:**
  - यह बागवानी की एक शाखा है जो फलों की खेती, सुधार और अध्ययन से संबंधित है, जैसे कि सेब, संतरे, और आम।
- **एपिकल्चर:**
  - यह मधुमक्खी पालन का अभ्यास है, जो मुख्य रूप से शहद, मोम और अन्य मधुमक्खी संबंधित उत्पादों के उत्पादन के लिए किया जाता है।

76. (c)

1. **खारदुंग ला ( लद्दाख ):**

- स्थान:** लद्दाख के संघ राज्य क्षेत्र में, लेह के पास।
- **ऊँचाई:** लगभग 5,359 मीटर (17,582 फीट), यह दुनिया के सबसे ऊँचे मोटर योग्य मार्गों में से एक है।

**महत्व:**

- खारदुंग ला श्योक और नुब्रा घाटियों के लिए प्रवेश द्वार है।

- यह सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सियाचिन ग्लेशियर, जो दुनिया का सबसे ऊँचा युद्धक्षेत्र है, तक मार्ग प्रदान करता है।

**2. लिपुलेख पास ( उत्तराखंड ):**

- **स्थान:** उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में स्थित।
- **ऊँचाई:** लगभग 5,200 मीटर (17,060 फीट)।

**महत्व:**

- यह कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए एक महत्वपूर्ण पास है, जो भारत को तिब्बत (चीन) से जोड़ता है।
- यह पास रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत, नेपाल और चीन के त्रिजंक्शन के पास स्थित है।
- यह क्षेत्र भारत और नेपाल के बीच क्षेत्रीय विवादों का शिकार है।

**3. नाथू ला ( सिक्किम ):**

- **स्थान:** सिक्किम राज्य में, जो भारत को तिब्बत (चीन) से जोड़ता है।
- **ऊँचाई:** लगभग 4,310 मीटर (14,140 फीट)।

**महत्व:**

- यह भारत और चीन के बीच 2006 के द्विपक्षीय व्यापार समझौते के तहत एक महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग है।
- यह पास सैन्य दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तिब्बत के यादोंग शहर से जुड़ता है।
- ऐतिहासिक रूप से, यह प्राचीन सिल्क रूट का हिस्सा था।

**4. बाँमडी ला ( अरुणाचल प्रदेश ):**

- **स्थान:** अरुणाचल प्रदेश राज्य में, जो पूर्वी हिमालय का हिस्सा है।
- **ऊँचाई:** लगभग 2,415 मीटर (7,923 फीट)।

**महत्व:**

- यह तवांग क्षेत्र तक पहुंच प्रदान करता है, जो इसके तिब्बती बौद्ध धरोहर के कारण सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- यह 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान एक रणनीतिक स्थान था।

**77. (b)**

**दुदुमा जलप्रपात:**

- **स्थान:** दुदुमा जलप्रपात ओडिशा के कोरापुट जिले में स्थित है और आंशिक रूप से आंध्र प्रदेश में स्थित है।
- यह माचकोंड नदी द्वारा निर्मित होता है, जो गोदावरी नदी प्रणाली की एक सहायक नदी है।

- दुदुमा जलप्रपात भारत के सबसे ऊँचे जलप्रपातों में से एक है, जिसकी ऊँचाई लगभग 175 मीटर (574 फीट) है।

**78. (d)**

**1. राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT)**

- राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT) चेन्नई, तमिलनाडु में स्थित है, न कि विशाखापत्तनम में।
- यह समुद्र इंजीनियरिंग और संसाधनों से संबंधित प्रौद्योगिकियों के विकास में संलग्न है।

**2. भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (IIP)**

- भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (IIP), जो विज्ञान और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) के तहत है, देहरादून, उत्तराखंड में स्थित है।
- यह पेट्रोलियम रिफाइनिंग, पेट्रोकेमिकल्स और संबंधित प्रौद्योगिकियों पर अनुसंधान करता है।

**3. केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (CFTRI)**

- केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (CFTRI) मैसूर, कर्नाटका में स्थित है।
- यह खाद्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर अनुसंधान करता है, खाद्य प्रसंस्करण और संरक्षण में नवाचारों का विकास करता है।

**4. केंद्रीय समुद्री मछली पालन अनुसंधान संस्थान (CMFRI)**

- केंद्रीय समुद्री मछली पालन अनुसंधान संस्थान (CMFRI) कोचि, केरल में मुख्यालय स्थित है।
- समुद्री मछली पालन पर अनुसंधान करता है, जिसमें मछली संसाधन, जलचर पालन और समुद्री जैव विविधता शामिल हैं।

**79. (a)**

भारत में पर्वत श्रृंखलाओं को उत्तर से दक्षिण तक व्यवस्थित करने के लिए, आइए हम उनके भौगोलिक स्थानों पर विचार करें:

**1. काराकोर्म रेंज:**

- **स्थान:** यह भारत में सबसे उत्तरी पर्वत श्रृंखला है, जो लद्दाख (संघ राज्य क्षेत्र) से होकर गुजरती है और चीन और पाकिस्तान की सीमाओं के पास स्थित है।
- इसमें K2 (माउंट गॉडविन-ऑस्टेन) शामिल है, जो दुनिया की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है।

**2. जांस्कर रेंज:**

- **स्थान:** यह काराकोर्म रेंज के दक्षिण में स्थित है, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश से होकर गुजरती है।

- यह लद्दाख के सिंधु नदी घाटी और हिमाचल प्रदेश की घाटियों के बीच एक अवरोध के रूप में कार्य करती है।

**3. पीर पंजाल रेंज:**

- **स्थान:** यह जांस्कर रेंज के दक्षिण में स्थित है, मुख्य रूप से जम्मू और कश्मीर में और हिमाचल प्रदेश में भी फैली हुई है।
- यह बाहरी हिमालय का हिस्सा है और इसके दृश्यात्मक घाटियाँ और दर्रे जैसे बानीहाल दर्रा के लिए जाना जाता है।

**4. विंध्या रेंज:**

- **स्थान:** यह सूची में सबसे दक्षिणी पर्वत श्रृंखला है, जो मध्य भारत में स्थित है।
- यह मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ के हिस्सों से होकर गुजरती है, और उत्तर और दक्षिण भारत के बीच एक प्राकृतिक सीमा बनाती है।

**80. (a)**

**1. सिंगरौली थर्मल पावर प्लांट**

- सिंगरौली थर्मल पावर प्लांट मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिले में स्थित है।
- यह भारत के सबसे पुराने और सबसे बड़े थर्मल पावर प्लांट्स में से एक है और इसका संचालन छज्छ (नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन) द्वारा किया जाता है।

**2. तालचर थर्मल पावर प्लांट**

- तालचर थर्मल पावर प्लांट उड़ीसा के अंगुल जिले में स्थित है।
- यह पूर्वी क्षेत्र का एक प्रमुख थर्मल पावर प्लांट है और उड़ीसा की बिजली आपूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

**3. कोरबा थर्मल पावर प्लांट**

- कोरबा थर्मल पावर प्लांट छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में स्थित है।
- यह भारत के सबसे बड़े कोयला-चालित पावर प्लांट्स में से एक है और इसका संचालन छज्छ और अन्य संस्थाएँ करती हैं।

**4. नेवेली थर्मल पावर प्लांट**

- नेवेली थर्मल पावर प्लांट तमिलनाडु के नेवेली में स्थित है।
- इसका संचालन छस्ब इंडिया लिमिटेड (पूर्व में नेवेली लिग्नाइट कॉर्पोरेशन) द्वारा किया जाता है और यह मुख्य रूप से लिग्नाइट को ईंधन के रूप में उपयोग करता है।

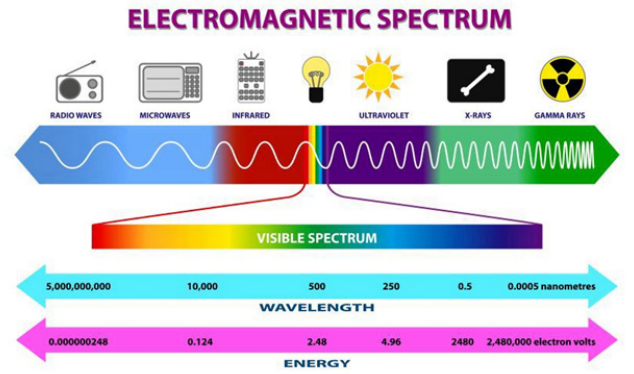
**81. (b)**

**पूर्ण आंतरिक परावर्तन (TIR):**

- पूर्ण आंतरिक परावर्तन तब होता है जब एक प्रकाश रश्मा एक घने माध्यम में यात्रा करते हुए एक दुर्बल माध्यम की सीमा पर एक कोण से टकराती है जो क्रिटिकल कोण से बड़ा होता है, जिससे प्रकाश पूरी तरह से घने माध्यम में परावर्तित हो जाता है।
- यह सिद्धांत ऑप्टिकल फाइबर में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, जहां प्रकाश को पूर्ण आंतरिक परावर्तन द्वारा कोर के माध्यम से मार्गदर्शित किया जाता है।

**82. (d)**

विद्युतचुंबकीय तरंगों को उनके तरंगदैर्घ्य के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है, जो उनकी ऊर्जा और आवृत्ति को निर्धारित करता है। बढ़ते हुए तरंगदैर्घ्य का क्रम घटती हुई आवृत्ति और ऊर्जा के साथ मेल खाता है।



**1. X-किरणें**

- **तरंगदैर्घ्य:** अत्यधिक छोटा, 0.01 से 10 नैनोमीटर (nm) तक।
- यह सबसे छोटे तरंगदैर्घ्यों में से एक है, X-किरणों का उपयोग चिकित्सा इमेजिंग और क्रिस्टलोग्राफी में किया जाता है।

**2. पराबैंगनी (UV)**

- **तरंगदैर्घ्य:** X-किरणों से थोड़ा लंबा, 10 nm से 400 nm तक।
- यह दृश्य स्पेक्ट्रम के ठीक बाहर पाया जाता है, और UV किरणें सनबर्न्स का कारण बनने के लिए जानी जाती हैं।

**3. इन्फ्रारेड (IR)**

- **तरंगदैर्घ्य:** पराबैंगनी से बहुत लंबा, 700 नैनोमीटर से 1 मिलीमीटर तक।
- IR आमतौर पर गर्मी से जुड़ी होती है और इसका उपयोग रिमोट कंट्रोल और थर्मल इमेजिंग में किया जाता है।

**4. सूक्ष्मतरंगें**

- तरंगदैर्घ्य: विद्युतचुंबकीय स्पेक्ट्रम में सबसे लंबा, 1 मिलीमीटर से 1 मीटर तक।
- यह संचार प्रौद्योगिकियों में उपयोग होती हैं, जैसे मोबाइल फोन और माइक्रोवेव ओवन।
- बढ़ते हुए तरंगदैर्घ्य का सही क्रम है X-किरणें → पराबैंगनी → इन्फ्रारेड → सूक्ष्मतरंगें, जो (d) 1-2-4-3 के साथ मेल खाता है।

**83. (c)**

विमानों में पीछे की ओर मुड़े हुए पंखों के डिजाइन को मुख्य रूप से बर्नौली के सिद्धांत से समझाया जाता है, जो द्रव के वेग और दबाव के बीच संबंध को संबोधित करता है।

**बर्नौली का सिद्धांत:**

- यह सिद्धांत कहता है कि जैसे-जैसे किसी द्रव (जैसे हवा) का वेग बढ़ता है, उसका दबाव घटता है।
- विमान के मामले में:
- वह हवा जो मुड़े हुए पंखों के ऊपर बहती है, उसकी गति नीचे की हवा की तुलना में अधिक होती है।
- इससे दबाव में अंतर उत्पन्न होता है, जिसमें पंख के ऊपर दबाव कम और नीचे दबाव अधिक होता है, जो उत्थान (लिफ्ट) उत्पन्न करता है, जिससे विमान हवा में बना रहता है।

**84. (b)**

अवतल दर्पण वस्तु की स्थिति के आधार पर विभिन्न प्रकार की छवियाँ उत्पन्न करता है। जब वस्तु को दर्पण के फोकस (F) और पोल (P) के बीच रखा जाता है, तो छवि के निम्नलिखित लक्षण देखे जाते हैं:

**छवि का प्रकार:**

**काल्पनिक:**

- छवि को स्क्रीन पर प्रक्षिप्त नहीं किया जा सकता क्योंकि यह उन रेखाओं के प्रकट संगम द्वारा उत्पन्न होती है जो वास्तव में नहीं मिलतीं।
- यह इसलिए होता है क्योंकि परावर्तित रेखाएँ फैल जाती हैं, और उनकी विस्तारित रेखाएँ दर्पण के पीछे मिलती हुई दिखती हैं।

**सीधी:**

- जो छवि बनती है वह सीधी होती है, यानी इसका अभिविन्यास वस्तु के समान होता है।

**बढ़ी हुई:**

- छवि वस्तु से बड़ी दिखाई देती है, क्योंकि परावर्तित रेखाएँ अधिक फैल जाती हैं।

**छवि निर्माण प्रक्रिया:**

- जब वस्तु को फोकस (F) और पोल (P) के बीच रखा जाता है, तो आगमन रेखाएँ परावर्तित होती हैं और फैल जाती हैं।

- फैलने वाली परावर्तित रेखाएँ पीछे की ओर बढ़ती हैं, जिससे दर्पण के पीछे काल्पनिक छवि बनती है।

**अन्य स्थितियों के साथ तुलना:**

- कर्वेचर के केंद्र (c) के पार: वास्तविक, उलटी, और घटित।
- C और F के बीच: वास्तविक, उलटी, और बढ़ी हुई।
- F पर: कोई छवि नहीं बनती क्योंकि परावर्तित रेखाएँ समानांतर होती हैं।

अनंत पर: एक अत्यधिक घटित, वास्तविक, और उलटी बिंदु छवि F पर बनती है।

**85. (a)**

**1. धारिता**

धारिता की SI इकाई फ़ैरेड (F) है।

धारिता एक प्रणाली की क्षमता को मापती है जो विद्युत आवेश को संग्रहित करती है।

1 फ़ैरेड = 1 कूलंब प्रति वोल्ट।

**2. चुंबकीय क्षेत्र शक्ति**

चुंबकीय क्षेत्र शक्ति की SI इकाई टेस्ला (T) है।

यह चुंबकीय क्षेत्र की तीव्रता को मापता है।

1 टेस्ला = 1 वेबर प्रति वर्ग मीटर।

**3. विद्युत प्रतिरोध**

विद्युत प्रतिरोध की SI इकाई ओम ( $\Omega$ ) है।

प्रतिरोध यह मापता है कि कोई सामग्री विद्युत धारा के प्रवाह का कितना विरोध करती है।

1 ओम = 1 वोल्ट प्रति एम्पीयर।

**4. चुंबकीय फ्लक्स**

चुंबकीय फ्लक्स की SI इकाई वेबर (Wb) है।

चुंबकीय फ्लक्स यह मापता है कि किसी दिए गए क्षेत्र से कितनी कुल चुंबकीय क्षेत्र रेखाएँ गुजर रही हैं।

1 वेबर = चुंबकीय फ्लक्स जब 1 टेस्ला चुंबकीय क्षेत्र उस क्षेत्र पर लंबवत रूप से कार्य करता है।

**86. (a)**

**एडवर्ड टेलर:**

- एडवर्ड टेलर, एक हंगेरियन-अमेरिकी भौतिक विज्ञानी, को "हाइड्रोजन बम के पिता" के रूप में जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने थर्मोन्यूक्लियर हथियार के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- हाइड्रोजन बम, या एच-बम, परमाणु संलयन पर आधारित है, जहाँ हल्के नाभिक (जैसे, हाइड्रोजन के आइसोटोप) एक साथ मिलकर विशाल ऊर्जा छोड़ते हैं।

**रॉबर्ट ओपेनहाइमर:**

- रॉबर्ट ओपेनहाइमर को “परमाणु बम के पिता” के रूप में जाना जाता है, उन्होंने मैनहट्टन परियोजना का नेतृत्व किया।
- वह हाइड्रोजन बम के विकास में सीधे तौर पर शामिल नहीं थे।

**87. (b)**

- लिफ्ट में खड़े व्यक्ति का प्रकट वजन वह सामान्य बल (N) है जो लिफ्ट के तल द्वारा व्यक्ति पर डाला जाता है। यह प्रकट वजन लिफ्ट के त्वरण पर निर्भर करता है।

**मुख्य सिद्धांत:**

- जब लिफ्ट नीचे की ओर त्वरण प्राप्त कर रही होती है, तो सामान्य बल (प्रकट वजन) घट जाता है क्योंकि लिफ्ट और व्यक्ति दोनों एक ही दिशा में त्वरण प्राप्त कर रहे होते हैं, जो गुरुत्वाकर्षण के समान दिशा में होता है।
- प्रकट वजन = वास्तविक वजन - लिफ्ट के नीचे की ओर त्वरण के कारण बल
- गणितीय रूप से:  $N = m(g - a)$ , जहां:
- N = प्रकट वजन
- m = व्यक्ति का द्रव्यमान
- g = गुरुत्वाकर्षण का त्वरण
- a = लिफ्ट का नीचे की ओर त्वरण

जब लिफ्ट नीचे की ओर त्वरण प्राप्त करती है, तो प्रकट वजन घटता है, जिससे सही उत्तर (b) प्रकट वजन घट जाएगा।

**88. (b)**

**नाइट्रस ऑक्साइड**

- रासायनिक सूत्र:  $N_2O$
- साधारण नाम: “हंसी की गैस”
- नाइट्रस ऑक्साइड एक रंगहीन, अप्रज्वलनशील गैस है जिसका हल्का मीठा गंध और स्वाद होता है।
- इसे “हंसी की गैस” कहा जाता है क्योंकि इसे छोटे मात्रा में इनहेल करने पर यह उत्साहीपन और अनियंत्रित हंसी का कारण बन सकता है।
- नाइट्रस ऑक्साइड के गुण:

**भौतिक गुण:**

- मीठे गंध वाली और अप्रतिबंधक।
- दबाव में आसानी से गैस सिलेंडरों में संग्रहण के लिए तरल रूप में परिवर्तित हो जाती है।

**शारीरिक प्रभाव:**

- जब इसे इनहेल किया जाता है, तो यह अस्थायी रूप से मस्तिष्क के दर्द की धारण को कम कर सकता है और हल्का संज्ञाहरण उत्पन्न कर सकता है।

- कम सांद्रता में, यह विश्राम और उत्साह की भावना उत्पन्न करता है, जो अक्सर हंसी के साथ होती है।
- उच्च सांद्रता या लंबे समय तक संपर्क में रहने पर यह चक्कर आना, भ्रम और ऑक्सीजन की कमी का कारण बन सकता है।

**89. (d)**

**1. सोडियम बाइकार्बोनेट ( $NaHCO_3$ ):**

- सोडियम बाइकार्बोनेट, जिसे बेकिंग सोडा भी कहा जाता है, सामान्यतः पेट के अम्ल को न्यूट्रलाइज करने के लिए एक एंटासिड के रूप में उपयोग किया जाता है।
- इसे बेकिंग, सफाई, और अग्निशामक यंत्रों में भी इस्तेमाल किया जाता है।

**2. कैल्शियम कार्बोनेट ( $CaCO_3$ ):**

- कैल्शियम कार्बोनेट सीमेंट उद्योग में एक महत्वपूर्ण घटक है, जहाँ इसे चूना और सीमेंट बनाने के लिए उपयोग किया जाता है।
- इसे चाक, संगमरमर और आहार कैल्शियम सप्लीमेंट के उत्पादन में भी उपयोग किया जाता है।

**3. अमोनियम नाइट्रेट ( $NH_4NO_3$ ):**

- अमोनियम नाइट्रेट उच्च नाइट्रोजन सामग्री के कारण एक उर्वरक के रूप में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, जो पौधों के विकास के लिए आवश्यक है।
- इसे खनन और निर्माण उद्योगों में विस्फोटक के रूप में भी उपयोग किया जाता है।

**4. सल्फ्यूरिक अम्ल ( $H_2SO_4$ ):**

- सल्फ्यूरिक अम्ल को सामान्यतः बैटरी का अम्ल कहा जाता है क्योंकि इसका उपयोग कारों और अन्य वाहनों में लेड-एसिड बैटरी में किया जाता है।
- इसे उर्वरकों, रासायनिक उत्पादों और सफाई एजेंटों के निर्माण में भी उपयोग किया जाता है।

**90. (b)**

हैबर प्रक्रिया एक तरीका है जिसका उपयोग औद्योगिक रूप से अमोनिया ( $NH_3$ ) को नाइट्रोजन ( $N_2$ ) और हाइड्रोजन ( $H_2$ ) गैसों से संश्लेषित करने के लिए किया जाता है।

**उत्प्रेरक के रूप में लोहा:**

- लोहा हैबर प्रक्रिया में प्राथमिक उत्प्रेरक के रूप में उपयोग किया जाता है।
- लोहा उत्प्रेरक को आमतौर पर पोटेशियम ऑक्साइड और एल्यूमिनियम ऑक्साइड जैसे अन्य पदार्थों की छोटी मात्रा से प्रोमोट किया जाता है, जो इसकी गतिविधि और दीर्घायु को बढ़ाते हैं।

91. (b)

नियोप्रिन (पॉलिक्लोरोप्रीन) एक प्रकार का सिंथेटिक रबर है जो क्लोरोप्रीन के पॉलिमराइजेशन से उत्पन्न होता है। इसे व्यापक रूप से निम्नलिखित के लिए उपयोग किया जाता है:

- औद्योगिक बेल्ट
- होज
- वेटसूट
- चिपकने वाले

नियोप्रिन को तेलों, रसायनों, और मौसम के प्रभाव से प्रतिरोध के लिए मूल्यांकित किया जाता है।

**अन्य विकल्प:**

**पॉलीएथीलीन:**

- यह एक प्रकार का प्लास्टिक है, जिसका उपयोग पैकेजिंग (जैसे, प्लास्टिक बैग और बोतलें) में किया जाता है।

**पॉलीस्टाइरीन:**

- यह एक पॉलिमर है जो हल्के सामग्री में उपयोग होता है जैसे डिस्पोजेबल कप और इंसुलेशन।

**टेफ्लॉन:**

- यह एक फ्लुओरोपॉलिमर है जिसका उपयोग कुकवेयर के लिए नॉन-स्टिक कोटिंग्स में किया जाता है।

92. (a)

- यूरेनियम सबसे भारी स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होने वाला धातु है, जिसका आणविक संख्या 92 और आणविक द्रव्यमान 238 ग्राम/मोल है।
- इसका उपयोग निम्नलिखित में किया जाता है:
  - परमाणु रिएक्टरों में ईंधन के रूप में
  - परमाणु हथियारों में
  - चट्टानों की रेडियोमेट्रिक डेटिंग में।

**अन्य विकल्प:**

- क्रोमियम:
- आणविक संख्या: 24
- यूरेनियम से बहुत हल्का; इसका उपयोग इलेक्ट्रोप्लेटिंग और मिश्रधातुओं में किया जाता है।

**वैनाडियम:**

- आणविक संख्या: 23
- सापेक्ष रूप से हल्का; इसका उपयोग स्टील मिश्रधातुओं में किया जाता है।

**प्लेटिनम:**

- आणविक संख्या: 78
- भारी लेकिन यूरेनियम से हल्का; इसका उपयोग उत्प्रेरक और सजावटी प्रयोजनों के लिए किया जाता है।

93. (b)

- मलेरिया प्रोटोजोआन परजीवी के जनक Plasmodium (जैसे, Plasmodium falciparum, P-vivax, P-malariae, P-ovale) द्वारा होता है।
- ये परजीवी संक्रमित मादा एनोफिलीज मच्छरों के काटने से मनुष्यों में प्रसारित होते हैं।

**अन्य विकल्प:**

- तपेदिक:
- यह Mycobacterium tuberculosis, एक बैक्टीरिया, द्वारा होता है।

**इन्फ्लुएंजा:**

- यह इन्फ्लुएंजा वायरस द्वारा होता है।

**डेंगू:**

- यह डेंगू वायरस द्वारा होता है, जो Aedes मच्छरों द्वारा प्रसारित होता है।

94. (c)

- हाइपोथैलेमस, जो मस्तिष्क में स्थित है, शरीर के थर्मोस्टेट के रूप में कार्य करता है।
- यह शरीर के तापमान को निम्नलिखित तंत्रों के माध्यम से नियंत्रित करता है:
  - शरीर को ठंडा करने के लिए पसीना आना।
  - गर्मी उत्पन्न करने के लिए कांपना।
  - त्वचा तक रक्त प्रवाह को समायोजित करना।

95. (a)

1. **ब्रायोफाइट्स**

- ब्रायोफाइट्स (जैसे, माँस, लिवरवर्ट्स) गैर-वाहक पौधे होते हैं।
- इनमें शाइलेम और फ्लोएम (वाहक ऊतक) का अभाव होता है।
- इनका जीवन चक्र गामेटोफाइट चरण (हैप्लॉयड) द्वारा शासित होता है।
- पानी उर्वरकण के लिए आवश्यक होता है क्योंकि शुक्राणु को अंडाणु तक पहुँचने के लिए तैरना पड़ता है।

2. **प्टेरिडोफाइट्स**

- प्टेरिडोफाइट्स (जैसे, फर्न्स, हॉर्सटैल्स) वाहक पौधे होते हैं।
- इनमें पानी और पोषक तत्वों के परिवहन के लिए शाइलेम और फ्लोएम होते हैं।
- ये बीजाणुओं के माध्यम से प्रजनन करते हैं और बीज उत्पन्न नहीं करते।

3. **जिम्नोस्पर्म**

- जिम्नोस्पर्म (जैसे, पाइन, सीडर) नंगे बीज उत्पन्न करते हैं, यानी ये फल में संलग्न नहीं होते।

- बीज आमतौर पर शंकु या समान संरचनाओं पर पाए जाते हैं।

**4. ऐंजियोस्पर्म**

- ऐंजियोस्पर्म (फूलों वाले पौधे) ऐसे पौधे होते हैं जिनमें बीज फल के भीतर संलग्न होते हैं।
- इनमें अत्यधिक विकसित वाहक प्रणाली होती है और ये पौधों का सबसे विविध समूह होते हैं।

**96. (c)**

- पाराथायरॉयड हार्मोन (PTH) पाराथायरॉयड ग्रंथियों द्वारा उत्पादित होता है और रक्त में कैल्शियम की सांद्रता को नियंत्रित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब रक्त में कैल्शियम का स्तर बहुत कम हो जाता है, तो चर्च रक्त प्रवाह में उत्सर्जित होता है। PTH रक्त कैल्शियम स्तर को निम्नलिखित तंत्रों के माध्यम से बढ़ाता है:
  - हड्डियों से कैल्शियम का विमोचन उत्तेजित करना: PTH ऑस्टियोक्लास्ट को सक्रिय करता है, जो हड्डी ऊतक को तोड़ते हैं, जिससे कैल्शियम रक्त प्रवाह में रिलीज होता है।
  - गुर्दों द्वारा कैल्शियम पुनः अवशोषण को बढ़ाना: PTH गुर्दों की क्षमता को बढ़ाता है जिससे वे मूत्र से कैल्शियम पुनः अवशोषित करते हैं, इस प्रकार कैल्शियम की हानि को कम करते हैं।
  - विटामिन D को सक्रिय करने की उत्तेजना: विटामिन D आहार से कैल्शियम को अवशोषित करने में मदद करता है। PTH सक्रिय विटामिन D के रूप के उत्पादन को बढ़ाता है, जो पाचन तंत्र से कैल्शियम के अवशोषण को बढ़ाता है।
  - यह नियमन स्थिर कैल्शियम स्तर बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है, जो मांसपेशियों के कार्य, तंत्रिका संकेतों और हड्डी स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं।

**97. (b)**

**1. विटामिन B3**

- विटामिन B3, जिसे नियासिन भी कहा जाता है, निम्नलिखित के लिए आवश्यक है:
  - कोशिकीय श्वसन के माध्यम से ऊर्जा उत्पादन।
  - स्वस्थ त्वचा और तंत्रिका तंत्र को बनाए रखना।
  - विटामिन B3 की कमी से पैलाग्रा हो सकती है।

**2. विटामिन B6**

- विटामिन B6, जिसे पिरिडॉक्सिन भी कहा जाता है, निम्नलिखित के लिए महत्वपूर्ण है:
  - प्रोटीन मेटाबोलिज्म और न्यूरोट्रांसमीटरों का संश्लेषण।
  - हीमोग्लोबिन स्तर बनाए रखना।

- विटामिन B6 की कमी से एनीमिया, अवसाद और भ्रम हो सकता है।

**3. विटामिन B7**

- विटामिन B7, जिसे बायोटिन भी कहा जाता है, निम्नलिखित के लिए महत्वपूर्ण है:
  - फैटी एसिड संश्लेषण और मेटाबोलिज्म।
  - स्वस्थ बाल, त्वचा और नाखून बनाए रखना।
  - विटामिन B7 की कमी दुर्लभ होती है, लेकिन इससे डर्माटाइटिस और बालों का झड़ना हो सकता है।

**98. (c)**

- डीएनए पुनरावृत्ति के दौरान, हेलिकेज एंजाइम “डीएनए डबल हेलिक्स को खोलने” में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे पुनरावृत्ति की प्रक्रिया को संभव बनाता है।

**हेलिकेज का कार्य:**

- **डबल हेलिक्स को खोलना:**
  - हेलिकेज पूरक बेस जोड़ी (एडेनिन-थाइमिन और गुआनिन-साइटोसिन) के बीच हाइड्रोजन बांड को तोड़ता है, जिससे डीएनए की दो स्ट्रैंड अलग हो जाती हैं।

**पुनरावृत्ति कांटा का निर्माण:**

- यह खोलना पुनरावृत्ति कांटे को उत्पन्न करता है, जो वह स्थान है जहाँ डीएनए स्ट्रैंड्स को अनवाइंड किया जाता है और पुनरावृत्ति की प्रक्रिया जारी रहती है।

**अन्य एंजाइमों की भूमिकाएं:**

- **डीएनए पॉलिमरेज:**
  - यह पुनरावृत्ति के दौरान बढ़ते डीएनए स्ट्रैंड में न्यूक्लियोटाइड्स जोड़ता है।
  - यह 5' से 3' दिशा में डीएनए संश्लेषित करता है लेकिन डबल हेलिक्स को अनवाइंड नहीं करता है।

**आरएनए प्राइमरेज:**

- यह आरएनए प्राइमर संश्लेषित करता है, जो डीएनए पॉलिमरेज को पुनरावृत्ति शुरू करने के लिए एक प्रारंभिक बिंदु प्रदान करता है।

**लाइगेज:**

- यह पीछे की स्ट्रैंड पर ओकाजाकी फ्रैगमेंट्स को जोड़ता है, जो डीएनए के बीच कोवैलेंट बांड बनाता है।

**99. (a)**

- आरएनए प्रोटीन संश्लेषण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और प्रत्येक प्रकार का आरएनए विशिष्ट कार्य करता है ताकि आनुवंशिक जानकारी को प्रोटीन में सटीक रूप से अनुवादित किया जा सके।

**1. mRNA ( मेसेंजर RNA )**

**कार्य:**

- mRNA आनुवंशिक निर्देशों को डीएनए से कोशिका के नाभिक से राइबोसोम में ले जाकर प्रोटीन संश्लेषण के लिए संदेश के रूप में कार्य करता है।
- यह प्रतिलेखन के दौरान संश्लेषित होता है, एक प्रक्रिया जिसमें डीएनए अनुक्रम को आरएनए पॉलिमरेज द्वारा आरएनए में प्रतिलिपित किया जाता है।
- mRNA में न्यूक्लियोटाइड्स का अनुक्रम प्रोटीन में अमीनो अम्लों के अनुक्रम को निर्धारित करता है, जो आनुवंशिक कोड का पालन करता है।

**प्रक्रिया:**

- mRNA पर तीन बेसों का प्रत्येक सेट, जिसे कोडोन कहा जाता है, एक विशिष्ट अमीनो अम्ल या प्रोटीन संश्लेषण के दौरान एक स्टॉप सिग्नल के रूप में कार्य करता है।

**2. tRNA ( ट्रांसफर RNA )**

**कार्य:**

- tRNA प्रोटीन संश्लेषण की प्रक्रिया के दौरान अमीनो अम्लों को राइबोसोम तक लाने के लिए जिम्मेदार है।
- प्रत्येक tRNA अणु में दो महत्वपूर्ण स्थल होते हैं:
  - एंटीकोडोन स्थल: mRNA पर कोडोन के पूरक तीन बेसों का एक सेट।
  - अमीनो अम्ल संलग्नक स्थल: एक विशिष्ट अमीनो अम्ल से जुड़ता है।

**प्रक्रिया:**

- tRNA mRNA कोडोन को पढ़ता है और सुनिश्चित करता है कि सही अमीनो अम्ल बढ़ते पॉलिपेटाइड श्रेणी में सम्मिलित हो।

**मुख्य भूमिका:**

- यह सुनिश्चित करता है कि अनुवाद प्रक्रिया सटीक है, क्योंकि प्रत्येक जल्ड। केवल एक अमीनो अम्ल के लिए विशिष्ट होता है।

**3. rRNA ( राइबोसोमल RNA )**

**कार्य:**

- rRNA राइबोसोमों का एक प्रमुख संरचनात्मक और कार्यात्मक घटक है, जो कोशिका की "मशीनें" हैं, जहाँ प्रोटीन संश्लेषण होता है।

राइबोसोम दो उप-इकाइयों से बने होते हैं:

- **बड़ी उप-इकाई:** इसमें rRNA और प्रोटीन होते हैं जो पेप्टाइड बांड गठन को उत्प्रेरित करते हैं।
- **छोटी उप-इकाई:** इसमें rRNA होता है जो अनुवाद के दौरान mRNA और tRNA को संरेखित करने में मदद करता है।

**प्रक्रिया:**

अनुवाद के दौरान, rRNA mRNA और tRNA के सही संरेखण को सुनिश्चित करता है और अमीनो अम्लों के बीच पेप्टाइड बांडों के गठन को उत्प्रेरित करता है, जिससे पॉलिपेटाइड श्रेणी बनती है।

**100. (b)**

- जाइमेज यीस्ट कोशिकाओं में पाया जाने वाला एंजाइमों का एक मिश्रण है, जो किण्वन की प्रक्रिया में ग्लूकोज को एथेनॉल (अल्कोहल) और कार्बन डाइऑक्साइड में परिवर्तित करने के लिए जिम्मेदार है। यह शराब किण्वन में केंद्रीय जैव रासायनिक मार्ग है, जो ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में होता है।
- प्रक्रिया की शुरुआत ग्लूकोज (एक छह-कार्बन शुगर) से होती है, जिसे एक श्रृंखला की एंजाइमेटिक प्रक्रियाओं के माध्यम से पाइरूवेट में तोड़ा जाता है। जाइमेज फिर पाइरूवेट को एथेनॉल और कार्बन डाइऑक्साइड में परिवर्तित करता है, जिससे यीस्ट को एरोबिक (ऑक्सीजन-मुक्त) परिस्थितियों में ऊर्जा उत्पन्न करने का तरीका मिलता है।

**अन्य एंजाइम:**

**अमाइलस:**

- यह स्टार्च को सरल शर्करा में तोड़ता है, लेकिन यह सीधे तौर पर ग्लूकोज को एथेनॉल में परिवर्तित नहीं करता है।

**इनवर्टेस:**

- यह सुक्रोज (एक द्विसंयोजक) को ग्लूकोज और फ्रुक्टोज में तोड़ता है।

**माल्टेस:**

- यह माल्टोज (एक द्विसंयोजक) को दो ग्लूकोज अणुओं में तोड़ता है।
- जैमेस किण्वन में एथेनॉल उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से शराब बनाने और बीयर उत्पादन प्रक्रियाओं में, जहाँ किण्वन का उपयोग शराबी पेय बनाने के लिए किया जाता है।



101. (b)

मेले/त्यौहार	विवरण
कुंभ और अर्ध कुंभ	<ul style="list-style-type: none"> <li>कुंभ का आयोजन प्रयागराज में तीन नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर किया जाता है।</li> <li>महाकुंभ मेले के बीच छठे वर्ष में तीनों नदियों के संगम पर अर्धकुंभ का भी आयोजन किया जाता है।</li> <li>यूनेस्को ने कुंभ मेले को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया है।</li> </ul>
काम्पिल मेला, काम्पिल	<ul style="list-style-type: none"> <li>यह जैन मेला है</li> <li>काम्पिल कासगंज प्रदेश।</li> <li>यह शहर 13वें तीर्थंकर ब्राह्मण विमलनाथ के नाम से जाना जाता है।</li> <li>यह गंगा नदी के तट पर मार्च में आयोजित होने वाला पांच दिवसीय मेला है।</li> </ul>
रामलीला	<ul style="list-style-type: none"> <li>रामलीला महान संत तुलसीदास के पवित्र महाकाव्य रामचरितमानस पर आधारित भगवान राम की कहानी के लिए प्रसिद्ध है।</li> </ul>
जन्माष्टमी मेला, मथुरा	<ul style="list-style-type: none"> <li>कृष्ण जन्माष्टमी, जिसे जन्माष्टमी या गोकुलाष्टमी के नाम से भी जाना जाता है, एक वार्षिक हिंदू मेला है जो भगवान विष्णु के आठवें अवतार कृष्ण के जन्म का उत्सव मनाता है।</li> </ul>
बटेश्वर मेला	<ul style="list-style-type: none"> <li>आगरा, जिसका नाम बटेश्वर महादेव (भगवान शिव) के नाम पर रखा गया है।</li> <li>यह उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा पशु मेला।</li> </ul>
कैलाश मेला	<ul style="list-style-type: none"> <li>आगरा</li> </ul>
रामबारात	<ul style="list-style-type: none"> <li>आगरा</li> </ul>
देव मेला	<ul style="list-style-type: none"> <li>बाराबंकी</li> </ul>
गंगा महोत्सव	<ul style="list-style-type: none"> <li>वाराणसी</li> </ul>
बरसाना होली	<ul style="list-style-type: none"> <li>मथुरा</li> </ul>

102. (c)

शैलियों	विवरण
ध्रुपद	<ul style="list-style-type: none"> <li>पुरुष द्वारा किया जाने वाला नृत्य</li> <li>वाद्ययंत्र- तम्बूरा और पखावज।</li> <li>प्रसिद्ध गायक- तानसेन,</li> <li>अन्य रूप- धमार, होली के समय गाया जाता है।</li> <li>प्रमुख घराने- दगारी, दरभंगा, बेतिया और तलवंडी घराने।</li> </ul>
खयाल	<ul style="list-style-type: none"> <li>प्रवर्तक- अमीर खुसरो</li> <li>मुगल सम्राट मुहम्मद शाह द्वारा अपने दरबारी संगीतकारों सदारंग, अदारंग और मनारंग के माध्यम से इस शैली को लोकप्रिय बनाया गया।</li> <li>प्रमुख घराने - ग्वालियर, किराना, पटियाला और आगरा घराने।</li> </ul>
ठुमरी	<ul style="list-style-type: none"> <li>नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में उत्पन्न हुआ ।</li> <li>मुख्य घराने - बनारस, लखनऊ और पटियाला गजल।</li> </ul>
गजल	<ul style="list-style-type: none"> <li>मुगल शासन के दौरान, फारसी गजल उर्दू भाषा में सबसे आम काव्य रूप बन गई।</li> <li>लोकप्रिय- मीर तकी मीर, गालिब, दाग, जौक और सौदा।</li> <li>गजल से जुड़े प्रसिद्ध व्यक्ति मुहम्मद इकबाल, मिर्जा गालिब, रूमी और हाफिज हैं।</li> </ul>

103. (a)

उत्तर प्रदेश की भाषा/बोली	क्षेत्र
खड़ी बोली	• पूर्वी दिल्ली, मेरठ, बागपत, मुजफ्फर नगर, शामली, सहारनपुर, गाजियाबाद, हापुड, गौतमबुद्ध नगर, बुलन्दशहर, बिजनोर, अमरोहा, मुरादाबाद, संभल और रामपुर।
ब्रजभाषा	• मथुरा, अलीगढ़, हाथरस, कासगंज, एटा, आगरा, पूर्वी फिरोजाबाद, मैनपुरी, बदायूँ, बरेली।
कन्नौजी	• कन्नौज, इटावा, औरैया, फरुखाबाद, शाहजहाँपुर, हरदोई, पीलीभीत, कानपुर देहात, कानपुर।
अवधी	• फैजाबाद, गोंडा, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर, सीतापुर, लखनऊ, बाराबंकी, उन्नाव, रायबरेली, अमेठी, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, फतेहपुर, कौशांबी, इलाहाबाद, मिर्जापुर।
भोजपुरी	• मिर्जापुर, चंदौली, संत रविदास नगर, वाराणसी, जौनपुर, गाजीपुर, मऊ, बलिया, आजमगढ़, अम्बेडकर नगर, देवरिया, कुशीनगर, गोरखपुर, महाराजगंज, संत कबीर नगर, सिद्धार्थ नगर।
बुन्देली	• झाँसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बाँदा, चित्रकूट।
बघेली	• बाँदा, चित्रकूट, ईलाहाबाद, मिर्जापुर और सोनभद्र

104. (d)

उत्तर प्रदेश के प्रमुख ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थल

स्थल	शहर	स्थल	शहर
ताज महल	आगरा	गोला गोकर्ण नाथ मंदिर	लखीमपुर खीरी
खानगाह रशीदिया	मैनपुरी	मुगल घाट	फरुखाबाद
दानतीर्थ (हस्तिनापुर)	मेरठ	भृगु मंदिर	बलिया
व्यास टीला और नरसिंह टीला	जालौन	चक्रतीर्थ नैमिषारण्य	सीतापुर
विंध्यवासिनी मंदिर	मिर्जापुर	औघड़नाथ मंदिर	मेरठ
भगवान वराह मंदिर	सोरो (कासगंज)	आनंद भवन	प्रयागराज
लोधेश्वर महादेव मंदिर	बाराबंकी	जायसी स्मारक	रायबरेली
रूमी दरवाजा	लखनऊ	कड़क शाह का मजार	कौशाम्बी
अशफाक उल्ला खान की दरगाह	शाहजहाँपुर	दिगंबर लाईन मूर्तियां	इटावा
बावनी इमली शहीद स्थल	फतेहपुर	शुक्ला तालाब	कानपुर देहात
चीन मंदिर	श्रावस्ती	रानी महल	झाँसी
फांसी इमली शहीद स्थल	प्रयागराज	मकरबई मंदिर	महोबा
शहीद स्थल छावनी	बस्ती	चित्रकूट	कामदगिरि पर्वत
कनक भवन	अयोध्या	कालिंजर किला	बाँदा
देवकाली मंदिर	औरैया	मस्जिद लाल दरवाजा	जौनपुर

105. (d)

विषय	विवरण
क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे बड़ा जिला	लखीमपुर खीरी > सोनभद्र > हरदोई > सीतापुर
क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे छोटा जिला	शामली < भदोही < गाजियाबाद < हापुड
एनसीआर जिला (8)	गाजियाबाद, मेरठ, भागपत, हापुड, गौतमबुद्धनगर, शामली, मुजफ्फरनगर, बुलन्दशहर
नेपाल के साथ सीमा साझा करने वाले जिले (7)	पीलीभीत, लखीमपुर, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, महाराजगंज

उत्तराखंड के साथ सीमा साझा करने वाले जिले (7)	सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनोर, मोरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत
सबसे अधिक राज्यों के साथ सीमा साझा करने वाला जिला	सोनभद्र (बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, एमपी)
तीन तरफ से मध्य प्रदेश से घिरा जिला	ललितपुर
उत्तर प्रदेश की सीमा सबसे छोटी है।	हिमाचल प्रदेश
उत्तर प्रदेश की सबसे लम्बी सीमा किसके साथ लगती है?	मध्य प्रदेश
दिल्ली की सीमा से सटा जिला	गौतमबुद्धनगर और गाजियाबाद
हिमाचल प्रदेश के साथ सीमा साझा करने वाला एकमात्र जिला	सहारनपुर
बिहार के साथ सीमा साझा करने वाले जिले	महाराजगंज, कुशीनगर, देवरिया, बलिया, गाजीपुर, चंदौली, सोनभद्र
मध्य प्रदेश की सीमा से सटे जिले (11)	आगरा, इटावा, जालौन, झाँसी, ललितपुर, महोबा, बाँदा, चित्रकूट, प्रयागराज, मिर्जापुर, सोनभद्र
छत्तीसगढ़ के साथ सीमा साझा करने वाला जिला	सोनभद्र
राजस्थान के साथ सीमा साझा करने वाले जिले	मथुरा, आगरा
हरियाणा के साथ सीमा साझा करने वाले जिले	सहारनपुर, शामली, बागपत, गौतमबुद्धनगर, अलीगढ़, मथुरा
यह जिला उत्तर प्रदेश के सबसे अधिक जिलों के साथ सीमा साझा करता है।	बदायूँ (9)

106. (d)

- बेतवा या बेतवती उत्तरी भारत में यमुना नदी की एक सहायक नदी है। बेतवा, जिसे वेतवती के नाम से भी जाना जाता है, मध्य प्रदेश में होशंगाबाद के ठीक उत्तर में विंध्य पर्वतमाला से निकलती है और उत्तर प्रदेश पहुँचने से पहले मध्य प्रदेश और ओरछा से उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। मालवा का पठार इसके लगभग आधे मार्ग से होकर गुजरता है, जो नौगम्य नहीं है।
- इस नदी की 14 प्रमुख सहायक नदियाँ हैं, जिनमें से 11 पूरी तरह से मध्य प्रदेश में हैं और तीन आंशिक रूप से मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश दोनों में हैं। बेतवा और यमुना नदियों का संगम उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले में ओरछा के पास स्थित है। उत्तर प्रदेश में यह तीन जिलों यानी हमीरपुर, जालौन और ललितपुर से होकर बहती है।

107. (a)

उत्तर प्रदेश की झील	जगह
रामगढ़ ताल	• गोरखपुर
बखिरा झील	• संत कबीर नगर
नवाबगंज झील, कुंडरा समुद्रा	• उन्नाव
पयाग झील	• बहराइच
पार्वती अरगा झील	• गोंडा
भूगेताल और विसैथाताल	• रायबरेली
लिलौर झील	• बरेली
ठिठौरा झील, मोराई ताल	• फतेहपुर
बेती, अजगरा और नुइया झील	• प्रतापगढ़
सूर ताल	• बलिया
गौर झील	• रामपुर
शुक्रताल	• मुजफ्फरनगर
राम ताल	• मेरठ
कीठम झील	• आगरा

शेख झील	• अलीगढ़
गोविंद बल्लभ पंत सागर (कृत्रिम झील)	• सोनभद्र
अलवारा झील	• कौशाम्बी
औंधी ताल	• वाराणसी
भोजपुर ताल	• सुल्तानपुर
दरवान झील	• फैजाबाद
लक्ष्मी ताल , बरुआसागर और भसनेह	• झांसी
सागर ताल	• बदायूं
मदन सागर, बेलासागर ताल	• महोबा
पंगाइली फुलहर या गोमती ताल	• पीलीभीत
दहर झील, भिजवान झील	• हरदोई
भाखा झील	• इटावा
नौ झील	• मथुरा
मोती झील	• कानपुर
चित्तौड़ा झील	• बहराइच

108. (a)

खनिज पदार्थ	उत्तर प्रदेश का जिला
डायमंड	• बांदा, मिर्जापुर
सोना	• शारदा एवं रामगंगा की श्रेणी में परिसी क्षेत्र (सोनभद्र), बेरवार (ललितपुर)
यूरेनियम	• संसपजचनत
चूना पत्थर	• गुरुमा-कनाछ-बसहरी (मिर्जापुर), कजराहट (सोनभद्र)
बाक्साइट	• बांदा, वाराणसी, ललितपुर
पोटाश लवण	• इलाहाबाद, चंदौली, बांदा, झाँसी, सोनभद्र
डोलोमाइट	• बारी (सोनभद्र), बांदा, मीरजापुर
कांच की रेत	• शंकरगढ़, प्रयागराज, बरगढ़ (बांदा), अलीगढ़, चित्रकूट
अण्डालुसाइट	• सोनभद्र, मिर्जापुर
साबुन बनाने का पत्थर	• हमीरपुर, झांसी
सूवर्णमाक्षिक	• सोनभद्र
रॉक फॉस्फेट	• संसपजचनत
गेरू	• बाँदा
सिलिमनाइट	• सोनभद्र
चीनी मिट्टी	• सोनभद्र, बांदा
केल्साइट	• मिर्जापुर
लौह अयस्क	• ललितपुर
ग्रेनाइट	• बांदा, हमीरपुर, ललितपुर, महोबा
डायस्पोर	• झाँसी, महोबा, ललितपुर, हमीरपुर
बलुआ पत्थर	• मिर्जापुर
जिप्सम	• झांसी, हमीरपुर
अदह	• मिर्जापुर, झांसी
संगमरमर	• मिर्जापुर, सोनभद्र
फेल्डस्पार	• झांसी

109. (b)

Organizations	स्थापना वर्ष	मुख्यालय
उत्तर प्रदेश औद्योगिक सहकारी संघ लिमिटेड (यूपिका)	• 1952	• कानपुर
उत्तर प्रदेश वित्तीय निगम	• 1954	• कानपुर
उत्तर प्रदेश लघु उद्योग निगम लिमिटेड	• 1958	• लखनऊ
राज्य औद्योगिक विकास निगम	• 1961	• कानपुर
यूपी एक्सपोर्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड	• 1966	• लखनऊ
प्रदेशीय औद्योगिक एवं निवेश निगम (पीआईसीयूपी)	• 1972	• लखनऊ
उत्तर प्रदेश राज्य चमड़ा विकास एवं विपणन निगम	• 1974	• आगरा
उत्तर प्रदेश इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड	• 1974	• लखनऊ

111. (d)

उपनाम	शहर
संगम नगरी, कुम्भ नगरी, तीर्थराज, भगवान का निवास	• प्रयागराज (इलाहाबाद)
अमला शहर	• प्रतापगढ़
आमों का शहर	• मलीहाबाद (लखनऊ)
गोरख-धाम, नाथ नगर, गीता प्रेस नगर	• गोरखपुर
लेदर सिटी, उद्योग नगर, पूर्वोत्तर भारत का मैनचेस्टर	• कानपुर
छोटा दिल्ली, उद्योग नगरी	• गाजियाबाद
रामनगर, राम जन्मभूमि, रामचरित मानस जन्मभूमि, भू-बैकुंठ, अवध, साकेत धाम	• अयोध्या धाम
भागवत कथा नगर	• शुक्रताल
कैची नगर, क्रांति नगर	• मेरठ
जैन धर्म की काशी	• हस्तिनापुर (मेरठ)
इत्रनगरी, सुगंधों का शहर	• कन्नौज
काशी की बहन	• गाजीपुर
चावल का कटोरा	• चंदौली
नवाबों का शहर, चाकुओं का शहर	• रामपुर
ताज नगरी, पेठा नगरी	• आगरा
लड्डू नगरी	• संडीला (हरदोई)
सुहाग नगरी, चूड़ियों का शहर	• फिरोजाबाद
हींग या गुलाल नगरी	• हाथरस
लॉक सिटी	• अलीगढ़
सोनांचल, भारत की विद्युत राजधानी	• सोनभद्र
सूरमा नगरी	• बरेली
नवाबों का शहर, बागों का शहर, नजाकत नफासत का शहर	• लखनऊ
बुंदेली कश्मीर	• चरखारी कस्बा (महोबा)
मिनी खजुराहो	• गणेशबाग (कार्बी)
ब्रास सिटी, वेसल्स सिटी	• मुरादाबाद
विश्वनाथ नगरी, शिव नगरी, मुक्ति नगर, मुक्ति क्षेत्र, पंडों का शहर, घाटों का शहर	• वाराणसी
शिराज-ए-हिंद	• जौनपुर

111. (b)

वस्तु	शहर
रक्षा पार्क	• आगरा, अलीगढ़, चित्रकूट, झाँसी, लखनऊ और कानपुर
एयरोस्पेस पार्क	• लखनऊ, कानपुर, आगरा, मेरठ और गौतम बुद्ध नगर
रक्षा औद्योगिक गलियारा	• अलीगढ़, आगरा, झाँसी, चित्रकूट, कानपुर और लखनऊ
क्षेत्रीय विज्ञान शहर	• लखनऊ
ज्ञान पार्क	• ग्रेटर नोएडा
ट्रोनिका सिटी	• गाजियाबाद
प्लास्टिक सिटी	• दिबियापुर, औरैया
चमड़ा पार्क	• आगरा
निर्यात संवर्धन औद्योगिक पार्क	• ग्रेटर नोएडा, आगरा
टेक्सटाइल और होजरी पार्क	• कानपुर
विज्ञान पार्क	• संडीला (हरदोई)
चमड़ा प्रौद्योगिकी पार्क	• बंधर (उन्नाव)
परिधान (वस्त्र) पार्क	• ट्रोनिका सिटी, गाजियाबाद
मेगा फूड पार्क	• बहेरी (बरेली)
साइबर सिटी	• कानपुर
सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी	• नोएडा
लायन सफारी पार्क	• इटावा
नाइट सफारी पार्क	• ग्रेटर नोएडा
विज्ञान और प्रौद्योगिकी	• कानपुर
जैव प्रौद्योगिकी पार्क	• लखनऊ
इलेक्ट्रॉनिक सिटी	• नोएडा
थीम पार्क (पर्यटन संबंधी)	• आगरा
मेडी सिटी	• चकगंजरिया, लखनऊ
वेब सिटी	• गाजियाबाद
खिलौना शहर	• ग्रेटर नोएडा
एग्रो पार्क	• बाराबंकी और वाराणसी
बुद्ध थीम पार्क	• सारनाथ (वाराणसी)
सौर शहर कार्यक्रम	• आगरा, प्रयागराज और मुरादाबाद
परफ्यूम पार्क	• कन्नौज

112. (c)

विषय	विवरण
सबसे अधिक आबादी वाला जिला	• प्रयागराज [59,54,391]
सबसे कम आबादी वाला जिला	• महोबा
शीर्ष पांच सर्वाधिक जनसंख्या वाले जिले	• प्रयागराज > मुरादाबाद > गाजियाबाद > आजमगढ़ > लखनऊ
कम से कम पांच घनी आबादी वाले जिले	• महोबा < चित्रकूट < हमीरपुर < श्रावस्ती < ललितपुर
सर्वाधिक साक्षर जिला	• गौतम बुद्ध नगर.
शीर्ष पांच सर्वाधिक साक्षर जिले	• जीबी नगर > कानपुर नगर > औरैया > इटावा > गाजियाबाद।
सबसे कम साक्षर जिला	• श्रावस्ती

सबसे कम पांच साक्षर जिले	• श्रावस्ती < बहराइच < बलरामपुर < बदायूंढरामपुर
सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाले शीर्ष तीन जिले	• गाजियाबाद (3971) > वाराणसी (2395) > लखनऊ (1816)
सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाले तीन जिले	• ललितपुर (242) < सोनभद्र (270) < ढहमीरपुर (275)
उच्चतम लिंगानुपात वाले शीर्ष तीन जिले	• जौनपुर (1024) > आजमगढ़ (1019) > झदेवरिया (1017)
सबसे कम लिंगानुपात वाले तीन जिले	• गौतमबुद्धनगर < बागपत < हमीरपुर

113. (d)

जनजाति	जानकारी
थारू	• बलरामपुर, बहराइच, लखीमपुर और पीलीभीत
अगरिया	• ललितपुर
बैगा	• सोनभद्र
बुक्सा	• सोनभद्र.
घासिया	• सोनभद्र और मिर्जापुर
गोंड	• मिर्जापुर, सोनभद्र और चंदौली.
कोल	• बलरामपुर, गोंडा, बस्ती और सिद्धार्थनगर
खारवा	• मिर्जापुर, सोनभद्र, और चंदौली।
सहरिया	• झांसी और ललित पुर

114. (b)

क्षेत्र की दृष्टि से	सोनभद्र (2436.75 वर्ग किमी)	लखीमपुर खीरी (1272.56 वर्ग किमी)	मिर्जापुर (746.11 वर्ग किमी)	पीलीभीत (685.73 वर्ग किमी)	चित्रकूट (631.69 वर्ग किमी)
प्रतिशत के आधार पर	सोनभद्र -35.29%	चंदौली - 21.78%	चित्रकूट - 19.64%	पीलीभीत - 18.60%	श्रावस्ती - 17.40%

115. (c)

प्रजातियाँ	आईयूसीएन स्थिति	प्राकृतिक वास
भारतीय गैंडा	असुरक्षित	• उत्तर प्रदेश का तराई क्षेत्र • दुधवा राष्ट्रीय उद्यान
घड़ियाल	गंभीर रूप से संकटग्रस्त	• चम्बल नदी • घाघरा नदी
बंगाल टाइगर	संकटग्रस्त	• पीलीभीत टाइगर रिजर्व • दुधवा राष्ट्रीय उद्यान
भारतीय पैंगोलिन	संकटग्रस्त	• सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में
सारस क्रेन	असुरक्षित	• सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में
भारतीय गिद्ध प्रजातियाँ	गंभीर रूप से संकटग्रस्त	• सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में
ग्रेट इंडियन बस्टर्ड	गंभीर रूप से संकटग्रस्त	• उत्तर प्रदेश के घास के मैदान
गंगा नदी डॉल्फिन	संकटग्रस्त	• गंगा और उसकी सहायक नदियाँ
हूलाँक गिबबन	संकटग्रस्त	• उत्तर प्रदेश के पूर्वोत्तर भाग
हिमालयी कस्तूरी मृग	संकटग्रस्त	• उत्तरी उत्तर प्रदेश
ग्रेट इंडियन हॉर्नबिल	असुरक्षित	• हिमालय की तलहटी

चार सींग वाला मृग	असुरक्षित	• तराई क्षेत्र
भारतीय सॉफ्टशेल कछुआ	गंभीर रूप से संकटग्रस्त	• उत्तर प्रदेश की नदियाँ एवं आर्द्रभूमियाँ।

**116. (b)**

- यह उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है और उत्तर प्रदेश के मेरठ, मुजफ्फरनगर और गाजियाबाद जिलों में फैला हुआ है।
- यह गंगा नदी के उत्तरी सिरे पर स्थित है तथा मुजफ्फरनगर और बिजनौर जिलों से होकर बहती है।
- इसमें विविध प्रकार की भू-आकृतियाँ हैं तथा यह विभिन्न आवासों जैसे आर्द्रभूमि, दलदल, सूखी रेत की क्यारियाँ तथा हल्की ढलान वाली घाटियों का मिश्रण है।
- जीव-जंतु: दलदली हिरण, तेंदुआ, जंगली बिल्लियाँ, जंगली ऊदबिलाव, अजगर आदि।
- मगरमच्छ प्रजनन परियोजनाओं के अंतर्गत, शिशु मगरमच्छों को हस्तिनापुर के निकट गंगा नदी में छोड़ा जाता है।
- विश्वव्यापी कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) के तत्वावधान में कछुआ पुनर्वास कार्यक्रम का भी हस्तिनापुर अभयारण्य के पास केंद्र है।
- यह “एशिया फ्लाइवे” परियोजना का एक हिस्सा है और इस क्षेत्र में मौजूद कई जल निकायों के पास बड़ी संख्या में स्थानीय और विदेशी प्रवासी पक्षी आते हैं।

**117. (d)**

वस्तु	भारत में उत्तर प्रदेश का स्थान
दूध उत्पादन	1
खाद्यान्न उत्पादन	1
गन्ना उत्पादन	1
अंतर्देशीय मछली उत्पादन	3
प्रसंस्कृत मांस निर्यात	1
वस्त्र उत्पादन	3
रेशम उत्पादन	5
हस्तनिर्मित कालीन उत्पादन	1
हस्तनिर्मित कालीन निर्यात	1
घरेलू पर्यटकों की संख्या	2
विदेशी पर्यटकों की संख्या	3
SME आधार	1
उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात	2nd

**118. (a)**

- तमिलनाडु भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स का शीर्ष निर्यातक है, जबकि उत्तर प्रदेश (यूपी) दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक है: तमिलनाडु 2023 में, तमिलनाडु भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स का शीर्ष निर्यातक था, जिसका निर्यात 5.37 बिलियन डॉलर था। यह आंशिक रूप से फॉक्सकॉन और पेगाट्रॉन से आईफोन निर्यात में वृद्धि के कारण था। उत्तर प्रदेश 2023 में, यूपी भारत का दूसरा सबसे बड़ा इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यातक था, जिसका निर्यात 4.90 बिलियन डॉलर था।
- उत्तर प्रदेश इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी का एक प्रमुख विनिर्माण केंद्र है, जहां भारत की 60% से अधिक मोबाइल फोन और घटक विनिर्माण इकाइयां स्थित हैं।
- यह राज्य लगभग 2.5 मिलियन हस्तशिल्प कारीगरों का घर भी है।
- उत्तर प्रदेश भारत में उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स का सबसे बड़ा निर्यातक है।
- वर्तमान में भारत की 55% मोबाइल कम्पोनेंट विनिर्माण इकाइयां उत्तर प्रदेश से संचालित होती हैं।
- 26% मोबाइल विनिर्माण इकाइयां उत्तर प्रदेश से संचालित होती हैं।
- उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक हवाई अड्डे हैं (5 अंतर्राष्ट्रीय और 16 घरेलू)
- उत्तर प्रदेश में एक्सप्रेसवे, रेलवे नेटवर्क और राजमार्गों का सबसे बड़ा नेटवर्क है



119. (c)

राजस्व स्रोत	2024-25 बजट	में परिवर्तन %
राज्य का अपना कर	2,56,351	27%
राज्य का अपना गैर-कर	24,435	108%
केंद्रीय करों में हिस्सा	2,18,817	10%
केंद्र से अनुदान सहायता	1,07,200	-5%
राजस्व प्राप्तियां	6,06,802	16%
गैर-ऋण पूंजी प्राप्तियां	3,299	-0.4%
शुद्ध प्राप्तियां	6,10,101	15%

120. (a)

राज्य पशु	<ul style="list-style-type: none"> <li>उत्तर प्रदेश का राज्य पशु बारह सिंघा है।</li> <li>इसे दलदली हिरण के नाम से भी जाना जाता है।</li> <li>वैज्ञानिक नाम : रुसेर्वस डुवॉसेली</li> </ul>
राज्य पुष्प	<ul style="list-style-type: none"> <li>उत्तर प्रदेश का राजकीय पुष्प पलाश है।</li> <li>वैज्ञानिक नाम : ब्यूटिया मोनोस्पर्मा</li> </ul>
राज्य वृक्ष	<ul style="list-style-type: none"> <li>उत्तर प्रदेश का राजकीय वृक्ष अशोक है।</li> <li>वैज्ञानिक नाम: साराका असोका।</li> <li>यह फलीदार परिवार के कैसलपिनिओइडी उपपरिवार से संबंधित एक पौधा है।</li> <li>इसे शांति का प्रतीक भी माना जाता है और इसे अक्सर मंदिरों के पास या पवित्र उपवनों में लगाया जाता है।</li> </ul>
राज्य पक्षी	<ul style="list-style-type: none"> <li>उत्तर प्रदेश का राज्य पक्षी सारस ( क्रेन) है।</li> <li>वैज्ञानिक नाम : ग्रस एंटीगोन</li> </ul>

121. (c)

- हर साल 28 जुलाई को विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस मनाया जाता है। इस दिन लोग प्रकृति संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं।
- यह दिन व्यक्तियों, संगठनों और सरकारों को एक साथ आने और बदलाव लाने का अवसर प्रदान करता है।
- विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस 2024 का विषय “लोगों और पौधों को जोड़ना, वन्यजीव संरक्षण में डिजिटल नवाचार की खोज करना” है।

122. (b)

- आम चुनाव हुए दक्षिण अफ्रीका में 29 मई 2024 को एक नई राष्ट्रीय विधानसभा के साथ-साथ नौ प्रांतों में से प्रत्येक में प्रांतीय विधायिका का चुनाव करने के लिए चुनाव होंगे।
- 14 जून 2024 को, अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस (ANC) डेमोक्रेटिक अलायंस (DA), इंकाथा फ्रीडम पार्टी (IFP) और पैट्रियटिक अलायंस (PA) ने एक राष्ट्रीय एकता सरकार बनाने पर सहमति व्यक्त की, जिसमें सिरिल रामफोसा को दक्षिण अफ्रीका का फिर से राष्ट्रपति चुना गया।

123. (c)

19वें एशियाई खेल 2022, हांगजो (चीन)

थीम: “हांगजो की स्थायी यादें”

आदर्श वाक्य: “दिल से दिल तक, “ भविष्य”

प्रतीक: “बढ़ती हुई लहरें”

शुभंकर: “रोबोटों की तिकड़ी: चेनचेन, कांगकांग, लिनलियन”

एशियाई खेलों की पदक तालिका

क्रम संख्या	देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
1	• पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (चीन)	201	111	71	383
2	• जापान	52	67	69	188
3	• कोरिया गणराज्य	42	59	89	190
4	• भारत	28	38	41	107

**124. (d)**

पेरिस ओलंपिक 2024 की मुख्य बातें

विशेष विवरण

आधिकारिक नाम - गेम्स ऑफ द गम्प्ट ऑलंपियाड  
संस्करण- 33वां ग्रीष्मकालीन ओलंपिक

उद्घाटन समारोह - 26 जुलाई, 2024

समापन समारोह- 11 अगस्त, 2024

स्लोगन- गेम्स वाइड ओपन

कुल आयोजन- 329 आयोजन

खेलों की संख्या- 32 खेल (4 अतिरिक्त खेलों सहित)

अपेक्षित एथलीट- लगभग 10,500

एथलीट- 200 एनओसी और आईओसी शरणार्थी  
ओलंपिक टीम

मेजबान शहर- पेरिस, फ्रांस

भारत की भागीदारी- 117 एथलीट

भारत की कुल रैंक- 71वीं

भारत के कुल पदक- 6 (5 कांस्य + 1 रजत)

**125. (a)**

- 2024 G20 रियो डी जेनेरियो शिखर सम्मेलन, ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (G20) की उन्नीसवीं बैठक थी, जो 18-19 नवंबर 2024 तक रियो डी जेनेरियो में आधुनिक कला संग्रहालय में आयोजित राष्ट्राध्यक्षों और सरकार की बैठक थी।
- यह ब्राजील में आयोजित होने वाला पहला G20 शिखर सम्मेलन था।
- इसके अतिरिक्त, यह 2023 में पिछले शिखर सम्मेलन के दौरान शामिल किए जाने के बाद अफ्रीकी संघ के सदस्य के रूप में पहला पूर्ण G20 शिखर सम्मेलन था।

**126. (a)**

- 26 जुलाई 2024 को संसद में दिए गए एक उत्तर के अनुसार अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत अब

तक 1324 रेलवे स्टेशनों की पहचान की गई है, जिनमें उत्तर प्रदेश राज्य के 157 स्टेशन शामिल हैं।

- अमृत भारत स्टेशन योजना का उद्देश्य देश भर के रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास करके यात्रियों के अनुभव को बेहतर बनाना है। यह योजना अगले 50 वर्षों के लिए स्टेशनों के उपयोग पर ध्यान केंद्रित करेगी। चयनित स्टेशनों पर निम्नलिखित सुविधाएं उपलब्ध होंगी।
  - बेहतर प्रकाश व्यवस्था
  - कोच मार्गदर्शन प्रणाली
  - ट्रेन डिस्प्ले बोर्ड
  - डिजिटल घड़ी
  - यात्री घोषणा प्रणाली
  - एस्केलेटर
  - फूड कोर्ट
  - चौड़े फुट ओवर ब्रिज
  - छत पर सौर ऊर्जा संयंत्र
  - वाटर कूलर

**127. (a)**

कोविड-19 से निपटने के लिए कई प्रकार के टीके विकसित और उपयोग किए गए हैं। प्रत्येक प्रकार प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करने के लिए एक अलग दृष्टिकोण का उपयोग करता है। यहाँ मुख्य प्रकारों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

**1. mRNA टीके:**

- **उदाहरण:** फाइजर-बायोएनटेक, मॉडर्न
- **व तंत्र:** ये टीके वायरस की सतह पर पाए जाने वाले स्पाइक प्रोटीन का उत्पादन करने के लिए कोशिकाओं को निर्देश देने के लिए मैसेंजर RNA (mRNA) का उपयोग करते हैं। प्रतिरक्षा प्रणाली तब इस प्रोटीन को विदेशी के रूप में पहचानती है और इससे लड़ने के लिए एंटीबॉडी बनाती है।

**2. वायरल वेक्टर टीके:**

- **उदाहरण:** एस्ट्राजेनेका-ऑक्सफोर्ड, जॉनसन एंड जॉनसन (जानसेन), स्पुतनिक V
- **तंत्र:** ये टीके कोरोनावायरस से आनुवंशिक

सामग्री को मानव कोशिकाओं में पहुंचाने के लिए एक हानिरहित वायरस (कोरोनावायरस नहीं) का उपयोग वेक्टर के रूप में करते हैं। यह एक प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को ट्रिगर करता है।

**3. प्रोटीन सबयूनिट वैक्सीन:**

- उदाहरण: नोवावैक्स
- तंत्र: इन टीकों में वायरस के हानिरहित टुकड़े (स्पाइक प्रोटीन) होते हैं जो वास्तविक वायरस को पहचानने और उससे लड़ने के लिए प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करते हैं।

**4. निष्क्रिय या क्षीण वायरस वैक्सीन:**

- उदाहरण: सिनोवैक-कोरोनावैक, सिनोफार्म
- तंत्र: ये टीके रोग पैदा किए बिना प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को उत्तेजित करने के लिए वायरस के मारे गए (निष्क्रिय) या कमजोर (क्षीण) संस्करण का उपयोग करते हैं।

**128. (b)**

- छत्तीसगढ़ में गुरु घासीदास-तमोर पिंगला टाइगर रिजर्व को 2024 में भारत का 56वाँ टाइगर रिजर्व घोषित किया गया।
- यह रिजर्व मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर, कोरिया, सूरजपुर और बलरामपुर जिलों में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 2,829.38 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें 2,049.2 वर्ग किलोमीटर का कोर टाइगर हैबिटेट और 780.15 वर्ग किलोमीटर का बफर जोन है।

**129. (c)**

ब्रिटिश लेखिका सामंथा हार्वे की पुस्तक ऑर्बिटल ने 2024 का बुकर पुरस्कार जीता।

**2024 में बुकर पुरस्कार प्राप्त करने वाली सभी पुस्तकें**

- लेखक- पुस्तक का नाम
- सामंथा हार्वे- ऑर्बिटल
- पर्सीवल एवरेट - जेम्स
- राहेल कुशनर - क्रिएशन लेक
- ऐनी माइकल्स - हेल्ड
- याएल वैन डेर वूडेन - द सेफकीप
- शालॉट वुड - स्टोन यार्ड भक्ति
- कॉलिन बैरेट- वाइल्ड हाउस
- रीटा बुलविंकल - हेडशॉट
- हिशाम मटर- माई फ्रेंड्स
- क्लेयर मेसूद - दिस स्ट्रेंज इवेंटफुल हिस्ट्री
- टॉमी ऑरेंज - वंडरिंग स्टार्स
- सारा पेरी - एनलाइटनमेंट
- रिचर्ड पॉवर्स - प्लेग्राउंड।

**130. (b)**

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अरुणाचल प्रदेश में 13,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित दुनिया की सबसे लंबी (1595 मीटर) ट्विन-लेन सुरंग सेला सुरंग का उद्घाटन किया।
- यह अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग जिले में तवांग को तेजपुर, असम से जोड़ती है।
- इसे BRO द्वारा विकसित किया गया है।

**131. (c)**

- इंडियन ऑयल की पारादीप और पानीपत रिफाइनरियों द्वारा उत्पादित भारत का पहला "गैसोलीन और डीजल संदर्भ ईंधन" पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस तथा आवास और शहरी मामलों के मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी द्वारा लॉन्च किया गया है।
- यह ऑटोमोबाइल अंशांकन और परीक्षण के लिए महत्वपूर्ण उच्च मूल्य वाला उत्पाद है और इसमें पेट्रोल और डीजल की तुलना में अधिक ऑक्टेन संख्या है।
- किसी ईंधन के लिए उच्च ऑक्टेन संख्या का मतलब है कि यह इंजन में समय से पहले प्रज्वलन और दहन के लिए अधिक स्थिर और प्रतिरोधी है। यह इसे अधिक कुशल ईंधन बनाता है।

**132. (c)**

- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) मद्रास 6 नवंबर, 2023 को तंजानिया के जांजीबार में एक अंतरराष्ट्रीय परिसर स्थापित करने वाला पहला IIT बन गया
- **स्थान:** परिसर तंजानिया के जांजीबार द्वीप पर स्थित है
- **कार्यक्रम:** परिसर डेटा विज्ञान और AI में चार वर्षीय बैचलर ऑफ साइंस डिग्री और डेटा विज्ञान और AI में दो वर्षीय मास्टर ऑफ टेक्नोलॉजी डिग्री प्रदान करता है
- **छात्र:** परिसर में 50% भारतीय छात्र हैं और बाकी विभिन्न अफ्रीकी देशों से हैं
- **संकाय:** परिसर में दुनिया भर से भर्ती किए गए संकाय हैं
- **प्रवेश:** प्रवेश एक प्रवेश परीक्षा और साक्षात्कार के माध्यम से किया जाता है
- **ट्यूशन:** यूजी कोर्स के लिए शुल्क लगभग +12,000/वर्ष निर्धारित किया गया है

**133. (a)**

- क्षेत्रवार रोजगार वितरण
  - कृषि: कार्यबल का 45%
  - विनिर्माण: कार्यबल का 11.4%
  - सेवाएँ: कार्यबल का 28.9%
  - निर्माण: कार्यबल का 13%

**रोजगार की स्थिति**

- रोजगार की स्थिति का विवरण
  - स्व-नियोजित: कुल कार्यबल का 57.3%
  - घरेलू उद्यमों में अवैतनिक कर्मचारी: 18.3%
  - आकस्मिक श्रम: 21.8%
  - नियमित वेतन/वेतनभोगी कर्मचारी: 20.9%

**134. (b)**

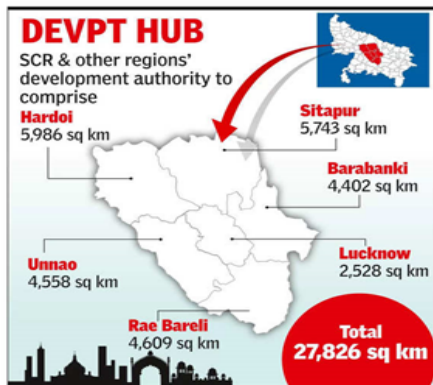
वार एक गैर-काल्पनिक पुस्तक है, जिसे पत्रकार बॉब वुडवर्ड ने लिखा है और 15 अक्टूबर, 2024 को साइमन एंड शूस्टर द्वारा प्रकाशित किया गया है। वार में, वुडवर्ड ने राष्ट्रपति के तौर पर डोनाल्ड ट्रम्प और जो बिडेन की तुलना की है, और निष्कर्ष निकाला है कि ट्रम्प रिचर्ड निक्सन से भी बदतर हैं।

**135. (c)**

24 जनवरी 2024 को लगभग 11:15 एमएसके पर, रूसी वायु सेना का इल्युशिन आईएल-76 सैन्य परिवहन विमान बेलगोरोड ओब्लास्ट में रूस के कोरोचन्स्की जिले में यूक्रेनी सीमा के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिससे उसमें सवार सभी लोग मारे गए।

**136. (b)**

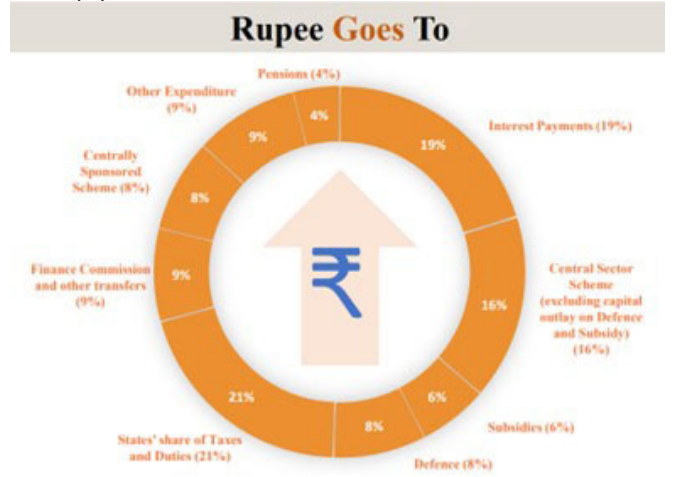
उत्तर प्रदेश विधानसभा ने राज्य की राजधानी लखनऊ के आसपास के क्षेत्र को विकसित करने के उद्देश्य से एक नया विधेयक पारित किया है, जो नई दिल्ली के आसपास केंद्रित राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के समान मॉडल पर आधारित है। इस साल जुलाई में, योगी आदित्यनाथ सरकार ने राज्य राजधानी क्षेत्र (एससीआर) के गठन के लिए एक अधिसूचना जारी की थी जिसमें लखनऊ और पांच अन्य आसपास के जिले - हरदोई, सीतापुर, उन्नाव, रायबरेली और बाराबंकी शामिल होंगे।



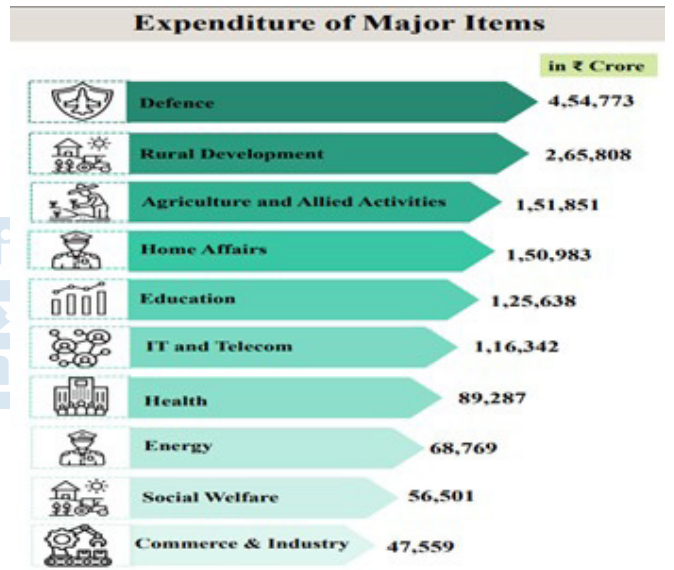
**137. (c)**

भारत के पैरा-एथलीटों ने पेरिस खेलों में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया, जिसमें उन्होंने 29 पदक जीते - 7 स्वर्ण, 9 रजत और 13 कांस्य - और कुल पदक तालिका में 18वां स्थान हासिल किया।

**138. (d)**



**139. (a)**



**140. (b)**

फ्रांस अपने संविधान में गर्भपात के अधिकार को शामिल करने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है।

**141. (d)**

- निम्नलिखित उपन्यासों ने 2023 में साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता:
  - राग जानकी में रिक्विम: अंग्रेजी भाषा में नीलम सरन गौड़ द्वारा
  - मुझे पहाचानो: हिंदी भाषा में संजीव द्वारा
  - जलेर ऊपर पानी: बंगाली भाषा में स्वप्नमय चक्रवर्ती द्वारा
  - राजदेव की अमराई: उर्दू भाषा में सादिका नवाब सहर द्वारा
- साहित्य अकादमी पुरस्कार उन पुस्तकों को दिया जाता है जो पुरस्कार वर्ष के पांच वर्षों के भीतर पहली बार प्रकाशित हुईं। पुरस्कार समारोह 12 मार्च, 2024 को 'साहित्योत्सव' कार्यक्रम में आयोजित

किया गया। यह समारोह नेशनल एकेडमी ऑफ लेटर्स की 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित किया गया।

**142. (b)**

बांग्लादेश में स्वतंत्रता सेनानियों के वंशजों के लिए सरकारी नौकरियों में 30% कोटा के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए, जिसके कारण प्रधानमंत्री शेख हसीना को इस्तीफा देना पड़ा और देश छोड़कर भागना पड़ा। उसके बाद से जानेमाने अर्थशास्त्री मुहम्मद यूनुस ने अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार के रूप में कार्यभार संभाला।

**143. (c)**

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने मॉरीशस में भारत के पहले विदेशी जन औषधि केंद्र का उद्घाटन किया, जिससे वहाँ सस्ती दवाओं तक पहुँच का विस्तार हुआ होने की उम्मीद है।

**144. (b)**

रूस ने सफलतापूर्वक अंगारा-ए5 लॉन्च किया, जो एक भारी-भरकम रॉकेट है जो 20 टन से अधिक पेलोड को कक्षा में ले जाने में सक्षम है।

**145. (a)**

**डैनियल काह्लमैन**

- अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार विजेता जिन्होंने मनोवैज्ञानिक शोध को आर्थिक विज्ञान में एकीकृत किया।
- जीवन: 1934 में तेल अवीव में जन्मे काह्लमैन द्वितीय विश्व युद्ध के बाद फिलिस्तीन चले गए। उन्होंने इजराइल रक्षा बलों में सेवा की और एक मनोवैज्ञानिक के रूप में प्रशिक्षण लिया।
- योगदान: काह्लमैन के शोध ने यह समझने के लिए संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का उपयोग किया कि लोग आर्थिक निर्णय कैसे लेते हैं। अनिश्चितता के तहत निर्णय लेने पर उनके काम ने अर्थशास्त्र की एक नई शाखा, संभावना सिद्धांत के विकास को जन्म दिया।

**146. (a)**

भारत और फ्रांस ने 13-26 मई 2024 तक मेघालय के उमरोई क्षेत्र में संयुक्त सैन्य अभ्यास 'शक्ति' का 7वां संस्करण आयोजित किया।

**147. (a)**

कश्मीरी लोक नृत्य रौफ बारामुल्ला में, 10,000 युवतियों ने कशूर रिवाज उत्सव में कश्मीरी लोक नृत्य रौफ के सबसे बड़े प्रदर्शन का विश्व रिकॉर्ड बनाया

**148. (a)**

- 2023 का सरस्वती सम्मान मलयालम कवि प्रभा वर्मा को उनकी 2022 की रचना रौद्र सात्विकम के लिए दिया गया।
- सरस्वती सम्मान पुरस्कार के बारे में: यह पिछले 10 वर्षों में 22 भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट साहित्यिक कार्यों के लिए प्रतिवर्ष दिया जाता है। यह भारतीय साहित्य के क्षेत्र में सर्वोच्च मान्यताओं में से एक है। चयन एक कठोर त्रि-स्तरीय प्रक्रिया का अनुसरण करता है, जो चयन परिषद द्वारा अंतिम निर्णय तक ले जाता है। इसे के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा स्थापित किया गया था। (व्यास सम्मान और बिहारी पुरस्कार फाउंडेशन द्वारा स्थापित अन्य साहित्यिक पुरस्कार हैं।) इसमें एक प्रशस्ति पत्र, एक पट्टिका और 15 लाख रुपये की पुरस्कार राशि दी जाती है।

**149. (a)**

- देश के लिए समग्र एसडीजी स्कोर 2023-24 के लिए 71 है, जो 2020-21 में 66 और 2018 में 57 (बेसलाइन रिपोर्ट) से उल्लेखनीय सुधार है।
- राज्यों के स्कोर 2023-24 में 57 से 79 तक हैं, जो वर्ष 2018 की 42 से 69 की सीमा से काफी सुधार को दर्शाता है।
- लक्ष्य 1 (गरीबी उन्मूलन), 8 (समुचित कार्य और आर्थिक विकास), 13 (जलवायु कार्रवाई) और 15 (भूमि पर जीवन) में उल्लेखनीय प्रगति लक्ष्य के स्कोर में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की गई है जो 2020-21 में 54 से बढ़कर 2023-24 में 67 हो गया है, इसके बाद लक्ष्य 1 (गरीबी उन्मूलन) के स्कोर में 60 से 72 तक की वृद्धि दर्ज की गई है। देश के स्कोर की संख्या दिखाने वाला ग्राफ विवरण स्वचालित रूप से जनरेट किया गया।
- 2018 और 2019 के बीच 32 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश 10 नए प्रवेशकों के साथ अग्रणी श्रेणी में हैं- अरुणाचल प्रदेश, असम, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, मणिपुर, ओडिशा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव। 2023-24,
- सबसे तेजी से आगे बढ़ने वाले राज्य उत्तर प्रदेश (स्कोर में 25 की वृद्धि) हैं, इसके बाद जम्मू-कश्मीर (21), उत्तराखंड (19), सिक्किम (18), हरियाणा (17), असम, त्रिपुरा और पंजाब (16-16), मध्य प्रदेश और ओडिशा (15-15) हैं।

**150. (d)**

- भारत ने 29 अगस्त, 2024 को अपनी दूसरी परमाणु ऊर्जा चालित बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बी (SSBN), INS अरिघात को शामिल किया।

